अनुपम त्रिमूर्ति जिनालय, देवगढ़ (ललितपुर) उत्तरप्रदेश

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की अद्‌भुत प्रतिमायें

1. श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, देवगढ़, जिला-ललितपुर, उत्तरप्रदेश में पर्वत के ऊपर स्थित 22 नंबर 'अनुपम त्रिमूर्ति जिनालय' में देशी बलुआ पत्थर पर कायोत्सर्गस्थ, सप्त सर्प फणावलियों से सहित जिनबिम्ब है, किन्तु उसके पादपीठ पर चिह्न प्रथम तीर्थंकर भगवान् श्री ऋषभदेव का बैठा हुआ वृषभ यानी नंदी/नांदिया साँड़ (बैल नहीं) अंकित है (चित्र क्र. 1)

संकलनः निर्यापक मुनि श्री अभयसागर जी महाराज, मुनि श्री प्रभातसागरजी महाराज, मुनि श्री चंद्रसागरजी महाराज, मुनि श्री निरीहसागर जी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		जनवरी 2025	
16	गुरुवार	तृतीया	आश्लेषा
17	शुक्रवार	चतुर्थी	मघा
18	शनिवार	पंचमी	पूर्वाफाल्गुनी
19	रविवार	षष्ठी	उत्तराफाल्गुनी
20	सोमवार	षष्ठी	हस्त
21	मंगलवार	सप्तमी	चित्रा
22	बुधवार	अष्टमी	स्वाती
23	गुरुवार	नवमी	विशाखा
24	शुक्रवार	दशमी	अनुराधा
25	शनिवार	एकादशी	ज्येष्ठा दि./रा.
26	रविवार	द्वादशी	ज्येष्ठा
27	सोमवार	त्रयोदशी	मूल
28	मंगलवार	चतुर्दशी	पूर्वाषाढ
29	बुधवार	अमावस	उत्तराषाढ
30	गुरुवार	प्रतिपदा	श्रवण धनिष्ठा
31	शुक्रवार	द्वितीया	शतभिषा
		फरवरी 2025	
1	शनिवार	तृतीया	पूर्वाभाद्रपद
2	रविवार	चतुथी-पंचमी	उत्तराभाद्रपद
3	सोमवार	षष्ठी	रेवती
4	मंगलवार	सप्तमी	अश्विनी
5	बुधवार	अष्टमी	भरणी
6	गुरुवार	नवमी	कृत्तिका
7	शुक्रवार	दशमी	रोहिणी
8	शनिवार	एकादशी	मृगशिरा
9	रविवार	द्वादशी	आर्द्रा
10	सोमवार	त्रयोदशी	पुनर्वसु
11	मंगलवार	चतुर्दशी	पुष्य
12	बुधवार	पूर्णिमा	आश्लेषा
13	गुरुवार	प्रतिपदा	मघा
14	शुक्रवार	द्वितीया	पूर्वाफाल्गुनी
15	शनिवार	तृतीया	उत्तराफाल्गुनी

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः जनवरी-19,20,24 फरवरी-3,7
मशीनरीप्रारंभ:जनवरी-20,24,30फरवरी-3,10
वाहन खरीदनेःजनवरी-20,22,30,31 फरवरी-8,10

तीर्थंकर कल्याणक

19 जनवरी: भगवान पद्मप्रभ गर्भ कल्याणक
26 जनवरी: भगवान शीतलनाथ जन्म तप कल्याणक
28 जनवरी: भगवान आदिनाथ मोक्ष कल्याणक
29 जनवरी: भगवान श्रेयांसनाथ ज्ञान कल्याणक
31 जनवरी: भगवान वासुपूज्य ज्ञान कल्याणक
02 फरवरी : भगवान विमलनाथ जन्म तप कल्याणक
03 फरवरी : भगवान विमलनाथ ज्ञान कल्याणक
06 फरवरी : भगवान अजितनाथ तप कल्याणक
07 फरवरी : भगवान अजितनाथ जन्म कल्याणक
09 फरवरी : भगवान अभिनंदन जन्म तप कल्याणक
10 फरवरी : भगवान धर्मनाथ जन्म तप कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

28 जनवरीः मोक्ष दिवस
30 जनवरीः लब्धि विधान प्रारंभ
01 फरवरीः लब्धि विधान व्रत पूर्ण
02 फरवरीः लब्धि विधान व्रत प्रारंभ,पुष्पांजलि व्रत
06 फरवरीः पुष्पांजलि व्रत पूर्ण
07 फरवरीः रोहिणी व्रत
10 फरवरीः रत्नत्रय व्रत प्रारंभ
11 फरवरीः दशलक्षण व्रत पूर्ण
12 फरवरीः रत्नत्रय व्रत पूर्ण
13 फरवरीः षोडशकारण व्रत पूर्ण

सर्वार्थ सिद्धि

19 जनवरीः 07/09 बजे से 31/09 बजे तक ।
23 जनवरीः 29/08 बजे से 31/08 बजे तक ।
24 जनवरीः 07/08 बजे से 31/07 बजे तक ।
26 जनवरीः 08/26 बजे से 31/08 बजे तक ।
02 फरवरीः 07/06 बजे से 24/52 बजे तक ।
04 फरवरीः 07/05 बजे से 21/49 बजे तक ।
05 फरवरीः 20/33 बजे से 31/04 बजे तक ।
10 फरवरीः 18/01 बजे से 31/01 बजे तक ।
11 फरवरीः 18/34 बजे से 31/01 बजे तक ।

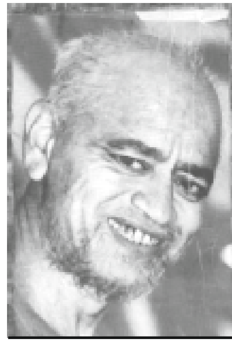

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 309 • जनवरी 2025
• वीर नि.संवत 2551-52 • विक्रम सं. 2080 • शक सं. 1945

लेख

• दुःख क्या है 08
• तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण, संवर्द्धन के लिए संकल्पित होने का समय 10
• गर्भाशय तक पहुंच रहे प्लास्टिक के कण 12
• बहुआयामी व्यक्तित्व प्रतिष्ठा पितामह पं. गुलाबचन्द्र पुष्प 14
• नवागढ़ के पुनर्निर्मित जैन मंदिर का स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प 17
• आर्यिका विशुद्धमति माताजी का जैन वाङ्‌मय में योगदान 21
• क्यों हो रहा है युवा जैन धर्म से विमुख 26
• क्या व्यवहार नय सर्वथा मिथ्या है ? अथवा सत्यार्थ भी। 32
• गंधर्वपुरी का पुरा वैभव 46
• पुण्य ही पुण्य-स्थिति का नियामक है 48
• **वरिष्ठ नागरिकः** सहमति जताने की कुशलता 56
• पुरानी पिच्छिका प्राप्त करने वाले श्रावक सूची 57
• बालों के रोग सुरक्षा और चिकित्सा 59

बाल कहानी

• हाथ नहीं धोये 63

कविता

• झूठे नेता 09
• नया वर्ष हम सफल बनायें 13
• धर्म 25
• हथकरघा कारोबार नहीं 50
• विजय यात्रा सफल बनाते 61

कहानी

• सनकी राजा 51

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 16
चलो देखें यात्रा : 35 • आगम दर्शन :36 • माथा पच्ची : 37 • पुराण प्रेरणा : 38
• कैरियर गाइड : 39 • दुनिया भर की बातें : 40 • इसे भी जानिये: 44
•दिशा बोध : 45• हमारे गौरव : 55 • वरिष्ठ नागरिक : 56 • हास्य तरंग-पाककला : 62
• बाल संस्कार डेस्क : 63 • संस्कार गीत व बाल कविता : 64 • समाचार : 65

प्रतियोगिताएं

: वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826593189

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–9542505311
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर –9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के
- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –संस्कार सागर
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- भारतीय स्टेट बैंक –ब्र. जिनेश मलैया
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- आईसीआईसीआय बैंक
  श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
  खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं ।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है ।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए ।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं । किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है ।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा ।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित ।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों अमेरिका में राष्ट्रपति पद का चुनाव हुआ । इस चुनाव में डोनाल्ड ट्रम्प चार साल के अंतराय के बाद पुनः जीते, उनकी जीत का फायदा भारत को मिलेगा यह अनुमान लगाया गया । डोनाल्ड ट्रम्प को भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जोरदार बधाई दी । लेकिन भारत की जनता चाहती थी कि अमेरिका की राष्ट्रपति अगर कमला हैरिस बनती तो उनकी खुशी और बढ़ती । क्योंकि भारतवंशी की जीत होने पर भारत का गौरव विश्व में अपनी अलग ही पहचान बनाता । तथा कमला हैरिस के जीतने पर विश्व की आधी आबादी जोरदार खुशियाँ मनाती । नारी समाज का सम्मान भी वृद्धिंगत होता । अमेरिका के मतदाताओं के मन में नारी सम्मान कुछ कम ही नजर आया है । इसका कारण कुछ भी हो किंतु नारी को सम्मान हर तरफ से मिलना चाहिए आवश्यकता विचारधारा बदलने की है पर ये विचारधारा कब बदलेगी यह नहीं कहा जा सकता है । हो सकता है अगले 4 साल बाद कमला हॅरिस अमेरिका की राष्ट्रपती बन जायें ।

प्रभावती सांवला, इंदौर

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के दिसम्बर अंक में स्वर्गीय पं. फूलचंद शास्त्री का लेख गोत्र विचार को पड़ा लेख पढ़कर मेरे चिंतन की दिशा ही बदल गई । उन्होंने इसी भव में गोत्र परिवर्तन की संभावना को प्रबल बताते हुए जैनेन्द्र सिद्धांत के आधार पर गोत्र परिवर्तनीय सिद्ध किया उनके द्वारा दिये गये आगम प्रमाणों एवं तर्कों को समाज स्वीकार करे अथवा न करे यह उसके विवेक पर निर्भर करता है किन्तु आचार्य जिनसेन जी ने अपने आदिपुराण में वर्णलाभ संस्कार विधि का उल्लेख किया है जैन दर्शन की सामाजिक व्यवस्था काफी उदार है उसकी उदारता का ज्ञान पंडित जी ने सभी जैनों को कराने का प्रयास किया है लेख प्रौढ़ और अनुकरणीय है ।

ज्योति बाबू, उदयपुर

• सम्पादक महोदय, मोबाईल या कम्प्यूटर विडियो गेम खेलना आज के युवा वर्ग के लिये बहुत ही सामान्य होता जा रहा हैं । लेकिन इस सामान्यता के साथ साइबर की सुरक्षा के खतरे भी बढ़ते नजर आ रहे है । गेम के लिए बहुत सारे एप्स उपलब्ध हैं । जिनमें यह पहचानना मुश्किल है कि कौन सा एप्प सुरक्षित है । इन गेमों का फायदा साइबर अपराधी उठा लेते है । इसलिए गेम खेलते वक्त हमें बहुत सावधनी रखनी होगी और यह भी सोचना होगा कि हिंसक वृत्ती एवं क्रूरता की मानसिकता हम पर हावी तो नहीं हो रही हैं । अगर ऐसा कभी नजर आये तो हमें सावधान रहना चाहिए । अतः विडियो गेम खेलने वाले लोगोंको बनावटीपन से बचना भी जरूरी है । अकाउंट चोरी का खतरा, असुरक्षित लिंक, साइबर बुलींग और डॉकसिंग का खतरा भी हमारे ऊपर मंडराता रहता है ।

मनोज जैन, सावरमती गुजरात

• सम्पादक महोदय, मैं डर रहा हूँ शीर्षक से संस्कार सागर अंक दिसम्बर में कहानी को पढ़ा बहुत कुछ सोच में पड़ गया कि आखिर यह कहानी किस उद्देश्य से लिखी गई है । दाम्पत्य जीवन की विचित्रधाराओं को रेखांकित करने के साथ साथ यह भी बताने का प्रयास किया कि साधु संतों के साथ अवांछनीय तत्त्वों का बोलबाला होने से अच्छे सच्चे श्रावक साधु की चर्या में सम्मिलित होने से डरने लगते हैं और वे आहार चर्या जैसे संवेदनशील चर्या से दूरी बनाने का प्रयास करते हैं । समस्या यह है कि इन अवांछनीय तत्त्वों को कैसे रोका जाये । इन्हें रोकने के लिए पहल कौन कर सकता है परंतु विचारणीय बिंदु यह है कि यह अवांछनीय तत्त्व किस उद्देश्य से साधु के साथ जुड़ते हैं और अशोभनीय घटना को अंजाम देते हैं । इस दिशा में सख्त कारवाई होना अत्यंत आवश्यक है । कहानी सरल सुबोध भाषा में लिखी गई है । ममस्पर्शी इस कहानी से विकृति दूर करने की प्रेरणा मिलती है ।

सन्नी जैन, पूना

भक्ति तरंग

राग सारठ - साँची शरण

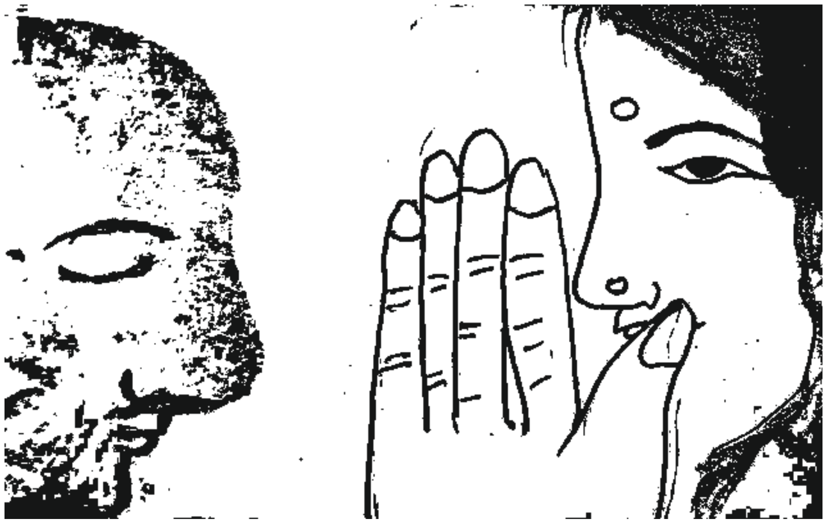

स्वामी जी सांची सरन तुम्हारी ।। टेक ।।
समरथ शांत सकल गुनपूरे, भयो भरोसो भारी ।। स्वामी.।।
जनम-जरा जग बैरी जीते, टेव मरन की टारी ।
हमहूकों अजरामर करियो, भरियो आस हमारी ।।1।। स्वामी
जनमै भरैं धरै तन फिरि-फिरि, सो साहिब संसारी ।
भूधर पर दालिद क्यों दलि है, जो है आप भिखारी ।।2।। स्वामी

हे प्रभु, हे स्वामी ! तुम्हारी ही शरण सत्य है। आप समर्थ हैं, शांत है , सर्वगुण संपन्न है, हमें आप पर पूर्ण भरोसा है। आपका ही आधार है। आपने जन्म और बुढ़ापा जो सारे जगत के बैरी हैं, उनको जीत लिया है और मृत्यु की परम्परा को भी हमेशा के लिये छोड़ दिया है, अर्थात् मृत्यु से भी मुक्त हो गये हैं । हमें भी आपकी भांति अजर (जो कभी रोग-ग्रस्त न हो, वृद्ध न हो अमर (जिसका कभी मरण न हो) स्थिति दो, अजर-अमर स्थान दो, आपसे हमारी यही एक आशा है, इसे पूर्ण कीजिए।

भूधरदास जी कहते हैं कि जो संसार में जन्म-मरण धारणकर बार-बार आवागमन करते हैं ऐसे देव संसारी हैं। वे स्वयं याचक हैं, पराधीन हैं, वे मेरी (भूधरदास की) दरिद्रता का नाश कैसे करेंगे।

संस्कार प्रवाह

नये वर्ष का संकल्प छोड़ेंगे छोटी सोच

छोटी सोच से कभी किसी का उत्थान नहीं हुआ है। नये वर्ष की शुरूआत अगर छोटी सोच को छोड़ने से करेंगे तो नया वर्ष भी सदैव के लिए यादगार बन जायेगा। महासत्ता की ओर दृष्टि डालने वाला बड़े सोच की ओर बढ़ जाता है लेकिन जब जब व्यक्ति भेद की ओर जाता है, समग्रता को छोड़ देता है। हर व्यक्ति अपने परिवार, जाति, क्षेत्र, प्रदेश, देश, दुनिया की पहचान बनाना चाहता है। अपने परिवार तक सीमित रहने वाला व्यक्ति छोटी सोच का जरूर हो जाता है। जाति, समाज की विकास की बात सोचने वाला अपनी सोच में बड़प्पन लाता है लेकिन देश और विश्व की विकास की बात सोचने वाला बड़ी सोच का बन जाता है। किंतु आज जिस तरह से भौतिक सोच को प्राथमिकता देकर विकास के मायने सुनिश्चित किये जा रहे हैं ये सब विकास विश्वशांति और विश्वमैत्री के पथ से मानव को भटका देते हैं ।

जाति का संबंध जड़ शरीर से होता है और धर्म का संबंध चैतन्यमयी आत्मा से होता है जो आज सजातीय की बात करते हैं उनका चिंतन बहुत बौना होता है। लेकिन जाति और सत्ता सापेक्ष मजहब की बात करने वाले भी अपने अहं और स्वार्थ के परिकर से बाहर नहीं निकल पाने तथा वे सबके विकास की बात नहीं सोच पाते। सबके विकास की बात सोचने वाले अगर भौतिक विकास से ऊपर उठ जाये और चैतन्य प्रवृत्तियों के विकास में यदि वे अपनी शक्ति का सदुपयोग करने लगें तो विश्व पर मंडराते युद्ध के बादल अपने आप झड़ जायेंगे साथ ही साथ विश्वमैत्री और विश्वशांति की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल होगी। अब देखना यह है कि जहां दुनिया में कैलेंडर के पन्ने पलट रहे है परंतु हम इस नयी रोशनी के साथ में विश्व में छाने वाले युद्ध के कोहरे को समाप्त करने में सफल नहीं होंगे। यदि विश्व के राष्ट्रनायक अपनी विस्तारवादी नीति और छोटी सोच को तिलांजली देने का संकल्प लेते हैं तो यह सुनिश्चित होगा कि महावीर और बुद्ध के विचार इस दुनिया में पुनः जागृत हो जायेंगे फिर युद्ध नहीं शांतिमय वातावरण बनेगा और हर चौराहे पर मोहब्बत की दुकानें खुल जायेंगी।

दुःख क्या है

✻ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ✻

संसार के सभी प्राणी सुख चाहते हैं और दुःख में डरते हैं। शारीरिक मानसिक आदि भेद से दुःख कई प्रकार के हो जाते हैं। प्रायः संसार में शारीरिक दुःख को ही दुःख माना जाता है। किंतु शारीरिक दुःख का महत्व ज्यादा नहीं माना जा सकता। शारीरिक दुःख से ज्यादा बड़ा दुःख मानसिक दुःख होता है। मानसिक दुःख का स्वरूप व्याकुलता में निहित होता है। जहाँ आकुलता होती है वहां मानसिक दुःख अवश्य ही होता है। नरक तिर्यंच और मनुष्य तथा देवों के भी अपार दुःख देखा जाता है। संसार की चारों गतियों में दुःख ही दुःख मौजूद रहता है। ऐसे दुःख से बचने के लिये प्रत्येक प्राणी प्रयास करता है परंतु वो दुःख से बच नहीं पाता है। कारण मोह और अज्ञान ही दुःख का अंतरंग कारण है। दुःख के स्वरूप और लक्षण को समझना भी अत्यंत आवश्यक होता है। आचार्य पुज्यपाद जी ने दुःख को पारिभाषित करते हुये कहा है **पीडालक्षण परिणामो दुःखं (सर्वार्थसिद्धि 6/11)** साता और असाता वेदनीय रूप अंतरंग के कारण रहते हुये बाह्य द्रव्यादिक के निमित्त से प्रीती और परिताप उत्पन्न होता है। इन्हीं को सुख और दुःख कहते है। परंतु पीडारूप आत्मा के परिणाम को आचार्य ने दुःख कहा है। धवला के रचयिता आचार्य वीरसेन जी ने कहा है अनिष्ट पदार्थ समागम और इष्ट पदार्थ के वियोग का नाम ही दुःख है। धवला टीका 13/5/5 में इस आशय का संदर्भ प्राप्त होता है।

अणिट्टत्थसमागमो इट्ठत्थवियोगो च दुखं णाम।
सिरोवेयणादि दुक्खं णाम॥ ध. 15/8/8

अर्थात सिर की वेदना आदि का नाम भी दुःख है।

दुःख के भेद- आगंतुक, मानसिक, स्वाभाविक और शारीरिक इस प्रकार दुःख के चार भेद है। भावपाहुड ग्रंथ में 11वीं गाथा में उपलब्ध होते हैं।

आगंतुक माणसियं, सहजं सारिरियं च चत्तारि।
दुःखखाइं मणुयजम्मे, पत्तोऽसि अणंतयं कालं॥11॥

भूख प्यास आदि से उत्पन्न होने वाले दुःख स्वाभाविक दुख कहलाता है। ठंड, गर्मी, आंधी, तुफान से उत्पन्न दुख नैमित्तिक दुख कहलाता है। रोग आदि से उत्पन्न दुख शारीरिक दुख कहलाया गया है। इंष्ट वस्तु का वियोग और अनिष्ट वस्तु का संयोग होने पर जो दुख उत्पन्न होता है। उसे मानसिक दुख कहां जाता है। संसार में चार गतियाँ हैं, उन चार गतियों में नरक गति मात्र दुख के लिए प्रसिद्ध है, इस गति में सिर्फ शारीरिक दुख होता है। शरीर से रक्त की धार बहना, चमडा नीचे लटक जाना, पेट या मस्तिष्क फट जाना, शरीर चकनाचूर हो जाना ऐसे नरकमय दुःख नरकगति में ही प्राप्त होते हैं। तिर्यच गति के दुख लाठी से पीटना, भय दिखाना, डोरी से बांधना, बोझ लादकर परिवहन करना। शंख कमल आदि पशुओं के शरीर पर जलाकर बनाना, नाक कान छेदना ये पशु गति के अनेक तरह के दुख होते हैं। मनुष्य गति के दुखों मे राजदंड, कर्ज का दुख, धन अपहरण का दुख, पारिवारिक विपरीतताओं के दुःख, पुत्र अभाव का दुख, पुत्र वियोग

का दुख, खोटी संतान का दुख, कलहकारिणी पत्नी का दुख। मनुष्य गति के दुखों की विक्रांता देखकर प्रायः लोग स्वर्ग के देवों को सुखी मानते हैं परंतु वे भूल जाते हैं देवगति में अप्सरावियोग का दुख, दूसरों की ऋद्धि आदि का दुख, तथा ईर्ष्या और वितृष्णा का दुख देवगति में सबसे ज्यादा होता है। शारीरिक दुख से मानसिक दुख बड़ा होता है क्योंकि जिसका मन दुखी होता है उसे संसार के सारी विषयभोग दुखदायी लगते है। तथा इन दुःखों से छुटकारा पाने के लिये हर व्यक्ति प्रयत्न करता है पर दुःखों के कारणों पर बहुत कम सोच पाता है। शरीर में रोगों की संख्या 5 करोड़ 68 लाख 99 हजार 584 आगम में बतायी गई है। यह सब शारीरिक दुख किसी न किसी रूप में हर जीव के सामने उपस्थित होते रहते हैं। दुख का सबसे बड़ा कारण शरीर में एकत्व बुद्धि रखना है। अतः शरीर में आत्म तत्त्व की मिथ्या कल्पना छोड़कर बाल्य विषयों में इन्द्रियों की प्रवृत्ति को रोकते हुए अंतरंग में प्रवेश करने पर दुःख के कारणों से छुटकारा मिल जाता हैं। शरीर के ग्रहण करने से ही संपूर्ण दुख उत्पन्न होते है। संयोग से अनेक प्रकार के दुख होते है और संयोग के कारण से ही जीव शरीर को ग्रहण करता है। आकुलता और व्याकुलता खेद का कारण है और आकुलता व्याकुलता घातियाकर्म के उदय से होती है वे घाति कर्म प्रत्येक पदार्थ के प्रति परिणमित होकर आत्मा को खेद उत्पन्न करते है। इंद्रियज्ञान और इनके विषय दुख के मुख्य कारण है। यह जीव जब आस्त्रव भाव से जुड जाता है तो ये आस्त्रव भाव अध्रुव अनित्य तथा अशरण है और आस्त्रवभाव दुखरूप ही है। इन आस्त्रवभावों का फल दुखरूप ही है। क्रोध, मान, माया लोभ रूप कषाय और हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील परिग्रह रूप अनैतिक आचरण या बुरे कार्य का नतीजा मात्र दुख ही होता है।

अतः हम ये कह सकते है कि जिसे दुख दूर करने की ईच्छा उत्पन्न हुई हो वह सबसे पहले कषाय और पाप को छोड़े तथा शरीर और आत्मा में उत्पन्न भ्रम को नष्ट करके शरीर आदि से भिन्न आत्मा के स्वरूप को निश्चित कर लेने से दुःख समाप्त हो जाता है। भेद विज्ञान पूर्वक आत्म स्वरूप की प्राप्ति में जो संलग्न होते हैं वे ही दुःखों का अंत करते है।

गीत

झूठे नेता

संस्कार फीचर्स

जीता कोई हारा कोई, प्रत्याशी ने गरिमा खोई
सदा जीत कर मद में फूल, दिये आश्वासन सब भूले
जनता का हित कभी न चाहा, भ्रष्टाचार भी बढ़ता जाता
पाँच बरस में दर पर आये, मतदाता के द्वार बजाये
माई बाप तुम सब हो मेरे, कहते राजनीति के फेरे
छल बल धन बल सभी लगाते, हार सहज स्वीकार न पाते
झूठे नेता ये कहलाते, गिरगिट साये रंग बदलते
आड़ी तिरछी चालें चलते, बहकी बहकी बातें करते
देशोन्नति से दूर ही रहते।

तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण, संवर्द्धन के लिए संकल्पित होने का समय

❊ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ❊

श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ अतिशय तीर्थक्षेत्र प्राकृतिक जलवायु एवं शुद्ध वातावरण के बीच शांत वातावरण में स्थित एक सुप्रसिद्ध तीर्थ भूमि है। मान्यता के अनुसार यह तीर्थंकर पार्श्वनाथ की केवलज्ञान भूमि है, यहीं पार्श्वनाथ भगवान पर घोर उपसर्ग भी किया गया था। यहाँ चमत्कार के अनेक कथानक उपलब्ध हैं। विक्रम की छठी शताब्दी में इसी भूमि पर पात्रकेसरी के द्वारा धर्म प्रभावना की गई थी। प्राचीन कुए के चमत्कार की भी किवदंती प्रसिद्ध है, पास ही पात्र केसरी जी के चरण बने हुए हैं। भव्य चौबीसी भी है। मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ के अतिशय की प्रसिद्धि के कारण यहाँ भक्तों का तांता लगा रहता है। जो मैंने रविवार 31 मार्च को स्वयं देखा। मैं खुद प्रातः मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ का अभिषेक करने लंबी कतार में लगकर लगभग एक घंटे बाद कर पाया। प्रतिमा दर्शनीय, आकर्षक, दिव्य और भव्य है। मान्यता है कि मूलनायक पार्श्वनाथ की वेदी का निर्माण देवताओं ने किया था। क्षेत्र कमेटी ने आवास भोजन आदि की सुंदर व्यवस्था की। पूरा आयोजन उत्तरप्रदेश उत्तरांचल तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री जवाहर लाल जैन जी सिकंदराबाद के संयोजन में हुआ। जहाँ नव निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष समाज श्रेष्ठि जम्बुप्रसाद जी, महामंत्री संतोष जी पेंडारी का भावभीना अभिनंदन, स्वागत किया गया वहीं राष्ट्रीय कार्यकारिणी के विस्तार की भी घोषणा की गई जिसमें उपाध्यक्ष मंत्री और कोषाध्यक्ष के नामों की घोषणा की गई।

उत्तरप्रदेश में भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी उत्तरप्रदेश-उत्तराखंड के आंचलिक अधिवेशन में राष्ट्रीय कमेटी के पदाधिकारियों ने उपस्थित होकर तीर्थों के संरक्षण और संवर्द्धन पर विचार मंथन किया। जैन तीर्थ क्षेत्रों का विकास एवं प्राचीनता पर वक्ताओं ने अपने विचार रखे।

भारत के संपूर्ण सांस्कृतिक वैभव के निर्माण और विकास में श्रमण संस्कृति और कला का अनुपम योगदान है। तीर्थक्षेत्र हमारी आस्था, श्रद्धा के केन्द्रबिन्दु हैं। मूर्तियां, तीर्थ क्षेत्र, एवं वास्तुकला के विशिष्ट प्रतिमान हैं। ऐसे स्थानों पर जाकर हम संस्कारित होते हैं। प्राचीन तीर्थ क्षेत्र, मंदिर हमारे अतीत के गौरव हैं। तीर्थक्षेत्रों, पवित्र स्थानों के आसपास मांस, मदिरा की दुकानें नहीं होनी चाहिए। तीर्थक्षेत्र हमारी संस्कृति, आस्था के प्रतीक हैं। अनेक स्थानों पर हमारी विरासत बिखरी पड़ी है। उसको सहेजने की जरूरत है। जगह-जगह प्राचीन तीर्थक्षेत्र हैं, ये हमारी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान हैं। इनके संरक्षण के लिए आगे आएं। प्राचीन धरोहरों को सुरक्षित स्वच्छ रखना प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है। सभी इनके संरक्षण के लिए तन, मन और धन और समय का दान करें। इतिहास को संजोना सभी का कर्त्तव्य है।

अनेक प्राचीन ऐतिहासिक विरासत समेटे अतिशय व सिद्धक्षेत्र हैं। ये हमारी विरासत की अमूल्य धरोहर और हमारी पहचान हैं। हमारे ये तीर्थ हमारी आन-बान-शान हैं ऐसे में हमारा दायित्व बनता है कि इनके संरक्षण और संवर्द्धन के लिए आगे आएं। जल्दी ही निर्धारित प्रोफार्मा पर पूरे देश के तीर्थों का सर्वेक्षण कर पूरी जानकारी सुरक्षित करना चाहिए।

हमारे तीर्थ हैं और जैन समाज नगण्य है वहाँ कुछ कमजोर स्थिति वाले जैन परिवारों की

रोजगार देकर बसाया जाए। एक उच्च स्तरीय ऐसी अंतर्राष्ट्रीय कमेटी बने जिसमें बहुत अधिक प्रभावशाली जैन प्रशासनिक, जज, वकील, राजनेता, प्रोफेशनल, प्रशासनिक अधिकारी और बहुत बड़े उद्योगपति हों। सत्ता का साथ देकर उससे सहयोग लेने की नीति ही एक मात्र मार्ग है जिससे चल अचल तीर्थों का संरक्षण किया जा सकता। आशा है इस दिशा में तीर्थक्षेत्र कमेटी के नए अध्यक्ष और उनकी टीम तत्परता से ध्यान देगी।

आज अनेक तीर्थ स्थलों की दशा अच्छी नहीं है, आए दिन हमारे तीर्थों पर हो रहे अतिक्रमण, अवैध कब्जे आदि घटनाएं किसी से छिपी नहीं है, यह गंभीर चिंतन का विषय है। तीर्थ स्थलों के विकास की रफ्तार कभी नहीं रुकना चाहिए, तीर्थ स्थल हमारे लिए बहुत बड़ी चुनौती हैं, इसे बचाने के लिए हमें एकजुट होना पड़ेगा, क्योंकि तीर्थ स्थलों की स्थिति काफी बिगड़ी हुई है, तीर्थ स्थलों की दशा सुधारने की जरूरत है, हम सभी समाज जनों को मजबूती के साथ कार्य करना पड़ेगा। जैन तीर्थ की दशा एवं दिशा पर चिंतन होना बहुत आवश्यक है, समाज एक जुट होना भी बहुत जरूरी है।

अपनी संस्कृति आदि की समृद्धि के लिए जहाँ आवश्यकतानुसार नये मंदिरों, तीर्थों का सृजन आवश्यक हैं, वहीं अनिवार्य रूप में प्राचीन तीर्थों का संरक्षण और जीर्णोद्धार इन दोनों का समन्वय आवश्यक है। दो दिवसीय अधिवेश में अनेक सुझाव और विचार आए, आशा करता हूँ नये राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रेष्ठि जम्बुप्रसाद जी जैन धरातल पर जल्दी ही योजनाओं को उतारेंगे, उन्होंने अपना विजन भी पुस्तिका के रूप में जारी किया है। उत्तर प्रदेश के तीर्थों की स्मारिका का भी विमोचन हुआ है। प्रांतीय कमेटियों का आयोजन एक अच्छी पहल है जो शुरु की गई है आशा करता हूँ आगामी समय में और अधिक व्यवस्थित रूप से ऐसे आयोजनों की श्रृंखला जारी रहेगी। शुरुआत अच्छी है परंतु आगे और अधिक व्यवस्थित और सार्थक आयोजन होंगे ऐसी आशा करता हूँ।

अभी सोशल मीडिया पर जारी एक खबर ने चिंता बढ़ा दी थी, जिसमें बताया गया था कि टोड़ी, आक्शन, मुंबई द्वारा ताजमहल पैलेस में प्रस्तावित क्लासिकल इंडियन आर्ट, नीलामी किए जाने के लिए अपनी वेबसाइट पर प्राचीन पूज्य जैन तीर्थंकर की 17 प्रतिमाओं को 16 अप्रैल 2024 को नीलामी की जायेगी। तीर्थक्षेत्र कमेटी, महासभा, विश्व जैन संगठन आदि ने भी इस दिशा में त्वरित कार्यवाही के लिए पत्र लिखा। सभी लोगों, संस्थाओं की जागरूकता की वजह से यह नीलामी रद्द हुई और संबंधित व्यक्ति ने माफी भी मांगी।

यह हमारी एकजुटता, जागरुकता की निशानी है। ऐसे ही हमें अपनी संस्कृति, विरासत को बचाने के लिए सदैव जागरुक रहना होगा। अब हमारी जिम्मेदारी है कि इन प्रतिमाओं को अपने कब्जे में लिया जाये। आओ सभी मिलकर तीर्थ क्षेत्रों के संरक्षण, संवर्द्धन के लिए आगे आएं।

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र अहिक्षेत्र, रामनगर जिला (बरेली) उत्तरप्रदेश में भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, अंचल का दो दिवसीय आंचलिक अधिवेशन 30-31 मार्च 2024 को सम्पन्न हुआ। भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी उत्तरप्रदेश-उत्तराखंड का मंत्री होने के नाते इस आयोजन में मैं भी शामिल हुआ।

गर्भाशय तक पहुंच रहे प्लास्टिक के कण

❊ विजय कुमार जैन, राघौगढ़ (म.प्र.) ❊

मानव प्रतिदिन विभिन्न माध्यमों से प्लास्टिक खा रहा है। यह समस्या भारत की न होकर दुनिया की जटिल समस्या बन गई हैं। प्लास्टिक के अति सूक्ष्म कण भोजन, अल्पाहार एवं पानी के साथ हमारे शरीर में जा रहे हैं। जिससे हमारे शरीर में अनेक बीमारियां जन्म ले नहीं है। गंभीर बीमारियों से घिरकर असमय में मौत हो रही है। वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर (डब्ल्यू डब्ल्यू एफ) के ताजा शोध से पता चला है कि एक आदमी अति सूक्ष्म कणों के रूप में प्रतिदिन प्रतिमाह 21 ग्राम प्लास्टिक खा जाता है प्रति छह माह में लोग 125 ग्राम प्लास्टिक विभिन्न स्रोतों से खा लेते हैं। डब्ल्यू डब्ल्यू ऑफ की रिपोर्ट में यह उल्लेख किया गया है एक आदमी तिल से भी छोटे कणों के रूप मे न सिर्फ प्लास्टिक खा रहा है। बल्कि विभिन्न पेयों कोल्ड ड्रिंक्स, ज्यूस, चाय एवं पानी के रूप में पी रहा है। डब्ल्यू डब्ल्यू ऑफ ने इस अध्ययन के लिए दुनिया भर में 50 से अधिक अध्ययनों के आंकड़े जुटायें हैं। इस अध्ययन में 5 किलोमीटर आकार के प्लास्टिक तक के सेवन की बात सामने आई है। प्लास्टिक प्रदूषण अब नए चिंता जनक स्तर पर पहुंच गया है। टॉक्सियोलॉजीकल साइंसेज में प्रकाशित अध्ययन में बताया गया है कि प्लास्टिक के सूक्ष्म कण अब माता के गर्भ तक पहुंच गए हैं। अध्ययन के अनुसार शोधकर्ताओं ने 62 प्लेंसेंटा (भ्रूण तक पोषण पहुंचाने वाला गर्भाशय का हिस्सा) नमूनों का अध्ययन किया। सभी 62 नमूनों में 6.5 से 790 माइक्रोग्राम तक माइक्रो प्लास्टिक मिला। अध्ययनकर्ता अमेरिका स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू मैक्सिको हेल्थ साइंसेज के वैज्ञानिकों ने चेताया है कि प्लास्टिक की यह मात्रा कम लगती है पर दो कारणों से चिंता जनक है। पहला हमारे आसपास लगातार प्लास्टिक प्रयोग बढ़ रहा है ऐसे में प्रदूषण के आगे बढ़ने की आशंका से इंकार नहीं किया जा सकता। दूसरा प्लेंसेंटा माता के गर्भ में 8 महीने के लिऐ बनता है इस 8माह के अल्प समय में ही गर्भाशय के इस हिस्से पर प्लास्टिक के कणों का पहुंचना बताता है कि हमारे आसपास किस कदर प्लास्टिक प्रदूषण पैर पसार चुका है।

हर 10 से 15 साल में प्लास्टिक प्रदूषण की मात्रा दोगुनी हो रही है। इसका आशय यह है कि अगर हम इसको आज रोक भी दें तो 2050 तक आज से 3 गुना प्लास्टिक के साथ जी रहे होंगे। अध्ययन कर्ता ने दान किए गये प्लेंसेंटा ऊत्तको का विश्लेषण किया। सेपोनिफिकेशन नामक प्रक्रिया में उन्होंने नमूने का पहले केमिकल उपचार किया। फिर उन्होंने प्रत्येक नमूने को एक अल्ट्रासेंटीफ्यूज में घुमाया, जिससे एक ट्यूब के नीचे प्लास्टिक के छोटे कण शेष रह गए। इसके बाद टीम ने पायरोलिसिस नामक तकनीक का इस्तेमाल किया। उन्होंने प्लास्टिक कणों को एक धातु के कप में 600 डिग्री सेल्सियस तक गर्म किया। इस दौरान गैस उत्सर्जन के रूप में अलग अलग तापमान पर निकलने वाले विभिन्न प्लास्टिक के कणों को जमा किया गया। प्लेसेंटा में सबसे अधिक पॉलिएथिनलीन नामक पॉलीमर पाया गया। इसकी मौजूदगी 54% रही।

यह प्लास्टिक की थैलियां और बोतलें बनाने के लिए उपयोग में आता है इसके बाद पॉलिविनाइल क्लोराइड (पीवीसी) और नायलॉन के कणों की मौजूदगी 10-10% रही 309 अन्य पॉलीमर शामिल हैं। शोध के मुख्य लेखक मैथ्यू कैंपेन के अनुसार मानव ऊत्तकों में माइक्रो प्लास्टिक की मौजूदगी से संभवतः ये समझा जा सकता है कि हम 50 से कम उम्र के लोगों में कुछ खास रोग जैसे इन्फेलेटरी बाउल डिसीज, कोलोन कैंसर महिलाओं में गर्भाशय में बीमारी के साथ शुक्राणुओं के घटने की समस्या को बढ़ते देख रहे हैं। गौरतलाब है कि माइक्रो प्लास्टिक 10 माइक्रोन आकर (0.01 एम.एम) के सूक्ष्म कण होते हैं। यह इतने छोटे होते हैं कि आसानी से हमारी नसों में खून के प्रवाह के साथ प्रवेश कर सकते हैं कोई हैरानी नहीं कि यह गर्भ में मौजूद शिशु तक भी पहुंच गए हों। पर हम इसका अध्ययन नहीं कर सके। इस तरह के अध्ययन पहले भी हुए हैं जिनसे प्लेसेंटा में प्लास्टिक के कण पाए गये थे पर यह पहला मौका है जब अधिक संख्या में नमूनों का अध्ययन किया गया। साथ ही यह भी देखा गया कि प्लेसेंटा में कौन से प्लास्टिक कण हैं।

कविता

नया वर्ष हम सफल बनायें

❊ संस्कार फीचर्स ❊

कल बीत गया, युग बीत गया
सुख का काल, दुख का काल
मुश्किल में बीती यह साल
सूरज से जग रोशन होता

सूरज चलता, चंदा चलता
भौर उदय, सूरज भी ढ़लता
जलज पत्र भी जल में गलता
पाप उदय जब जीवन आता
राज पाट सब काम न आता
पुण्य उदय सौभाग्य जगाता
प्रभु भक्ति, स्व शक्ति में
आत्म बोध में, सत्य बोध में
मंद कषायों की परिणिति में
दया धर्म अभिव्यक्ति में
पुण्य सदा सबका बढ़ता है
पर निन्दा अरु अहंकार से
पुण्य इन्द्र का भी घटता है।
आओ नये वर्ष में हम भी
नवल सूर्य की स्वर्ण किरण
पर उपकारी बन जायें
नया वर्ष हम सफल बनायें

बहुआयामी व्यक्तित्व प्रतिष्ठा पितामह पं. गुलाबचन्द्र पुष्प

ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर-

जैन संस्कृति का आधार जिनमंदिर एवं जिनबिम्ब हैं, इनकी परम्परा अकृत्रिम चैत्यालय प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र भरत द्वारा कैलाशपर्वत पर निर्मित 72 जिनालय अर्थात् तीन चौबीसी है। जिनबिम्ब एवं जिनमंदिर की परम्परा वर्तमान एक निर्बाध चली आ रही है।

जैन संस्कृति की इस परम्परा का उल्लेख व आचार्यो ने श्रावक के मुख्य कर्त्तव्यों में वर्णित किया है। जिसके अनुसार नीति पूर्वक उपार्जित द्रव्य का सदुपयोग करने के लिए परिवार जन आचार्य श्री के चरणों में जिन मंदिर निर्माण का आशीर्वाद लेकर योग्य, अनुभववान् चर्यावान् प्रतिष्ठाचार्य से निवेदन करके शुभमुहूर्त, तिथि, वार, नक्षत्र में मंदिर एवं जिनबिम्ब निर्माण आरंभ करके उनकी प्रतिष्ठा करते थे।

प्रतिष्ठाचार्यो के शास्त्रोक्त लक्षणों का परिपालन करने वाले प्रतिष्ठा पितामह पं. गुलाबचन्द्र पुष्प एक आदर्श हैं। आपको परम्परा से प्रतिष्ठाचार्य के संस्कार पिता श्री मन्नूलाल जैन भी ख्यातिलब्ध प्रतिष्ठाचार्य, आयुर्वेदिक चिकित्सक एवं सर्वमान्य मुखिया थे।

ककरवाहा ग्राम उस समय झांसी प्राविन्स का अत्यंत पिछडा साधन विहीन ग्राम था, शिक्षा, प्रकाश, चिकित्सा, आवागमन के अभाव में भी गुलाबचन्द्र ने पिता से जैन विद्या के साथ लौकिक ज्ञान अपने पिताश्री से प्राप्त करके अल्पवय में साढूमल विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की।

यौवनावस्था मे आपका पाणिग्रहण सुश्री रामबाई के साथ सम्पन्न हुआ। रामबाई जी ने मातृत्व का बलिदान करते हुए अपने पुत्रों को उच्च शिक्षा हेतु सुदूर विद्यालयों में भेजकर उपकृत किया। उसी का सुफल है कि आज सभी पुत्र एवं पुत्रवधुएँ धार्मिक चर्या के साथ समाज में प्रतिष्ठित हैं।

पुष्प जी ने अपनी प्रतिभा को आयुर्वेद चिकित्सा, संगीत, ज्योतिष, अनुष्ठान के साथ चारों अनुयोगों का स्वाध्याय करके निखारकर आदर्श प्रस्तुत किया। आपने अनुष्ठानों में हाने वाली विसंगतियों, शिथिलता एवं रूढ़ियों का निरसन करके सम्यक् विधि प्रतिपादित ही नहीं की, अपनी अनुभव पूंजी को नवोदित विद्वानों ब्रह्मचारियों को निस्पृहभाव से शिक्षण प्रशिक्षण करके सौंपकर अपने कर्त्तव्य का पालन किया।

आपने धर्माचरण के साथ संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से दो प्रतिमा के व्रत स्वीकार कर अपनी चर्या को और दृढ़ किया। किसी भी परिस्थिति में आपने अपने आवश्यकों में कभी शिथिलता या प्रमाद नहीं आने दिया। आपका सम्पूर्ण समय स्वाध्याय करने कराने में व्यतीत होता था। आचार्य श्री के संकेत पर प्रतिष्ठाचार्य को विराम देकर गुरु आज्ञा का पालन किया।

सकल दिगम्बर जैन समाज एवं विद्वानों ने आपको उपाध्याय रत्न सराकोद्धारक ज्ञानसागर महाराज के सान्निध्य में अतिशय क्षेत्र बडागांव खेकड़ा (बागपत) में पुष्पांजलि ग्रंथ समर्पित

करके सम्मानित करने का गौरव प्राप्त किया।

अनुष्ठानों एवं प्रतिष्ठा के क्षेत्र मे द्विशताधिक पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव सानंद सम्पन्न का कीर्तिमान स्थापित किया।

राजनैतिक ईर्ष्या एवं युद्धों में जमींदोज नंदपुर का अन्वेषण करके सातवीं सदी के भौयरे एवं अतिशयकारी मनोकामना पूर्ण अरनाथ स्वामी के बिम्ब के साक्षात्कार कराया।

अपना सर्वस्व समर्पण करके प्राचीन नंदपुर वर्तमान नवागढ़ की पुरा सम्पदा का संरक्षण एवं सवंर्धन करके जन-जन की आस्था का केन्द्र बनाया, जहाँ जैन-अजैन सभी की मनोकामनाएँ पूर्ण हो रही हैं।

आप सर्वमान्य प्रतिष्ठाचार्य थे आपको तत्कालीन सभी आचार्यों मुनिराजों एवं आर्यिका माता जी का आशीर्वाद प्राप्त था। आप संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज एवं श्वेत पिच्छाचार्य विद्यानंद जी महाराज के चहेते प्रतिष्ठाचार्य थे।

आपने परम्परा से प्राप्त प्रतिष्ठाचार्यत्व को अपने चतुथ्र पुत्र ब्र. जयकुमार निशांत को सौंपकर उन्हें सभी ब्रह्मचारियों के साथ प्रशिक्षत करके अनुकरणीय कार्य किया। ब्र. निशांत भैया ने आचार्य श्री विद्यासागर जीमहाराज के आशीर्वाद एवं पिता श्री के निर्देशन में प्रतिष्ठा क्षेत्र में ख्याति प्राप्त कर कर्त्तव्य का पालन किया।

श्रीमति रामबाई जी के देह परिवर्तन के बाद आपने अपना व्रती जीवन पंचबालयति मंदिर विजयनगर इंदौर में व्यतीत किया। आवश्यकों की परिपालना के साथ तीनों समय स्वाध्याय, शंका समाधान एवं श्रावक श्राविकाओं को धर्माचरण की प्रेरणा के साथ व्यतीत किया।

जीवन के समापन का आभास होते ही नेमावर सिद्ध क्षेत्र में आचार्य विद्यासागर जी महाराज के श्री चरणों में प्रायश्चित्त करके सल्लेखना का निवेदन किया। तत्पश्चात् आप अपनी चर्या और सजगता से आचरित करने लगे।

उत्कृष्ट चर्या का पालन करते हुए आपने दिनांक 5 जनवरी 2015 को दो दिवसीय उपवास के बाद पाद पारणा करके प्रातः दोपहर कालीन स्वाध्याय एवं शंका समाधान कराया। संध्या जल ग्रहण करते ही उन्हें आभास हुआ और ब्रह्मचारी सुरेश भैया एवं जिनेश भैया से वस्त्र उतारने का संकेत दिया। वस्त्र उतारते-उतारते कायोत्सर्ग पूर्वक देह का विसर्जन कर दिया।

उनके जीवनभर का पुण्य उनके जीवन समापन में सार्थक हुआ, आपने किसी की सेवा स्वीकार न करते हुए स्वावलंबन पूर्वक बिना कष्ट के देह परिवर्तन किया। सभी आश्चर्य चकित थे अभी-अभी तो उनने शंका समाधान किया और 15 मिनिट में ही उनका महाप्रयाण हो गया ?

आपकी देह का विसर्जन आपके द्वारा अन्वेषित विलक्षण नवागढ़ क्षेत्र में किया गया। आपके प्रति सभी आचार्य, मुनिराज, आर्यिका माताजी के सान्निध्य में विद्वानों द्वारा श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

आज पुष्प जी को उनके सौ वें जन्म महोत्सव का आयोजन उनकी 10वीं पुण्यतिथि 5 जनवरी 2025 को स्मरणांजलि स्मृति ग्रंथ समर्पित करके विनयांजलि समर्पित की जा रही है।

संयम स्वास्थ्य योग

मुख मसूड़े व दांतों को चिकित्सा

स्वास्थ्य से सीधा जुड़ा हमारे शरीर संस्थान का एक महत्वपूर्ण अंग है पाचन संस्थान का ऊपरी भाग। यह मुंह खोलने पर नजर आने वाली गुफा गहर से आरंभ होता है एवं टांसिल के पीछे ऊपर नाक से आने वाली श्वास नलिका **नेजोफेरिक्स** से मिलकर एक नली फेरिक्स बनाता है इसे ओरल केविटी एवं ओरोफेरिक्स कहते हैं। इसमें खाना चबाने के लिए विधाता द्वारा दाँत प्रदान किए गये हैं। लसिक ग्रंथियाँ अपने स्राव यहीं छोड़ती है। खाना देखकर या उसकी सुगंध से मुँह से पानी आने की प्रक्रिया स्नायु प्रवाह के कारण यहीं होती है। स्वाद की पहचान जीभ के माध्यम से इसी स्थान पर होती है। वस्तुतः समग्र स्वास्थ्य के लिए यह एक महत्वपूर्ण संस्थान है। यदि दंतक्षय हुआ, मुंह में छाले व मसूड़े मवाद से युक्त हों, तो आहार संतुलन होते हुए भी अंदर या तो ठीक स्थिति में प्रवेश नहीं कर पाएगा या फिर कीटाणु गंदगी युक्त होकर पूरे शरीर संस्थान को अस्त-व्यस्त कर देगा। मुंह के छाले (स्टामेराइटिस) दंत क्षय (केरीज) एवं पायरिया जैसे रोगों के लिए दो सर्वश्रेष्ठ औषधियां हैं -बनुल (मौलश्री) एवं कायकल-कट्टफल।

क्रास्श-बकुल (मौलश्री मिमुसप्स एलेन्गी) को मधुगंगा भी कहा जाता है। क्योंकि इसके फल सुगंधित होते हैं एवं गंध फूलों में सूंघने पर स्थाई रहती हैं। इसका वृक्ष 50 फीट तक ऊंचा होता है। पहचान पत्ते की बनावट व पीली आभा लिए पुष्पों से की जा सकती है।अप्रैल, मई में पुष्प आते हैं, जो वर्षा में फल रूप में पक जाते हैं। यह सारे भारत में पाया जाता है।

मौलश्री की छाल, पुष्प या फल प्रयोग में आते हैं। छाल का काढ़ा 50 से 10 सी.सी. (5 से 10 छोटे चम्मच के बराबर) तथा पुष्प चूर्ण 1 से 2 ग्राम की मात्रा में प्रयुक्त किया जाता है।

इसकी छाल में मूलतः टैनिन, गोंद व सैपोनिंग होते हैं। फूलों में सुगंधित तेल होता है।

नवागढ़ के पुनर्निर्मित जैन मंदिर का स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प

✻ संजय आठिया, शोध छात्र सागर (म.प्र.) ✻

बुन्देलखण्ड एक प्राकृतिक सौंदर्य एवं सांस्कृतिक प्रदेश है बुन्देलखण्ड में अन्य धर्मों के साथ-साथ जैनधर्म का भी अपना अस्तित्त्व रहा है। नवागढ़ की प्राचीनता के प्रमाण नवागढ़ से प्राप्त विभिन्न काल विशेष के अवशेषों से प्राप्त होते हैं। इसके अलावा नवागढ़ के पुनर्निर्मित जैन मंदिर का स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प का भी अदभुत दृश्य है। नंदपुर एवं नावई नवागढ़ के उपनाम हैं। नवागढ़ मध्यप्रदेश एवं उत्तर प्रदेश की सीमा पर स्थित है परंतु मूल स्थिति ललितपुर महरौनी तहसील में 78^{0} 93^{0} 78 पूर्वी देशांतर एवं 24^{0} 25^{0} 61 उत्तरी अक्षांश पर स्थित है। नवागढ सागर से बंडा, शाहगढ़ होते हुए धसान नदी को पार करके बड़ागाँव होते हुए लगभग 130 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ से इसकी दूरी 30 कि.मी. एवं झाँसी से इसकी दूरी 130 कि.मी. है। मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले के बड़ामलहरा के पास द्रोणगिरि से नवागढ़ की दूरी 40 कि.मी. है।

नवागढ़ की स्थापना एवं विकास गुप्त काल में प्रारंभ हुआ जो आगे प्रतिहार एवं चंदेल काल में समृद्ध एवं विकासशील रहा, परंतु नवागढ़ का जैन मंदिर स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प का विकास चंदेल काल में हुआ जिसके प्रमाण या अवशेष अधिक प्राप्त हुये हैं। जिसमे भगवान अरनाथ की प्रतिमा प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है। कालांतर में नवागढ़ के पुनर्निर्मित जैन मंदिर स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प के रूप में भगवान अरनाथ जी की यह प्रतिमा, नवागढ़ के जैन मंदिर के आंतरिक गर्भगृह (भौंयरा) प्रतिष्ठित होते हुये इसकी शोभा एवं सुंदरता को बढ़ाती है। नवागढ़ के पुनर्निर्मित जैन मंदिर में यह अवशेष सुरक्षित प्रदर्शित हैं।

नवागढ़ के मंदिर स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प से सबंधित अधिकांश प्रतिमाएँ एवं खंडित अवशेष प्राप्त हुई हैं। इसके अलावा नवागढ़ से जैन मंदिर स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प के बहुत साक्ष्य प्राप्त हुए है। नवागढ़ प्राचीन काल से अपना अस्तित्व रखता है। नवागढ़ से पुरापाषाण कालीन शैलचित्र प्राप्त होते हैं, इसके बाद वैदिक काल में यह चेदि महा जनपद के अधीन मिला लिया जाता है। मगध पर राज्य करने वाले विभिन्न राजवंश (मंदरनंद, मौर्य, शुग, आदि) के समय में भी इसका अस्तित्व एक विकासशील नगर के रूप में रहा होगा इसके उपरांत नागवंशी शासकों के बाद नवागढ़ गुप्तवंशी शासकों के अधीन स्वतंत्र नवागढ़ के रूप में स्थापित होकर समृद्धि एवं विकास के उपरांत संभवतः यह एक महानगर रहा होगा। जिसके प्रमाण हमें प्रतिहार एवं चंदेल काल से प्राप्त होते है और जब 1182 में पृथ्वीराज चौहान चंदेलों पर आक्रमण करता है तो उसके द्वारा चंदेल शासकों के अधिकांश महानगरों को नष्ट कर देता है। जिसमें नवागढ़ भी शामिल था बाद में यह मुस्लिम शासकों के अधीन हो जाता है।

इसके बाद नवागढ़ के पुनर्निर्माण की कहानी 1959 ई. सन् से प्रारंभ होती है। जिसमें नवागढ़ के पुर्व निर्मित जैन मंदिर स्थापत्य एवं मूर्तिकला का विकास प्रारंभ हुआ नवागढ़ के पुनर्निर्माण जैन मंदिर स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प की स्थापना का संपूर्ण श्रेय टीकमगढ़ के पंडित गुलाबचंद्र जी पुष्प को जाता है। पं. गुलाबचंद जी एक प्रसिद्ध आयुर्वेदिक चिकित्सक थे। वह जब चिकित्सा हेतु मैनवार जा रहे थे तो नावई नंदपुर ग्राम की पहाड़ी के निकट खण्डों के ढेर के समीप टीले पर जहाँ कई खंडित जिनबिम्ब पड़े थे। एक ग्रामीण युवक वहां मनौती माँग रहा था। उन्हें आस पास बिखरे खंडित जैन प्रतिमाओं के अवशेषों के आधार पर विश्वास हो गया कि अवश्य ही यहाँ कोई जैन मंदिर या प्रतिमा स्थित है जिसकी महिमा शक्ति से गांव वालों के दुखों का निवारण एवं उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण कर रही है। समस्त ग्रामवासियों की सहायता से जब वहाँ उत्खनन किया गया तो जमीन के अंदर मूल मिट्टी में धंसी भगवान अरनाथ स्वामी जी की लगभग 5 फुट की एक प्रतिमा प्राप्त हुई, जिसे वही स्थापित कर दिया गया था। इसके उपरांत जैन श्रावकों की एकता एवं समस्त ग्राम वालों के सहयोग से मंदिर निर्माण के अनेक प्रयास किये गये। जिसके फल स्वरूप वर्तमान में ब्र. जयकुमार जैन निशांत के सान्निध्य में एक भव्य जैन मंदिर का निर्माण किया गया औरआगे भगवान अरनाथ स्वामी की प्राण प्रतिष्ठा की गई।

चंदेल काल में नवागढ़ का सांस्कृतिक, समृद्धशाली एवं ऐतिहासिक विकास किया गया होगा, जिसके प्रमाण हमें नवागढ़ से एवं उसके आस पास से सरोवरों , बावड़ियों, दुर्ग एवं मठों के निर्माण के रूप में मिले है। नवागढ़ से प्राप्त जैन मंदिर स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प के अधिक संख्या में खण्डित अवशेष प्राप्त हुए है उनका आकलन प्रो. डॉ. भागचन्द्र भागेन्दु, डॉ. मशकूर अहमद, सुल्तान सलाउद्दीन, डॉ. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी, प्रो. गिरिराज कुमार, डॉ. हरिविष्णु अवस्थी, डॉ. काशी प्रसाद त्रिपाठी एवं डॉ.अर्पिता रंजन आदि के द्वारा ब्रह्मचारी जयकुमार जैन निशांत के कठिन परिश्रम एवं सहयोग से किया गया। जिससे इसकी प्राचीनता सिद्ध होती है।

नवागढ़ के पुनर्निर्मित जैन मंदिर स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है।

नवागढ़ के पुनर्निर्मित जैन मंदिर का स्थापत्य- नवागढ़ का जैन मंदिर का स्थापत्य आधुनिक जैन मंदिर निर्माण शैली में पुनर्निर्मित है। इसका क्षेत्रफल 180×100 वर्ग फुट है। इस मंदिर के चारों ओर विशाल सुरक्षा दीवाल है, मंदिर में प्रवेश करने हेतु दो द्वार है जिसमें एक द्वार प्रमुख है। मंदिर में प्रवेश करने के उपरांत एक मानस्तंभ है जो मंदिर के ठीक सामने है। मंदिर का प्रांगण चतुर्भुजाकार का है, मंदिर के चारो और प्रदक्षिणा पथ एवं ऊपरी मध्य भाग में भगवान शान्तिनाथ की कायोत्सर्ग प्रतिमा स्थापित है। मंदिर के दाई एवं बाई ओर प्रदक्षिणा पथ के बाजू से नीचे गर्भगृह को जाने के लिए सौपान हैं। मंदिर के नीचे गर्भगृह में भगवान अरनाथ स्वामी की प्रतिमा स्थापित है और वहीं भगवान पार्श्वनाथ एवं भगवान महावीर की लघु प्रतिमाएं स्थापित है। नवागढ़ के पुनर्निर्मित जैन मंदिर का प्रारंभिक विकास 1960 में पंडित नीरज जैन सतना के

निर्देशन में प्रांतीय जैन समाज के सहयोग से किया गया था उसके उपरांत प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचंद पुष्प एवं आंचलित समाज के विशेष सक्रिय सहयोग से वर्ष 1985 में पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव, शिखर सहित मूलनायक मंदिर, बाहुबली जिनालय, धर्मशाला, भोजनालय, गुरुकुल आदि का निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ। वर्तमान में ब्र. जयकुमार निशांत जी के संरक्षण एवं निर्देशन में क्षेत्र को नवीन स्वरूप प्रदान करते हुए मंदिर वास्तु एवं शिल्पकला के अनुरूप किये गये सौंदर्यकरण से नवागढ़ क्षेत्र जन-जन की आस्था का केन्द्र बन चुका है। नवागढ़ के जैन मंदिर के मूल शिखर एवं अन्य छोटे-छोटे शिखर मंदिर की बाहरी सौन्दर्यता को बढ़ाते हैं और लोगों को आकर्षित करते हैं। इस मंदिर की भीतरी दीवारों पर भगवान अरनाथ स्वामी की चक्रवर्ती विभूतियों 14 रत्न एवं 9 निधियों की कलात्मक शिल्पकला एवं वैभव के अंकन का आकर्षण विलक्षण है। ग्रामीणवासी एवं भक्तगण यहाँ भगवान अरनाथ स्वामी के प्रति समर्पित है।

2. नवागढ़ के जैन मंदिर का मूर्तिशिल्प- नवागढ़ के पुनर्निर्मित जैन मंदिर मूर्तिशिल्प अत्यधिक आकर्षक है। जो कि निम्नलिखित हैः-

1. भगवान अरनाथ की प्रतिमा- नवागढ़ के पुनर्निर्मित जैन मंदिर आंतरिक गर्भगृह में भगवान अरनाथ स्वामी की कायोत्सर्ग मुद्राधारी पाषाण की प्राचीन मूर्ति प्रतिष्ठित है। जिसकी ऊँचाई 4.9 इंच है। इसके अलावा भगवान अरनाथ के बाई और भगवान कुंथुनाथ एवं दांई और शांतिनाथ जी की लगभग समान ऊँचाई की प्रतिमायें प्रतिष्ठित हैं। भगवान अरनाथ स्वामी की प्रतिमा मध्य में स्थित है। जिन पर उनके अपने प्रतीक चिन्ह को (मृग, मीन, अज) प्रदर्शित किया गया है। इन प्रतिमाओं को सुन्दर, बलिष्ट, सुडौल, पॉलिश युक्त एवं आकर्षित बनाया गया है। मूल नायक भगवान अरनाथ जी का आभा मंडल अति सादा एवं ऊपर से खंडित है। गुच्छों के रूप में उनके केशों को दोनों कंधों के पीछे लहरदार, चमकदार एवं आकर्षित दिखाया गया है। मुखमंडल को आकर्षित, भौहो के समान, विशाल नेत्र, मनोज्ञ नसाग्रदृष्टि, ओठों के सौष्ठव एवं ठोड़ी मनोहारी चमक आदि को दिखाया गया है। ग्रीवा की रचना वक्षस्थल का अनुपात, कलात्मक, श्रीवत्स, स्तन भाग विशिष्ट, नाभीयुक्त उदर की रचना, कमर एवं पेडू की रेखाएँ अत्यंत दर्शनीय हैं हाथ एवं जंघा की सुडोलता, हथेलियों में कलाकृति और अंगुलियों में विशिष्टता है। भगवान के पार्श्व भाग में उत्कीर्ण इन्द्रों की सुकुमारता तथा नीचे प्रतिष्ठित श्रावक-श्राविकाओं की मुद्रा से प्रतीत होता है कि मानों वह प्रभु शरण पाकर धन्य हो गया हो। अतः वर्तमान नवागढ़ जैन मंदिर की मूल प्रतिमाएँ सुन्दर एवं आकर्षित हैं।

2. भगवान पार्श्वनाथ बिम्ब- नवागढ़ के जैन मंदिर में स्थित भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा पाषाण से निर्मित है इसमें सिंहासन पर अंकित दो अष्टापद, मध्य में नग की पूंछ से चिन्ह अंकित कर उसकी विशेष कुंडली से आसन निर्मित करने वाली सप्तफणवाली में इनके आकर्षण को शोभायमान किया है। पदमासन विराजित पार्श्वनाथ भगवान अत्यंत सुन्दर दिखलाए गये हैं।

कैशगुच्छ, विशाल मस्तक सहित मुखारविन्द के भाव अत्यंत आकर्षक है। फणावली के ऊपर दोनों ओर दो-दो अरिहंत बिम्ब इसे पंचबालयति घोषित करते हैं। दोनों पार्श्वों में चँवरधारी इन्द्र एवं उनके ऊपर पुष्प माला लिये देवगण तथा मृदंगवादक अत्यंत शोभयमान हैं।

3. शतफणी पार्श्वनाथ भगवान- सफेद संगमरमर से निर्मित अत्यंत साधारण आसन पर पदमासन मुद्रा में विराजमान पार्श्वनाथ भगवान का अंग विन्यास, लम्बायमान कर्णाकृति विशाल नेत्र एवं दोनों कंधों से उठे हुए सौ फणों की आकृति में चुम्बकीय आकर्षण है।

4. भगवान शांतिनाथ- नवागढ़ के मुख्य द्वार के प्रवेश के उपरांत गर्भगृह के ऊपर प्रदक्षिणा पथ के मध्य भगवान शांतिनाथ को कायोत्सर्ग मुद्रा में स्थापित किया गया है। जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बहुत आकर्षक, चमकदार, सुडोल एवं अपना सादा आभा मंडल को प्रदर्शित करती है। प्रतिमा के नीचे पैरों के मध्य मृग को प्रदर्शित किया गया है जिस सिंहासन पर वह खड़े हैं वह भी सुन्दर एवं आकर्षक है इसके अलावा भगवान शांतिनाथ के दोनों ओर पदमासन मुद्रा मे अन्य तीर्थंकर ध्यान करती हुई प्रतिमायें स्थापित है, जो कि सफेद संगमरमर से निर्मित है।

5. भगवान महावीर बिम्ब- पाषाण से निर्मित एक फुट पद्मासन बिम्ब जिसका आसन दो शेरों से अंकित है जिसमें विशेष पदमासन मुद्रा शारीरिक पुष्टता, तथा प्रसन्न मुखमुद्रा, अनायास ही आकर्षित करती है। पार्श्वभाग में चँवरधारी, पुष्पमाला सहित इन्द्रों के साथ एक एक पदमासन तथा खड्गासन बिम्ब आकृति प्रदर्शित है। इस लघुकाय बिम्ब में त्रिक्षत्र एवं उपरी भाग में विराजित मृदंगवादक बिम्ब को पूर्णता प्रदान करते हैं।

6. ताम्र पार्श्वनाथ भगवान- संवत् 1586 में प्रतिष्ठित बिम्ब अत्यंत प्रभावशाली है पीतल के सम चौकोर आसन जिस पर चारों ओर प्रशस्ति उत्कीर्ण है सामने की ओर धरणेन्द्र एवं पदमावती ओर बाह्य मयूर और कूर्म सहित विराजमान है। आसन के ऊपर कमलाकृति पर तांबे के पार्श्वनाथ भगवान विशेष आसन जिसमें केवल नितम्ब भागआसन पर है। शेष भाग जंघा एवं घुटना आसन से बाहर है, जो भगवान के अधर विराजमान होने का प्रतीक है। इसमें भगवान पार्श्वनाथ को चित्ताकर्षक, सुंदर कलात्मक नाग कुण्डली बिम्ब फणों आदि को प्रदर्शित किया गया है। इन फणों के मध्य बिम्ब की छवि अत्यंत मनोहारी है। अतः यह बिम्ब नवागढ़ जैन मंदिर में शोभायमान है।

इस प्रकार नवागढ़ के पुनर्निर्मित जैन मंदिर स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प का अत्याधिक महत्त्व है। जिसमें मंदिर स्थापत्य एवं मूर्तिकला की कलाशैली, निर्माण शैली, वास्तुशैली, आकर्षण आदि की जानकारी वर्तमान परिपेक्ष्य में प्राप्त होती है। इसके अलावा नवागढ़ के जैनमंदिर की मूर्तिकला में सुंदरता सुडोलता, आकर्षण, चमक, बनावट, सादापन आदि मूर्तियों की शोभा बढ़ाती है और सुन्दरता प्रदान करती है। वर्तमान में जो महत्व बुन्देलखण्ड में सोनगिरि, द्रोणगिरि, देवगढ़, कुण्डलपुर, थुबोन, अहार, बानपुर, अजयगढ़, महोबा, खजुराहो आदि का है वही स्थान जैन मंदिर स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प में नवागढ़ के जैन मंदिर स्थापत्य एवं मूतिशिल्प एवं साहित्य का भी है।

आर्यिका विशुद्धमति माताजी का जैन वाङ्मय में योगदान

❊ श्रीमती सुषमा जैन, भिलाई ❊

हम किसी हरे भरे फलदार वृक्ष की शोभा निहारते हैं, उसकी छाया का आनंद लेते हैं। तो मन में ये विचार आता है कि मिट्टी में छोटा सा पौधा रहा होगा, कुशल माली ने इसे खाद पानी और समय-समय पर बड़े परिश्रम ऐसा ये सुन्दर आकार दिया होगा। और वृक्ष ने भी जड़ो से रस लेकर अपना विकास किया होगा। ये सभी चिंतन परम विदुषी आर्यिका 105 श्री विशुद्धमती माताजी के व्यक्तित्व निर्माण में सही लगते हैं। माताजी गृहस्थ अवस्था में मेरी बुआ थी, पहले हम सब उन्हें बाई कहा करते थे, उन्होंने अपने जीवन में जो ऊंचाईयां पाई। और अपनी (नारी) पर्याय में उत्कृष्ट पद को प्राप्त किया। ज्ञानार्जन, तप, संयम, साधना का फल सल्लेखनापूर्वक मरण कर अपना जीवन सार्थक किया। उनके गृहस्थ जीवन को देखें तो लगता है कि किसी सुविज्ञ ने सही कहा है।

शानदार था भूत भविष्यत भी महान है
गर संभाले आप उसे जो वर्तमान है।

माता जी अपने साथ पूर्व की पुण्य संपदा लाई। अद्भुत साहस और दृढ़ता के साथ सम्यक् पुरुषार्थ द्वारा अपने वर्तमान के जीवन के साथ भावी जीवन भी अच्छा बना लिया। माता पिता से मिली संस्कारों की पूंजी के साथ पूज्य संत श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी के संपर्क से सदाचार और दया धर्म के संस्कार ही जीवन में सहायक हुए। थोड़ी सी स्कूली शिक्षा प्राप्त की, तभी पंद्रह वर्ष की आयु में उनका विवाह हो गया, कुछ समय बाद पिता का वियोग हो गया। विवाह के डेढ़ वर्ष बाद ही उन्हें वैद्यव्य का दुख सहन करना पड़ा उनके विधवा होते ही कुछ समय बाद उनके बड़े भाई जिन्हें परिस्थितियों से जूझने की हिम्मत विरासत में मिली थी, वे अपनी विधवा बहिन को अपने साथ घर ले आए। तब सुमित्रा बाई जी जी ने इसे अपने कर्मों का फल मानकर साहस से सहा और अपना सारा पुरुषार्थ वर्तमान को संवारने में लगा दिया। दिगम्बर जैन महिलाश्रम (सागर) में प्रवेश कर दो माह की पढ़ाई में प्रायमरी परीक्षा अच्छे नम्बरों से पास करी। मिडिल का तीन वर्षीय पाठ्यक्रम दो वर्ष में ही पूरा कर लिया। जबलपुर में नार्मल ट्रेनिंग करी बम्बई में एक वर्ष का प्रशिक्षण लेकर आई तब उनके भाई श्री नीरज जी उन्हें श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी का आशीर्वाद दिलाने ईसरी ले गए। वर्णी जी ने उन्हे सरकारी नौकरी करने को मना करा, और परिग्रह परिमाण का संकल्प कराया और आदेश दिया कि जिस मातृ संस्था में तुमने शिक्षा प्राप्त की है उसी महिलाश्रम की सेवा तुम्हें करना है वह संस्था छोड़कर कहीं नहीं जाना। सुमित्रा जी ने 14 वर्ष तक अध्यापिका पद पर महिलाश्रम को अपनी सेवायें दी। कई विधवा व असहाय बहनों को सहारा देकर उनका जीवन सवारा। स्वाध्याय का नियम होने से धर्म ग्रंथों का अध्ययन जारी रहा। सागर में श्री पन्नालाल जी साहित्याचार्य ने कई वर्षों तक अत्यंत वात्सल्य भाव से धर्मग्रंथों का अभ्यास कराया। गर्मी या सर्दी पंडित जी प्रातः 4 बजे उन्हें पढ़ाने महिलाश्रम पहुँच जाते थे और बाई की भी ऐसी लगन थी कि अपना पाठ पूरा करके ही सोती थी। महिलाश्रम का नियम था रात 10 बजे

लाईट बंद हो जाती थी तो बाई भोजन में मिलने वाले घी का दीपक जलाकर अपना पाठ पूरा करती थी। सुमित्रा जी का सेवाकाल के साथ व्यक्तित्व निर्माण का भी समय रहा। उन्होंने विद्याध्यान कर **साहित्य रत्न विद्यालंकार** आदि उपाधि प्राप्त की। ज्ञान के साथ-साथ जीवन में संयम की भावना अंकुरित होने लगी धर्म-आराधना और धर्म-प्रभावना के कार्य ही सर्वोपरि हो गये। बिहार बंगाल और आसाम तक धर्मोपदेश के लिए यात्राएँ करने लगी। उन्हीं के प्रयासों से महिलाश्रम में श्री पार्श्वनाथ जिन चैत्यालय की स्थापना हुई। इन सभी उपलब्धियों में सबसे ज्यादा सहायक हुआ पूज्य क्षुल्लक श्री गणेशप्रसाद जी वर्णी का चरण सान्निध्य एवं आशीर्वाद। ईसरी प्रवास में वर्णी जी की समाधि के अंतिम पांच छह वर्षों तक प्रति वर्ष जयंती पर हम सब परिजन एवं बाई जी ईसरी जाते थे। सन् 1961 में वर्णी जी के सल्लेखना समाधि के दृश्यों को देखकर सुमित्रा बाई जी के मन में वैराग्य के अंकुर पनपने लगे।

वैराग्य पथ की ओर- मणिकांचन संयोग मिला कि चारित्र चक्रवर्ती परमपूज्य आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के द्वितीय पट्टाचार्य परम तपस्वी आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज के संघ के तपस्वी महामुनि धर्मसागर जी (जो बाद में आचार्य बने) का अगले ही वर्ष सागर में चातुर्मास हुआ। संघस्थ मुनि वैराग्य के साधक श्री सन्मतिसागर के सदोपदेशों ने सुमित्रा बाई के जीवन की दिशा ही बदल दी बहुत ही चिंतन मनन करके संयम ग्रहण करने का साहस जुटाया और विदुषी सुमित्रा बाई ने मुनि श्री धर्मसागर जी के चरणों में सातवीं प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये। एवं उसी दिन गृह त्याग का भी संकल्प लिया। कुछ समय प्रतिमा पालन के बाद उन्हीं मुनिराज के चरणों में आर्यिका दीक्षा के लिए भी श्रीफल अर्पित कर दिया मुनिराज ने कहा हमारे साथ कोई आर्यिका माताजी नहीं है। अतः तुम्हें आचार्य श्री शिवसागर जी की शरण में जाकर प्रार्थना करना चाहिए। वहाँ संघ में चार माता जी हैं। पूज्य आचार्य श्री शिवसागर जी अपने संघ सहित बुंदेलखंड में ही विहार कर रहे थे। उनका चातुर्मास श्रीक्षेत्र पपोरा जी में निश्चित हुआ। दीक्षा-विक्रम संवत 2021 की श्रावण शुक्ला सप्तमी 14 अगस्त 1964 को प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज के द्वितीय पट्टाचार्य चारित्र शिरोमणि आचार्य शिवसागर जी ने अतिशय क्षेत्र पपौरा जी के प्रांगण में सुमित्रा जी को आर्यिका दीक्षा देकर अपने संघ में प्रवेश दिया और वे बन गई आर्यिका विशुद्धमति माताजी।

शिक्षा- माताजी की दीक्षा होते ही शास्त्राभ्यास प्रारंभ हो गया। पूज्य श्रुतसागर जी महाराज ने जैन सिद्धांत का अध्ययन कराया। पूज्य श्री अजितसागर जी महाराज ने इन्हें न्याय और व्याकरण शास्त्रों का अध्ययन कराया गणित का अभ्यास एवं षट्खण्डागम सिद्धांत के स्वाध्याय में पं. रतनचंद जी मुख्तार सहयोगी बने, माता जी की लगन एवं परिश्रम से उन्होंने शीघ्र ही ज्ञानार्जन कर लिया। इसी बीच दिशा के प्रारंभिक काल में उनका उत्साह साहस दृढ़ता बढ़ती गई पर शरीर क्षीण एवं कमजोर होता जा रहा था, क्योंकि दीक्षा के बाद माताजी को लगातार अंतराय आते थे सो शरीर अशक्त होने लगा। आचार्य महाराज ने एक दिन इस उपद्रव की शांति के लिए

माताजी को वृहद-शांतिमंत्र की एक माला रोज फेरने को कहा माताजी स्वंय बताती थी कि मेरे जीवन की यह प्रथम और अंतिम गुरु आज्ञा थी जिसे माताजी ने अत्यंत विनयपूर्वक दृढ़तापूर्वक आचार्य श्री से मना कर दिया। उनका उत्तर था क्यों यह पद लेकर रोटी के लिए अनुष्ठान करना उचित होगा स्वयं आचार्य महाराज ने उनकी इस दृढ़ता की सराहना की।

उद्बोधन- विशुद्धमति माताजी निर्भीक एवं स्पष्ट वक्ता थी। आगम के अथाह सागर में गोले लगाकर उन्होंने जो मुक्ता माणिक चुने उन्हें सहज सरल भाषा में भक्तों को देकर उनके कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। वे हमेशा कहती थी कुछ नियम लेकर जिनवाणी का पाठन एवं श्रवण करो तो मार्ग अवश्य मिलता है।

श्रुत सेवा- जैन आगम का अध्ययन करते-करते चिंतन मनन हर समय चलता रहा। आचार्य श्री शिवसागर जी के आदेश एवं मुनि श्री श्रुतसागर जी एवं अजितसागर जी के प्रेरणा से माताजी ने जिनवाणी लेखन को प्रारंभ किया। प्रारंभ में अनेक जनोपयोगी रचनाएं करी। उनका लेखन दीक्षा के 4-5 वर्षों बाद प्रारंभ होकर अनवरत जारी रहा उनके समाधि साधना काल में भी 30 नवम्बर 2001 की रात्रि तक चलता रहा।

पूज्य 105 विशुद्धमति माताजी की श्रुत सेवा भाषा टीकाएं

1. सिद्धान्तचक्रवर्ती नेमीचन्द्राचार्य विरचित त्रिलोकसार टीका।
2. भट्टारक सकलकीर्ति विरचित सिद्धान्तसारदीपक टीका।
3. यतिवृषभाचार्य विरचित तिलोयपण्णतीः हिन्दी टीका (तीन खण्डों में)
4. क्षपणासार
5. अमितगति निसंगयोगिराज विरचित- योगसार प्राभृत (प्रश्नोत्तरी टीका)
6. मरण कण्डिका (प्रश्नोत्तरी टीका)

मौलिक रचनाएं- 1. श्रुतनिकुंज के किंचित् प्रसून 2. गुरु गौरव 3. श्रावक सोपान और बारह भावना 4. आनंद की पद्धति अहिंसा 5. निर्माल्य ग्रहण पाप है 6. केवली विधान

प्रश्नोत्तर लेखन- 1. धर्मप्रवेशिका प्रश्नोत्तर माला 2. धर्मोद्योत प्रश्नोत्तर माला 3. छहढ़ाला 4. इष्टोपदेश 5. स्वरूपसम्बोधनपंचविशंति।

संकलन-सम्पादन- 1. वत्थुविज्जा (खण्ड1 -गृहशिल्प), 2. वत्थुविज्जा (खण्ड 2-मन्दिरशिल्प), 3. श्रमणचर्या, 4. समाधिदीपक , 5. दीपावली पूजनविधि, 6. श्रावक सुमन संचय, 7. स्तोत्र संग्रह, 8. श्रावक सोपान, 9. आर्यिका आर्यिका है 10. संस्कार ज्योति, 11. पाक्षिक श्रावक प्रतिक्रमण सामायिक विधि, 12. वृहद् सामायिक पाठ एवं व्रती श्रावक प्रतिक्रमण, 13. आचार्य शांतिसागर जी महाराज का संक्षिप्त जीवनवृत्त, 14. रात्रिक/दैवसिक प्रतिक्रमण (अन्वयार्थसहित), 15 पाक्षिकादि प्रतिक्रमण (अन्वयार्थसहित), 16. वास्तु विज्ञान परिचय, 17 नित्यनियम पूजा, 18. शान्तिधर्मप्रदीप, 19. नारी बनो सदाचारी, 20. महावीरकीर्ति स्मृति ग्रंथः एक अनुशीलन, 21. ऐसे थे चारित्र चक्रवर्ती , 22. चारित्र चक्रवर्ती

आचार्य शांतिसागर चरित्र।

समाधि भावना- स्वस्थ शारीरिक अवस्था में ही पूज्यमाताजी ने 16 जनवरी 1990 को पूज्य आचार्य अजितसागर जी महाराज के समक्ष बारह वर्ष की उत्कृष्ट संल्लेखना के संकल्प की भावना व्यक्त करी और उनसे संल्लेखना व्रत की याचना करी। आचार्य महाराज ने उन्हें आशीर्वाद देकर यह संल्लेखना का नियम दिया। कुछ समय बाद ही आचार्य महाराज की समाधि हो गई तो पंचम पट्टाचार्य श्री वर्धमानसागरजी माताजी की समाधि हेतु निर्यापकाचार्य बने। व्रत को लेते ही माताजी ने अपने शरीर को कृश करना प्रारंभ कर दिया आहार में कमी एवं उपवास अधिक होने लगे। 1998 का चातुर्मास प्रारंभ होते ही एक दिन आहार एक दिन उपवास प्रारंभ हो गया। उनका शरीर क्षीण हो रहा था, पर आत्मबल निरंतर बढ़ रहा था। 2000 के चातुर्मास में वे दो दिन के अंतर से आहार लेने लगी। आषाढ़ शुक्ला सप्तमी 27.06.2001 को भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याण दिवस और अपने दीक्षा के अवसर पर माताजी ने पूज्य आचार्य वर्धमान सागर जी के समस्त संघ के समक्ष क्षमा याचना की और सभी प्रकार के अनाज का जीवन पर्यंत के लिए त्याग कर दिया। दो दिन के अंतर में लेने वाले आहार में दूध छाछ केला और फल ही रहे। तीन महिने के भीतर क्रमशः केला दूध फिर छाछ का भी त्याग कर दिया। 9 दिसम्बर 2001 को माताजी ने पूज्य आचार्य वर्धमान सागर जी एवं संघ की उपस्थिति में आचार्य जी से अनुमति और आशीर्वाद लेकर शैया गृहण कर अनुष्ठान किया। अब आहार में मुसम्बी का रस एवं जल मात्र लेने लगी। 3 जनवरी 2001 को त्याग करके 2-3 दिन के अंतर मात्र जल की प्रक्रिया अपनाई। 16 जनवरी 2002 को बारह वर्षीय संल्लेखना की अवधि पूर्ण होने पर माताजी ने जल लेने का भी त्याग कर दिया। जल त्याग के छह दिन की साधना के बाद 22 जनवरी 2002 को प्रातः साढ़े चार बजे ब्रह्ममुहुर्त मेंआचार्य महाराज और गणिनी आर्यिका सुपार्श्वमति माताजी से पंचनमस्कार सुनते हुए अंतिम सांस ली। संयमी जीवन का शानदार समापन हुआ।

माताजी ऐसी भाग्यवान साधिका थी जिन्हें अपने व्रती जीवन में पूज्य आचार्य शिवसागर जी, आचार्य धर्मसागरजी, आचार्य पूज्य अजितसागर जी, परमपूज्य आचार्य वर्धमानसागर जी एवं आचार्य कल्प श्रुतसागर जी का मार्गदर्शन मिला। निर्यापकाचार्य श्री वर्धमानसागर जी के संघस्थ मुनिराजों एवं आर्यिका माताओं ने माताजी की समाधि साधना के अंतिम वर्ष में अपने संबोधन, सेवा, वैयावृत्ति द्वारा सहयोग किया। इनसे पूज्यमुनि श्री पुण्यसागरजी पूज्य चिन्मय सागर जी, पूज्य अर्पितसागर जी एवं आर्यिका शीतलमति माताजी, दयामति माताजी, एवं वर्धितमति माताजी ने अथक परिश्रम किया और पूज्य प्रशांतमति तो छाया की भांति माताजी के साथ रहती थी। गणिनी आर्यिका सुपार्श्वपमति माता जी बाईस दिनों तक माताजी को अत्यंत वात्सल्यपूर्वक संबोधन देकर दृढ़ता प्रदान करती रही। सुपार्श्वमति माताजी की संघस्थ ब्रह्मचारिणी डॉ. प्रमिला जी (गौरवमति माताजी) ने भी माताजी की बहुत सेवा की। माताजी की

भावना किसी सिद्धक्षेत्र पर समाधि करने की थी। पर अनुकूलता नहीं बन सकी। माताजी के पुत्रवत भक्त प्रतिष्ठाचार्य पं. हंसमुख जी ने 1997 में धरियावाद से तीन किलोमीटर दूर एक निर्जन भूमि पर कुछ आवश्यक सुविधाओं का निर्माण कराया और नाम रखा नंदन वन। जिसे बाद में श्री क्षेत्र सिद्धांत तीर्थ संस्थान नंदनवन नाम दिया गया। माताजी के 1999, 2000 और 2001 का चातुर्मास यही सम्पन्न हुए। श्री हंसमुख जी निरंतर माताजी की सेवा में समर्पित रहे। संघ की माताजी के भक्तों की सब व्यवस्था कर रहे थे, और माताजी की समाधि नंदनवन में हुई। जहाँ श्री पं. हंसमुख जी ने समाधि स्थल को एक स्मारक का रूप दिया है।

मैं अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली मानती हूँ कि पूज्य माताजी का चरण सान्निध्य मुझे मेरे बचपन से उनके समाधि तक बराबर प्राप्त हुआ। उन्होंने जिनवाणी का अध्ययन कराया। अपने जीवन के हर क्षण का उपयोग करना वे जानती थीं। अपने समाधि काल में उन्होंने एक भजन लिखा था (घड़ी) इसी भजन की अंतिम पंक्तियों से मैं अपनी लेखनी को विराम देती हूँ।

हे भव्य ! आयु अवसान समय, यह घड़ी, घड़ी दिखलाती है।
तुम चेतो ! जागो ! उठो ! शीघ्र यह घड़ी खिसकने वाली है ॥
जो घड़ी गई, जो निकल रही, वह कभी न वापस आयेगी।
मति कर विशुद्ध तो शेष घड़ी, अनमोल घड़ी बन जायेगी ॥

कविता

धर्म

डॉ. श्रीमति आशा जैन, इंदौर

धर्म है जीवन का आधार
इसे मंदिर मस्जिद गुरुद्वारों में मत बांटो
नहीं बांधो इस देशकाल की सीमाओं में
धर्म का अर्थ है अहिंसा सत्य से अनुप्रमाणित निज आचरण
कोई भी धर्म इसका निषेध नहीं करता
सभी धर्मों ने इन्हें अपनाया है, गिरतों को सहारा देना
सभी से सहानुभूति एवं वात्सल्य भावना
सभी धर्मों में बतलाया है
धर्म पुण्य का मिलन ही जीवन का ध्येय है
धर्म पुण्य का मिलना अद्भुद खेल है।
इसीलिये तो कहते हैं
धर्म करत संसार सुख, धर्म करत निर्वाण
धर्म पंथ साधे बिना, नर तिर्यंच समान।

क्यों हो रहा है युवा जैन धर्म से विमुख

✻ विमल कुमार जैन, जयपुर ✻

जैन धर्म एक अनादि निधन, शाश्वत और त्रैकालिक धर्म है। ये निष्पक्षता पूर्ण धर्म है। इसके अंतर्गत जो जैसा कार्य व आचरण करता है, उसे तद्रूप फल की प्राप्ति होती है। अभी तक जितने भी भव्यात्माओं ने अपनी आत्मा को परमात्मा बनाया है वह सब जैन धर्म की ही देन है। जब तक हम जैन धर्म की शरण नहीं लेंगे, इसको जीवन में धारण नहीं करेंगे तब तक तीन काल में भी हम मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकते। इस पंचम कलि काल में जैन धर्म ही हमारे लिये शरण भूत व कल्याण कारक है

वर्तमान समय हमारे लिये महान् पुण्योत्पादक व धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत है, क्योंकि इस समय पूरे भारतवर्ष में स्थान-स्थान पर पंचकल्याणक महोत्सव व अन्य धार्मिक आयोजन बढ़े उत्साह व प्रभावना पूर्वक सम्पन्न किये जा रहे हैं। इस समय चा.च. आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण परम्परा के कितने ही महान् आचार्यों उपाध्याय व साधु परमेष्ठियों व आर्यिकाओं के साक्षात् दर्शन, प्रवचन व सदुपदेशों के द्वारा धर्म का सूक्ष्माति सूक्ष्म व विस्तरित ज्ञान प्राप्त हो रहा है। महान् पुण्योदय से हमें जैन कुल, उत्तम सत्संगति, धार्मिक वातावरण , चतुर्थ कालीन चर्यावत् मुनियों के साक्षात् दर्शन प्राप्त हो रहे हैं। ऐसे सुखद व धर्मानुकूल वातावरण में भी हमारी युवा पीढ़ी जैन धर्म से विमुख क्यों हो रही है ? यह एक पेचिदा, जटिल व विचारणीय प्रश्न है जो बुद्धिजीवी मानव मन को उद्वेलित व आंदोलित कर रहा है। इस पर सूक्ष्मता, गहनता व गंभीरता से चिन्तन मनन करना अनिवार्य है।

युवावस्था जीवन का वह भाग है, जब व्यक्ति स्वयं, समाज, राष्ट्र व धर्म के लिये कुछ कर सकता है। युवा पीढ़ी ही समाज, संगठन व राष्ट्र के लिये सशक्त बल के समान है जो धर्म के रथ को आगे खींचने वाले। धर्म की प्रभावना करने वाले हैं। यह सब युवा पीढ़ी द्वारा ही होगा, क्योंकि धर्म को बचपन की जरूरत है, पचपन की नहीं। युवा वर्ग के पास विवेक और सामर्थ्य दोनों होते हैं, जिसके सहारे वे धर्म का सही प्रचार-प्रसार करते हैं। आज यदि युवा वर्ग अपने जीवन की दिशा को सुनिश्चित नहीं कर पा रहा है तो निश्चित तौर पर यह गंभीर चिंता का विषय बनता है। युवा वर्ग समाज की पहचान व देश की शान होता है, फिर अपने जीवन के चौराहे पर खड़ा होकर कर्त्तव्य विमुख हो रहा है, इसमें दोषी युवा वर्ग स्वयं है या समाज का वातावरण या फिर भोगवादी विचारों का दुष्प्रभाव है। इन बिन्दुओं पर सोचना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। समाज की बुजुर्ग पीढ़ी ने अपने जीवन में आदर्शों की छाया विरासत के रूप में युवा वर्ग पर कितनी छोड़ी है, यह मूल्यांकन करना भी महत्त्वपूर्ण है।

धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा के अभाव में हमारी भावी पीढ़ी सुसंस्कारों से बंचित हो रही है। युवा वर्ग के चारों तरफ हिंसा, सेक्स, अश्लीलता, व्यसन का अंधेरा है टेलीवीजन/बी.सी.आर/ मोबाइल/ फेसबुक/ इंटरनेट/सिनेमाघरों मे दिखायें जाने वाले

चल चित्रों / फिल्मों में दिखाये जाने वाले अश्लील व नंगे नृत्यों से भोगवाद की ओर उन्मुक्त होकर धर्म से विमुख हो रहा है। ऐसी विषम परिस्थितियों में समाज के श्रीमन्तों, धीमन्तों व विद्वत वर्ग का विशेष ध्यान नहीं है। जो व्यक्ति पंचकल्याणकादि आयोजनों मे बोली बोलकर लाखों करोड़ों रूपये खर्च करते हैं व सत्साहित्य प्रकाशन, प्रचार-प्रसार के लिये व बच्चों के धार्मिक संस्कारों के लिये जैन पाठशाला के संचालन हेतु हजार दो हजार रूपये भी दान में देने के लिये सोचते हैं । बाह्य दिखावें, प्रदर्शन व प्रतिस्पर्धा में लाखों रूपये खर्च कर देते हैं, परन्तु सजीव बच्चों को संस्कारों से मानव से महामानव, नर से नारायण बनने की शिक्षा के लिये खर्च नहीं कर पाते। आज मूर्तिवन्त भगवन्तों के साथ ही साथ समाज की जीवन्त प्रतिमाओं को सुसंस्कार रूपी सूर्य मंत्र देकर उनकी प्राण प्रतिष्ठा की अत्यंत आवश्यकता है, अन्यथा गगन चुम्बी शिखरों वाले विशालकाय जिनालयों में विराजित प्रतिष्ठित जिन बिम्बों का अभिषेक/पूजन कौन करेगा ? धर्म, देव-शास्त्र-गुरु की रक्षा कैसे होगी ? हमारे श्रमण संघों मंगल आशीर्वाद व प्रेरणा से स्थान-स्थान पर जैन पाठशालाएँ व संस्कार केन्द्र समाज के भामाशाहों व विद्वत्वर्ग अथवा स्थानीय प्रबुद्ध विदुषी महिलाओं के द्वारा खुलवाने/संचालित करने का कार्य संपादित किया जा सकता है। बड़े-बड़े धार्मिक आयोजनों में होने वाली आय में से 10%-20% राशि जैन पाठशालाओं के संचालन के लिये आरक्षित होनी चाहिये। जो बच्चे नियमित जैन पाठशाला नहीं जा सकते, कम से कम प्रत्येक शनिवार-रविवार को तो उनको पाठशाला में भेजना ही चाहिये, क्योंकि अच्छा संगीत टेप करने पर अच्छा संगीत सुन सकते हैं। इसी प्रकार बाल्यकाल में अच्छे संस्कार डालने से जीवन भर सुसंस्कृत आचार-विचार को प्राप्त कर सकता है। वही संस्कारवान बालक एक दिन युवावस्था को प्राप्त करेगा। माताओं को भी बीस तीस मिनिट प्रतिदिन घर पर अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा अवश्य देनी ही चाहिये।

हमारे बुजुर्गों की ओर से युवा वर्ग को अपने जीवन निर्माण करने के लिये सही दिशा व निर्देश नहीं मिल रहे हैं। उनकी ओर से अपने बच्चों में धार्मिक व नैतिक शिक्षा देने की प्रेरणा नहीं दी जाती, बल्कि लौकिक शिक्षा हेतु उसे प्रारंभ से ही कान्वेंट व इंग्लिश मीडियम स्कूलों में धकेल कर हजारों/लाखों रूपये खर्च कर देते हैं। प्रारंभ से ही बच्चों को मंदिर जाने, अभिषेक पूजन करने की प्रेरणा नहीं देते बल्कि परिवार के सभी सदस्य बच्चों के साथ बैठकर टेलीविजन आदि में अश्लील व आपत्तिजनक दृश्यों को देखते हैं, जिससे भी बच्चों पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। अब छोटे-छोटे बच्चों के हाथ में स्मार्ट फोन आ गये, दिन भर उसी में लगे रहते हैं।

भौतिकता की चकाचौंध व पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण से ग्रसित अधिकांश युवतियां दूसरों की देखा-देखी अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं की चाह व इच्छा पूर्ति के लिये युवकों को येनकेन प्रकारेण धनार्जन करने के लिये बाध्य करती है। युवक रात-दिन अर्थ संग्रह की उधेड़ बुन में उलझा रहता है। व्यंगात्मक कटाक्षों व तानों से उसे दिग्भ्रमित कर देती है। उसकी आमदनी से ज्यादा खर्च होने लगता है तो वह युवा मानसिक अवसाद में आकर कुण्ठा ग्रसित हो

जाता है। ऐसी स्थिति में जो धार्मिक क्रियाओं से जुड़े होते हैं, उनका उपहास करके उन्हें भी धर्म से दूर करने में सहायक बन जाती है। यदि हमारे समाज की युवतियां/महिलायें धार्मिक संस्कारों से आप्लावित होकर युवकों को धर्म से जुड़ने की प्रेरणा देकर अग्रसर हो जावे तो आज के दिशा विहीन यु वा को सुखद व खुशहाल बना सकता है।

आज सामाजिक राजनैतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था पर वे लोग हावी हैं तो तन से बृद्ध हो जाने के पश्चात् भी मन से जवान बने रहने का ढोंग रचते हैं और युवा वर्ग को कोसते हैं। ये वृद्धजन इस बात का प्रयत्न करते हैं कि युवकों के रास्ते बंद कर दिये जावे ताकि वे धर्म के ठेकेदार बने रहें। युवकों को सुनहरे स्वप्न दिखाकर, राष्ट्र व धर्म के कर्णधार बताकर अंधेरे भविष्य की अनजान एवं अजनबी काल-कोठरी में धकेल देना चाहते हैं। चंद व्यर्थ आश्वासनों और नारों के अतिरिक्त इनके पास युवा वर्ग के भविष्य की कोई योजना, कोई सुरक्षा और कोई दिशा नहीं है। अधार्मिकता के कारण ही आज हमारे समाज में भ्रूण हत्या/गर्भपात/आत्म हत्याएं जैसे घिनौने पाप हो रहे हैं। विजातीय विवाह, प्रेम विवाह, बेमेल विवाह, विधवा विवाह तथा तलाक जैसे आगम विरूद्ध कार्य होने लगे हैं जो भविष्य के लिये बेहद चिन्ताजनक है।

कुसंगति, हीनाचरण व खान-पान की अशुद्धता के कारण भी हमारे युवा पथभ्रष्ट हो रहे हैं। युवा-पीढ़ी भ्रष्टता के कारण नीचे गिरती जा रही है। आज का युवा इतना संकीर्ण हो गया है कि उसका चिन्तन अपने तक ही सीमित है, न समाज की परवाह है न धर्म की परवाह, न देश न परिवार की परवाह है। वे परवाह जीता वह धर्म को समझना ही नहीं चाहता कि जीवन, विज्ञान, स्वास्थ्य सभी कुछ धर्म से जुड़ा है। शादी होते ही परिवार व माता-पिता से अलग होकर स्वच्छन्द रूप से जीने व एकल परिवार में रहने की आदत भी उसे धर्म से विमुख करती है। वर्तमान में उसका धर्म खावो पीवो मौज उड़ाओ वाले सिद्धांत में है। फैशनेबल कपड़े पहिनना, घूमना-फिरना, होटलों में खाना-पीना व अन्य असांस्कृतिक हरकतें करना, शादी-विवाह व अन्य आयोजनों में अनैतिक आचरण करने को आधुनिकता मानते हैं। हिंसात्मक सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रयोग, चर्म की वस्तुओं का उपयोग, अमर्यादित व नशीली वस्तुओं के खान-पान को फैशन मानने लगे हैं। कहा भी है जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन, जैस पीवे पानी वैसे बोले वाणी। वर्तमान में 50 से 75 % युवा पीढ़ी दुर्व्यसनों में उलझी होने से धार्मिक क्रियाओं से विमुख रहती है। आज के अधिकांश युवाओं में न नैतिकता है, न नीतिगत बातों का ज्ञान, न नियम है, न कर्त्तव्यों का भान और जहाँ दायित्व बोध नहीं वहाँ व्यक्ति धर्म से अनभिज्ञ रहता है। आजकल जुआ के साथ-साथ लॉटरी, सट्टा, ताश खेलना, अंजू मन, विडियो गेम, शेयर, डिब्बे का व्यापार आदि भी द्यूत व्यसन है। इन प्रयोगों से धनार्जन करके लखपति/करोड़पति बनने की चाह में भ्रमित व अवसाद ग्रस्त बने रहते हैं। इन क्रियाओं के कारण में धर्म में मन नहीं लग पाता है।

आगम ग्रंथों के नियमित स्वाध्याय व तत्त्व चर्चा के अभ्यास के बिना युवावर्ग जैन दर्शन व कर्म सिद्धांतों से अनभिज्ञ रहता है। वह वैज्ञानिक व तार्किक शक्ति से शंकाओं का सटीक समाधान चाहता है। जैन धर्म में विश्व समस्त ज्ञान-विज्ञान, कला, विद्या व विभिन्न विधाओं के

सूत्र भरे हुए हैं, परन्तु इस वैज्ञानिक, तार्किक, शोध-बोध के युग में भी जैन साधु - साध्वी, श्रावक पंडितादि कोई विशेष युगानुकूल वैज्ञानिक शोध करके धर्म के प्रचार को आगे वृद्धिंगत नहीं कर पा रहे। इस ओर विशेष जागृति की आवश्यकता है। वर्तमान में हमारे युवा साधु जरूर ध्यान देने लगे हैं, जिससे युवा वर्ग की मानसिकता धर्म के प्रति कुछ अंशों में बढ़ने लगी है।

युवा-वर्ग की प्राथमिक आवश्यकताओं/समस्याओं के प्रति बुजुर्ग-पीढ़ी उदासीन सी लगती है। निर्धन प्रतिभावान छात्रों की उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्तियों एवं ऋणों की व्यवस्था का अभाव, बोर्डिंग हाऊस/छात्रावासों की कमी, जैन समाज के प्रतिष्ठानों में जैन युवाओं को प्राथमिकता के आधार पर रोजगार की व्यवस्था की कमी आदि व्यवस्थाओं के अभाव में युवा वर्ग मानसिक तनाव से ग्रस्त हो जाता है। धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत फिल्में, लघुनाटिकायें, संगोष्ठियाँ, व्याख्यान मालाएं आदि के माध्यम से भी युवा वर्ग को धर्म में स्थिर कर सकते हैं। मन्दिरों में स्वच्छ व सुन्दर धोती दुपट्टे व मनोज्ञ द्रव्य-पात्रों की कमी के कारण भी युवा अभिषेक/ पूजन करने के भाव नहीं बना पाता। इस ओर भी सुधार करने की आवश्यकता है।

समाज में अनेक पंथ/आम्नाय प्रचलित होने से भी युवा वर्ग निर्णयात्मक स्थिति में नहीं पहुंच पाता कि वे किस पंथ का अनुशरण करें ? आखिर इस पंथवाद की उलझन से बचने के लिए वह अपने आपको ही धर्म से दूर कर लेता है। इस समय पंथवाद के व्यामोह में हमारा अल्प संख्यक जैन समाज विभाजित व असंगठित हो चुका है। धर्म की प्रभावना के लिए संगठन तथा प्रेम के लिए संस्था, सभा, समिति, मंडल , परिषदादि का गठन करते हैं, परन्तु इनके माध्यम से भी समाज में फूट, वैमनस्य, द्वेष, घृणा, ईर्ष्या, बैरत्व अधिक से अधिक बढ़ रहा है। सामाजिक, धार्मिक संस्थाएँ भी राजनीति का अखाड़ा बन गये। जो एक बार कुर्सी पर बैठ गया, हटने का नाम नहीं लेते तथा स्वयं को कर्त्ता मानकर धर्म के ठेकेदार बने रहना चाहते हैं। ऊर्जावान युवकों को ऐसा अवसर प्रदान नहीं करते। आज हम दूसरों की मुसीबत और परेशानी में मजा लेते हैं, हँसते हैं और आगे बढ़ते हुए व्यक्ति की टाँग पकड़कर पीछे घसीट कर फेंक देना और फिर तमाशा देखना। ऐसे आचरण ही हमारे युवा वर्ग को धार्मिकता से विमुख होने में सहायक होते हैं।

धर्म से विमुख होने का सबसे बड़ा कारण मिथ्यात्व है। मिथ्यात्व अर्थात् सही समझ और श्रद्धा का अभाव। जब हमें सत्य भी असत्य दिखाई देता है और असत्य को हम सत्य के रूप में मानने लगते हैं-वह मिथ्यात्व कहलाता है। आज का युवा जो बात उसे सुननी चाहिए वह नहीं सुनता है। हितोपदेश सुनना उसे अच्छा नहीं लगता है। वह इन्द्रिय सुखों की बातें सुनने का रसिक है। उसे विकथाएं सुनने में आनन्द आता है और अश्लील बातें देखने सुनने के लिए तो धन और समय बहुत खर्च कर डालता है, परन्तु वह यह नहीं समझ पाता कि यह देखना, सुनना मौज मस्ती मेरे दुःखों की वृद्धि करने वाले हैं।

वर्तमान विषम पंचम कलिकाल में अधिकांश साधुवर्ग दुर्धर तपस्या करके स्व पर कल्याण करने के लिए साधनारत हैं। अपवाद स्वरूप कुछ साधुओं से भी युवा कुण्ठित व भ्रमित है। कतिपय साधु संतों के एकल बिहारी रहने से भी युवा वर्ग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। स्वनाम

की प्रसिद्धि करवाने व सुविधापूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए स्थान विशेष पर रहकर संस्था के नाम से चन्दा-चिट्ठा एकत्रित कर आय- व्यय का लेखा जोखा, चौके आदि की व्यवस्थाएं भी स्वयं के पास रखने लगे हैं । गाड़ी, वाहन, नौकरादि रखकर फ्रीज, टी.वी, मोबाईल, पंखे, कूलर, ए.सी. आदि सुविधाओं का उपयोग कर आगमानुकूल चर्या के विपरीत क्रियाएं करने लगे हैं । मंत्रादि का प्रयोग स्वार्थ पूर्ति व स्वयं की लोकेषणा के लिए करने लगे हैं । इन सब क्रियाओं के देखने से व्यथित युवा मन क्षुब्ध व चिन्तित होकर धार्मिक क्रियाओं से दूर हो जाता है। आगमानुकूल चर्या का अक्षरशः पालन करने वाले साधुओं की भी उपेक्षा करके हितकारी व आत्मकल्याण की बात सुनना नहीं चाहता। कथित धर्म के ठेकेदार साधन सम्पन्न, धनाढ्य महानुभाव भी युवाओं के आगे बढ़ने में बाधक बन जाते हैं। इनके कारण साधुओं के दर्शन भी सुलभ नहीं हो पाते। इन कारणों से भी युवा अपने आपको धार्मिक क्रियाओं से दूर कर लेता है।

आधुनिक युग में धर्म पर से विश्वास उठ जाने के कारण व्यक्ति का जीवन तनाव, ग्रस्त, गलत फहमी, स्वार्थ, अविश्वास, लोभ लिप्सा, जलन, ईर्ष्या-द्वेष मद आदि भावनाओं से भरा पड़ा है, जो जीवन में जहर घोलती है। आज हर समाज में युवा पीढ़ी पल बढ़ रही है। अतः हम सबको चाहिए कि यह पीढ़ी धर्म के मर्म को समझें, क्योंकि धर्म ही हमारे लिये कार्यकारी है। धर्म से जुड़ने व उसे धारण करने से ही हमारा कल्याण को सकता है । सभी अवगुणों/दुर्व्यसनों /पापात्मक कार्यो को धर्म से ही दूर किया जा सकता है। धर्म के माध्यम से ही हमें सद्‌बुद्धि प्राप्त होती है। उचित समय पर उपजाऊ भूमि की बुबाई-जुताई करके उसमें खाद व बीज डाल दिये जावे और समय-समय पर वर्षा होती रहे तो उत्तम पैदावार हो जाती है। यह समय भी हमारे युवा वर्ग को धर्ममय बनाने के लिए उपयुक्त है, क्योंकि समय समय पर विद्वान् युवा साधुओं के मुखार बिन्द से धर्मामृत रूपी पीयूषवाणी की वर्षा हो रही है।

विश्व को नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाली भारत वर्ष की गरिमा आज मिट्टी में मिलती जा रही है। मनुष्य के मन का स्वार्थ आज ऐसा राक्षस सा बन गया है कि जिसकी दृष्टि में अच्छे बुरे का, पाप पुण्य का सम्पूर्ण भेद ही समाप्त हो गया। हर स्तर पर स्वार्थ सिद्धि ने डेरा जमा लिया है। आज धन दौलत ही सब कुछ है ऐसी मान्यता व्यापक बन गई है। न्याय नीति से धन कमाने की बात हवा बनकर उड़ गई है। पुण्य, धर्म और संस्कृति ओझल हो रही है। पाप, अधर्म और विकृतियों ने मनुष्य की नैतिकता नष्ट भ्रष्टकर दी है और आध्यात्मिकता व धार्मिकता को रौंद डाला है। धन-दौलत का प्यासा मनुष्य क्रूर, उग्र और दयाहीन होता है। उसको न अपनी आत्मा की स्मृति होती है, न पाप से डर और न धर्म से कोई लगाव।

मनुष्य ने आकाश चूमते बहुमंजिले भवन तो बना लिए हैं, मगर हृदय छोटा हो गया है। हम दो और हमारे दो अब तो एक में ही सिमटने लग गया है। यह स्थिति केवल साधारणजनों की ही नहीं है, अपितु बड़े-बड़े नामधारी धर्माध्यक्ष तक इस मायाजाल से युक्त ही हैं। हमें पुनः संयुक्त परिवारों की परिकल्पना को साकार करना होगा।

आज कल धार्मिक आयोजनों में स्वागत सत्कार की परम्पराओं में अधिकांश समय व्यतीत

करने से भी युवा ऐसे कार्यक्रमों में जाना ही नहीं चाहते। सभी जगह धन राशि एकत्रित करने की प्रतिस्पर्धा हो जाने से भी युवा सोचने लगता है कि वहाँ पैसे देने पड़ेंगे। इसलिए भी वह धार्मिक आयोजनों की उपेक्षा करने लग जाता है। युवाओं की असीम इच्छाओं के कारण भी वह धनार्जन करने में ही अपने आपको व्यस्त कर लेता है और धर्म से दूर ही रहने लगता है।

उपरोक्त कारणों के अतिरिक्त भी अन्य अनेक कारण हो सकतेहैं, जिनकी वजह से हमारा युवा धर्म व धार्मिक क्रियाओं से विमुख सा रहने लगता है। मेरे ज्ञान, अनुभव व अन्य लेखकों के चिन्तन-मनन का सहारा लेकर उपरोक्त विचार लिखे गये हैं, हो सकता है कि कोई इन विचारों से सहमत न हो। इसमें कोई कटु सत्य लिखने में आ गया हो तो विद्वान जन मुझे क्षमा करने की कृपा करेंगे। आज भी अनेकों युवा अपने माता-पिता व सद्‌गुरुओं की सद्‌प्रेरणा से उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए सुसंस्कारों के बल पर जैन धर्म की अपूर्व प्रभावना कर रहे हैं। वे सभी महान् पुण्यशाली हैं तथा साधुवाद के पात्र हैं।

अंत में मैं भारतीय प्रबुद्ध वर्ग, चिन्तनशील, धर्म परायण समाज सुधारकों से आशा करता हूँ कि वे युवा वर्ग के कार्य कलापों पर कीचड़ न उछालकर सैनिक के रूप में सीमा पर मर मिटने वाले कवि के रूप में हुंकारने वाले, साधु तपस्वी के रूप में मोक्षमार्ग बताने वाले, किसान के रूप में भारत धरा को शस्य श्यामला रूप देने वाले, गुरु के रूप में मानव से महामानव व नर से नारायण बनाने वाले, धर्म के लिए मर मिटने वाले युवा वर्ग की शक्ति को राष्ट्र निर्माण में लगाने का प्रयत्न करेंगे ताकि यह युवा शक्ति राष्ट्र के, समाज के व धर्म के सुन्दर भविष्य को पुष्पित व पल्लवित कर सकें, क्योंकि इस पंचमकाल में भी आगे 18000 वर्षो तक धर्म चलता रहेगा। यदि प्रशासनिक स्तर पर कार्य करने वाले चिन्तनशील बुद्धि जीवी, विद्वान् दार्शनिक एवं समाज सुधारक इस शक्ति का बदलते परिवेश में सहयोग प्राप्त करने में सफलता अर्जित कर लेते हैं तो निसन्देह राष्ट्र सुखी व समृद्ध तो होगा ही साथ ही हमारी युवा पीढ़ी धर्म में पूर्ण रूप से स्थिर होकर साधु वर्ग/त्यागी वर्ग के मंगलमय आशीर्वाद से जैन धर्म की महान् प्रभावना कर सकेंगे।

अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है । समय रहते हम सभी माता-पिता परिवार की महिलाएँ/युवतियां घर-परिवार व समाज के वातावरण को धार्मिक संस्कारों से ओत-प्रोत करके हमारे भटके हुए बच्चों व युवा वर्ग को धर्म के सही मार्ग पर लाने का उत्कृष्ट कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त कर सकते हैं , जिससे हमारे परिवारों में जो दूषित व वैषम्यमय वातावरण बना हुआ है, उससे मुक्ति मिल सकेगी तथा परिवार/समाज में स्वर्गीय सुखों की व आनन्दानुभूति होने लगेगी।

सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे।
बैर-पाप अभिमान छोड़ जग, नित्य नये मंगल गावे ।।
घर -घर चर्चा रहे धर्म की, दुस्कृत दुष्कर हो जावे।
ज्ञान चरित उन्नत कर अपना, मनुज-जन्म-फल सब पावे ।।

लीजिए हमको शरण में , हम सदाचारी बनें, ब्रह्मचारी, धर्म रक्षक, वीरव्रत धारी बनें।

क्या व्यवहार नय सर्वथा मिथ्या है ? अथवा सत्यार्थ भी ।

✻ पं. राजकुमार शास्त्री, जबलपुर ✻

पणमिय सिरसा णेमिं, गुणरयण विभूषणं महावीरम् ।
सम्मत्तरयण गिलयम, पयडिसमुक्तिणं वोव्हम् ।।

भूमिका :-आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने कहा हैः- वस्तु स्यात् अनेकान्तात्मक है स्यात् एकान्तात्मक है इस प्रकार प्रमाण और नयरूप साधन से साध्य अनेकान्तात्मक वस्तु की सिद्धि होने में कोई विरोध नहीं है। वस्तु स्यात् अनेकान्त रूप है इस प्रकार स्यात्कार ने प्रविभक्त वस्तु के विशेष का व्यंजक नय है।

नयः- प्रमाण के विषयभूत पदार्थ के एक देश को ग्रहण करने वाला निश्चयनय अथवा व्यवहारनय अपने द्वारा गृहीत एकान्त को स्यात् शब्दपूर्वक प्रकाशित करने से मिथ्या नहीं है, किन्तु समय है क्योंकि निरपेक्ष नय मिथ्या होता है, स्यात् सापेक्ष में सच्चा होता है।

कहा भी हैः- स्यात्कार सत्य का चिह्न है, स्यात् निर्पेक्षनय मिथ्या है, दुर्नय है क्योंकि वह अनेकांत का तिरस्कार करने पर तो अनेकांत नहीं एकांत ही रहता है और वह अवस्तु है।

नयोपनयैकांतानां, त्रिकालानां समुच्चयः ।
अविभ्राङ्भाक्संबंधो द्रव्यमेकमनेकद्या ।। (आप्त मीमांसा)

आचार्य समंतभद्र स्वामी ने आप्त मीमांसा ग्रंथ में कहा है त्रिकाल गोचर नयैकांत और उपनयैकांत अर्थात निश्चयनय और व्यवहारनय के विषयभूत अर्थो का समुदाय जो सदा अविनाशी , अभिन्न संबंधरूप है वह द्रव्य है। वह एक तथा अनेक रूप है।

शायद कोई कहे नय और उपनय तो एकान्त धर्म को विषय करते हैं अतः उनका समुदाय भी मिथ्याएकांत का समूह होने से मिथ्या है किन्तु ऐसा कहना उचित नहीं है। क्योंकि स्यातपद से निरपेक्षनय मिथ्या होते हैं और स्यात्सापेक्ष में वस्तुरूप होने से इष्ट सापेक्ष होते हैं।

यह सामान्य नय निश्चय और व्यवहार के भेद से 2 प्रकार का है।

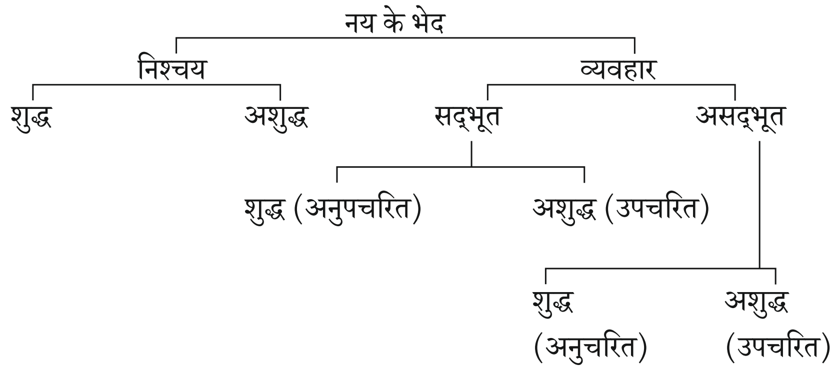

निश्चय- जो वस्तु में कर्ता आदि को अभेद को देखता है वह निश्चयनय है

1. शुद्ध निश्चयनयः- सभी चेतन प्राणी शक्ति और व्यक्ति रूप एक हैं एक शुद्ध बुद्ध स्वभाव वाले हैं यह शुद्धनिश्चयनय का उदाहरण है।

2. अशुद्ध निश्चयनयः- आत्मा रागादि रूप है यह अशुद्ध निश्चयनय का उदाहरण है।

व्यवहारनयः- जिसके द्वारा निश्चय की सिद्धी के लिए कर्ता आदि धर्म वस्तु से भिन्न साधे जाते हैं वह व्यवहारनय है।

1. सद्भूत व्यवहारनय :- गुण और गुणी में अभेद होने पर भी भेद का उपचार यह सद्भूत व्यवहारनय है।

2. असद्भूत व्यवहारनयः- भेद में अभेद का उपचार यह असद्भूत व्यवहारनय है।

सद्भूत व्यवहारनय के भेदः-

1. अनुपचरित सद्भूत व्यवहारनयः- चेतन के गुण केवल ज्ञानादि हैं यह शुद्ध सद्भूत व्यवहारनय है। इसी को अनुपचरित सद्भूत व्यवहारनय भी कहते हैं।

2. उपचरित सद्भूत व्यवहारनयः- मति, श्रुत आदि वैभाविक गुण जीव के हैं यह उपचरित नामक सद्भूत व्यवहारनय है।

असद्भूत व्यवहार नय के भेदः-

1. अनुपचरित असद्भूत व्यवहारनयः- यह शरीर मेरा है यह अनुपचरित नामक असद्भूत व्यवहारनय है।

2. उपचरित असद्भूत व्यवहारनयः- यह देश मेरा है, यह उपचरित असद्भूत व्यवहारनय है।

इस प्रकार यह छः नय प्रवचन उपदेष्टा गणधर आदि ने नय चक्र शास्त्र के मूलभूत कहे हैं ।

पुरुषार्थसिद्धुपाय ग्रंथ में कहा भी हैः-

निश्चयमिह भूतार्थं व्यवहारं वर्णयन्त्यभूतार्थम् ।
सिद्धयुपाय, प्रायः सर्वोऽपि संसारः ।।

आचार्य अमृतचंद स्वामी कहते हैं निश्चयनय भूतार्थ है व्यवहारनय अभूतार्थ है तथा भूतार्थ के बोध से समस्त संसार विमुख है।

जो मूढ़ व्यवहार से विमुख होकर निश्चय को प्राप्त करना चाहता है वह बीज आदि सामग्री के बिना धान्य उत्पन्न करना चाहता है।

यह आत्मा शुद्धबुद्ध अविनाशी है सिद्ध है इस प्रकार मान के बैठ जायें की जब हम सिद्ध हैं तो हमें व्रत, संयम, चारित्र आदि की क्या आवश्यकता है। इस प्रकार कार्य करने से तो यही हुआ कि बीज बिना धान्य प्राप्त करना जब तक चारित्र का बीज नहीं डलेगा तब तक मोक्ष रूपी धान्य

प्राप्त नहीं होगा।

व्यवहार अभूतार्थ है जो भूतार्थ से विमुखजनों के मोहवश केवल उसी का प्रयोग करता है वह अन्न के बिना केवल साक आदि व्यंजनों का उपयोग करने वाले पुरुष की तरह स्वार्थ मोक्ष से भ्रष्ट होता है।

जो निश्चयनय को छोड़कर उसके लक्ष्य से विमुख होकर केवल अपने सगे संबंधियों के मोहवश केवल व्यवहार को प्रयोग करता है वह केवल घास, भूसा प्राप्त करने के समान बिना धान्य के किसान के लक्ष्य के समान है। अर्थात मात्र भूसा ही प्राप्त करता है और धान्य प्राप्त नहीं कर सकता।

उदाहरणः- नट रस्सी पर स्वछंदता पूर्वक विहार करने के लिए वास का सहारा लेता है और जब उसमें दक्ष हो जाने पर उसे छोड़ देता है उसी प्रकार धीर मुमुक्षु को निश्चय के निरालंबन पूर्वक विहार करने के लिए बार-बार व्यवहारनय का आलंबन लेना चाहिए और उसमें समर्थ हो जाने पर उसे छोड़ देना चाहिए।

उक्त विषय कर्मकाण्ड ग्रंथ की टीका से लिया गया है इसमें व्यवहारनय और निश्चयनय को मोक्ष की प्राप्ति अथवा आत्मकल्याण में कितनी महत्त्वता है यह स्पष्ट किया गया है।

स्पष्ट है निश्चयनय साध्य है, व्यवहारनय साधन है, साधन के बिना साध्य की प्राप्ति नहीं हो सकती तथा साध्य को लक्ष्य किए बिना साधन की कोई उपयोगिता नहीं रहती। अतः व्यवहारनय के बिना निश्चयनय की प्राप्ति नहीं हो सकती और निश्चयनय को लक्ष्य बिना व्यवहारनय की कोई उपयोगिता नहीं रहती, निश्चयनय मंजिल है, व्यवहारनय मार्ग है। मंजिल तक पहुंचने के लिए मार्ग की आवश्यकता होती है और जब मंजिल मिल जाती है तो मार्ग स्वमेव छूट जाता है। किसान खेती करता है, बीज बोता है, फसल तैयार होती है जब तक फसल का दाना पक नहीं जाता तक तक उस फसल की रक्षा करता है और जब दाना पक जाता है तो उसके दाने को निकालकर शेष अवशेष (घास, भूसा) को अलग कर देता है, उसी प्रकार व्यवहारनय और निश्चयनय को समझना चाहिए।

जब तक आत्मकल्याण नहीं होता अर्थात् निश्चयनय की प्राप्ति नहीं होती तब तक व्यवहारनय को संभालना पड़ता है।

अतः व्यवहारनय सर्वथा मिथ्या नहीं है, सत्यार्थ भी है यह वह स्यात् मिथ्या भी है तथा स्यात् सत्यार्थ भी है, कुछ हेय भी है कुछ उपादेय भी है। निश्चयनय की प्राप्ति का कारण होने से उपादेय है और निश्चयनय की प्राप्ति हो जाने पर हेय है।

शुद्ध निश्चयनय की दृष्टि से न कोई पूज्य है न कोई पूजक है, अशुद्ध पूजक है, अशुद्ध निश्चयनय की दृष्टि से निजात्मा पूज्य है और हम पूजक हैं। व्यवहारनय की दृष्टि से पंचपरमेष्ठी पूज्य हैं और हम पूजक हैं।

अतः व्यवहारनय स्यात्मिथ्या भी है और स्यात् सत्यार्थ भी है।

चलो देखें यात्रा

सिद्ध भूमि तारंगा

महत्त्व एवं दर्शनः कोटि शिला एवं सिद्ध शिला (दो छोटी पहाड़ियों पर) के अलावा क्षेत्र पर 18 मंदिर हैं। तारंगा दिगम्बरों एवं श्वेताम्बरों दोनों के लिए प्रमुख तीर्थ क्षेत्र है।

दिगम्बर धर्मशाला एवं मंदिर कॉम्पलेक्स में आदिनाथ एवं संभवनाथ (मूलनायक) भगवान तथा एक ऊँचे फ्लेट फार्म पर भगवान बाहुबली की मूर्ति स्थापित की गई है। प्राचीन धर्मशाला एवं मंदिर में काफी जीर्णोद्धार हुआ है। नवीन भोजनशाला का निर्माण हो चुका है।

मार्गदर्शनः आबू से आने वाले अम्बाजी, कुंभारिया, दांवा होकर तारंगा तथा मेहसाणा से उमटा-विसनगर, खेराल होकर तथा उदयपुर से शामला जी भिलौडा पार्श्वनाथ- ईडर खेरालू (90) होकर तारंगा पहुंच सकते हैं। प्राचीन सिद्धक्षेत्र कोठी के 2किमी. पहले विद्यासागर तपोवन क्षेत्रआता है। अहमदाबाद- 150, आबू रोड-64, देरोल -65, खेरालू 25, सतलासणा-10, उदयपुर -225 किमी.।

नाम एवं पता- श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र तारंगा जी फोनः 02761-295273, प्रबंधक- श्री रजनी भाई नत्थाला दोषी- 094299-87209, सम्पर्कः श्री स्नेहलभाई बी.शाह मो. 9426015140।

सुविधायें : 18 नॉन ए.सी., 10 ए.सी., 40 कॉमन कमरे एवं हॉल 2 भोजन सशुल्क (भोजनशाला में) धर्मशाला में नवीनीकरण हो रहा है।

विशेषः कोटिशिला- मुख्य मंदिरों के पिछले हिस्से में पहाड़ी पर है। दर्शनों में 2 से 3 घंटे तथा मंदिर के सम्मुख सिद्धशिला (छोटी पहाड़ी) के दर्शनों में 1 से 2 घंटे लगते हैं।

आगम दर्शन

सूत्र पाहुड की पठनीय चार गाथाएँ

दिगम्बरत्व मनुष्य का निज रूप है धर्म वस्तु का स्वभाव है सचमुच दिगम्बरत्व परम उपादेय धर्म हैं। सदाचार के आधार पर दिगम्बरत्व टिका हुआ है दिगम्बरत्व पूर्ण सत्य धर्म है। अतः कुंदकुदाचार्य ने अपने सूत्र पाहुड ग्रंथ में गाथा 10 में कहा है।

अचेलक अर्थात्- नग्न रूप और हाथों में भोजन पात्र बनाने का उपदेश जिनेन्द्र ने दिया है। यही मोक्ष/धर्म का सच्चा मार्ग है इसके सिवाय कोई मार्ग मोक्षमार्ग नही है शेष सभी वस्त्रवाद और पात्रवाद अमार्ग हैं।

णिच्चेलपाणिपत्तं उवइट्ठं परमजिणवरिंदेहिं।
एक्को हि मोक्खमग्गो सेसा य अमग्गया सव्वे।। 10 सूत्रपाहुड

इस सत्य मार्ग से भटककर यदि कोई जरा भी विचलित होकर बाल बराबर थोड़े से भी परिग्रह में पड़ता है तो उसका ठिकाना नहीं अतः आचार्य श्री कहते है।

बालग्गकोडिमित्तं परिगिहगहणं ण होइ साहूणं।
भुंजेइ पाणिपत्ते दिण्णण्णं इक्कठाणम्मि।।17।। सूत्रपाहुड

सच्चे साधु के बाल के अग्रभाग नोक के बराबर भी परिग्रह का ग्रहण नहीं होता है। आहार के लिए काष्ठ धातु का कोई बर्तन नहीं रखता- हाथ ही उसके भोजन पात्र हैं दिन में एक ही बार एक स्थान पर श्रावक द्वारा दिया भोजन करते जबकि श्वेताम्बर साधु दिन में अनेक बार भोजन कर मुनि यथाजात रूप है जैसा बालक जन्म से नग्न रूप होता है वैसा ही नग्न रूप दिगम्बर मुद्रा का धारक है। वह अपने हाथ में तिल तुस मात्र भी कुछ ग्रहण नहीं करता। यदि वह कुछ भी ग्रहण करता है तो वह निगोद जाता हैं।

जहजायरूवसरिसो तिलतुसमित्तं ण गिण्हदि हत्तेसु।
जह लेइ अप्पबहुयं तत्तो पुण जाइ णिग्गोदं।। 18।। सूत्र पाहुड

जिनशासन में कहा गया है कि वस्त्रधारी मनुष्य साधक मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सकते हैं तीर्थंकर भी गृहस्थ दशा में मुक्ति को नहीं पायें हैं जब साधक मुनि बनकर दिगम्बर वेष धारण करते हैं तभी मोक्ष पाते हैं। अतः नग्नत्व ही मोक्षमार्ग बाकी सब उन्मार्ग है।

णवि सिज्झइ वत्थधरो जिणसासणे जइ वि होई तित्थयरो।
णग्गो विमोक्खमग्गो सेसा उम्मग्गया सव्वे।।23।। सूत्र पाहुड

अतः धर्म के इस नियम से वैज्ञानिक भी सहमत हैं। सभी साधकों ने दिगम्बर साधना पद्धति को श्रेष्ठ माना है धर्म और दिगम्बरत्व का संबंध समान है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
दिसम्बर 2024

ये अवसर बार बार नहीं आये

प्रथम-

जिन दीक्षा का प्यारा अवसर
भवि जन ही पाते
विद्यासागर गुरु को लखकर
मन में हर्षाते
पुण्य कमाने का यह अवसर
बार बार नहीं आये

श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

द्वितीय-

शिरपुर के हथकरघा में देखा एक अजूबा
मुनि दीक्षा क्षुल्लक दीक्षा लेकर
राग द्वेष मन ऊबा
युवा जनों की टोली आई वे गीत वैरागी गाये
शुभ जिन दीक्षा का ये अवसर बार बार
नहीं आये

आयुषी जैन, गंजबासोदा

तृतीय-

अंतिम दीक्षा जिस साधक ने गुरु हाथ से
लीहो
भाग्यवान वह कितना बड़ा है जिसे दीक्षा दी है।
नर नारी सब सदा सहारे शरणा गुरु पद पाये
भव दुख तरने का ये अवसर बार बार नहीं आये

श्रीमती पल्लवी जैन, सागर

वर्ग पहेली क्र. 301
नवम्बर 2024 के विजेता

प्रथम : .ब्र. राजेश जैन, टड़ा
द्वितीय : इन्द्रा जैन, इंदौर
तृतीय : आकांक्षा जैन, सावरमति

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ द्द् अ ढ् ण् आ अ ल् अ र् ष् द्द
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :
अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

कोउ न काहू सुख दुख कर दाता

सुखं वा यदि वा दुख दत्ते कः कस्य संस्तृतो।
मित्रं वा यदि वामित्रं स्वकृतं कर्म तत्वत्र ।।

संसार में कौन किसके लिए सुख देता है ? अथवा कौन किसके लिए दुःख देता है ? और कौन किसका मित्र है अथवा कौन किसका शत्रु है ? यथार्थ में अपना किया हुआ कार्य ही सुख अथवा दुःख देता है।

सुप्तमात्रमपशस्त्रमालतं मुक्त मानससकृतं पलायतिम् ।
प्रत्यवाययुतमहुनां शिशु हमन्ति शचुमपि नो यशोधनांः ।।

यशरूपी धन को धारण करने वाले शुरवीर ऐसे शत्रु को भी नहीं मारते जो सो रहा हो, शस्त्ररहित हो, नम्रीभूत हो, मानरहित हो बार बार पीठ दिखाकर भाग रहा हो अनेक विघ्नों से युक्त हो, स्त्री हो अथवा बालक हो।

संपछन्न करिकिर्णचञ्वला संगताः प्रियवियोग-दुःखदाः ।
जीवित मरण दुःखनीरसं मोक्षमक्षयमतोऽर्जयेद बुधः ।।

सम्पत्ति हाथी के कान के समान चंचल है। संयोग प्रियजनों के वियोग से दुःख देने वाले है और जीवन मरण के दुःख से नीरस है। एक मोक्ष ही अविनाशी है अतः विद्वत्जनों को उसे भी प्राप्त करना चाहिए।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–
1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

केरियर

इंजीनियरिंग में श्रेष्ठ अवसर

इंजीनियरिंग विशेषता का एक बड़ा क्षेत्र है जो तय करता है कि इंजीनियर को आगे क्या करना है। सामान्यतया एक इंजीनियर विभिन्न प्रकार के उत्पादों और प्रगति में प्रणालियों का मूल्यांकन, विकास, निरीक्षण, परीक्षण, संशोधन, स्थापना और रखरखाव करता है। इंजीनियरिंग शिक्षा का एक ऐसा क्षेत्र है जहां मशीनों को बनाने, डिजाइन करने और बनाए रखने के लिए तकनीकी मस्तिष्क का इस्तेमाल किया जाता है।

कोर्सेस

1. केमिकल इंजीनियरिंग
2. सिविल इंजीनियरिंग
3. मेकेनिकल इंजीनियरिंग
4. स्वचालन और रोबोटिक्स
5. एयरोस्पेस इंजीनियरिंग
6. बायोमेडिकल इंजीनियरिंग
7. सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग
8. इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स
9. यांत्रिकी अभियता
10. पेट्रोलियम इंजीनियरिंग
11. एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग
12. डाटा साइंस एंड मशीन लर्निंग

अवधि

1. डिप्लोमा-3 साल,
2. डिग्री कोर्स- 4 साल

फीस

27000 रुपये से 9 लाख रुपये के बीच

नौकरी

1. मेकेनिकल इंजीनियर
2. इन्हॉरमेट्रल इंजीनियर
3. बायोमेडिकल इंजीनियर
4. सिविल इंजीनियर
5. केमिकल इंजीनियर
6. एरोनॉटिकल इंजीनियर

वेतन– 25000 से लेकर 10 लाख तक

इस्टीट्यूटः इंडियन इस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी तथा प्राइवेट इंजिनियरिंग कॉलेज भी हर जगह है। न्यु दिल्ली, मुंबई, कानपुर मद्रास

दुनिया भर की बातें

नवम्बर 2024

■ 1 नवम्बर

- कानपुरः आग लगने से संजय दासानी एवं उनकी पत्नी कनिका दासानी की मृत्यु हुई।

- रुस- यूक्रेन युद्ध में यूक्रेन ने उत्तर कोरिया के 40 सैनिक मार गिराये।

- ई.ए.सी के अध्यक्ष विवेक देबराय का निधन हुआ वे 69 वर्ष के थे।

■ 2 नवम्बर

- भारतीय सेना ने डेमनोक पर गश्त शुरु की।

- श्रीनगरः आतंकी हमले के जबाव में 3 आतंकी ढेर हुए।

- मथुराः गौरी गोपाल आश्रम में गरम खिचड़ी गिरने से 10 श्रद्धालु झुलसे।

■ 3 नवम्बर

- श्रीनगरः सी.एम. हाउस से 600 मीटर दूर आतंकी हमले में 12 लोग घायल हुए।

- केदारनाथ के कपाट बंद हुए इस साल 163 श्रद्धालुओं ने दर्शन किए।

- आर्थिक तंगी के चलते फिल्म निर्माता गुरुप्रसाद ने आत्म हत्या की।

■ 4 नवम्बर

- अल्मोड़ा (उत्तराखंड) 1 बस 150 मीटर खाई में गिरने से 36 यात्री मृत हुए तथा 24 घायल हुए।

- आगराः एयर फोर्स का मिग एफ लडाकू विमान क्रेश हुआ पायलट बचा।

- कनाडा के ब्रेम्टन में हिन्दूं मंदिर पर खालिस्तानी समर्थकों ने हमला किया।

■ 5 नवम्बर

- आनंद (गुजरात) बुलेट ट्रेन का निर्माणाधीन पुल गिरा इससे 2 मजदूरों की मौत हुई।

- दिल्ली पुरी चलने वाली नंदन कानन एक्सप्रेस पर ओडिशा में चरम्पा रेलवे स्टेशन के पास फायरिंग हुई।

- उ.प्र. के मदरसा एक्ट को सुप्रीम कोर्ट ने वैध घोषित किया।

■ 6 नवम्बर

- जे.के. विधानसभा ने 370 बहाली का प्रस्ताव पास किया भाजपा का प्रस्ताव पर विरोध हंगामा हुआ।

- डोनाल्ड ट्रम्प ने अमेरिका के राष्ट्रपति का चुनाव जीता।

- छठ गीत गायिका शारदा सिन्हा का निधन हुआ वे 72 वर्ष की थी एवं पद्मश्री पद्मभूषण सम्मान से नवाजी गई।

■ 7 नवम्बर

- 370 को लेकर कश्मीर विधानसभा में हथापाई हुई बी.जे.पी के 3 विधायक घायल हुए।

- जर्मनी के वित्तमंत्री क्रिश्चियन लिंडनर को चांसलर ओल्फा शोल्ज ने बर्खास्त किया।

- म.प्र. के पूर्वमंत्री दीपक जोशी पुनः भाजपा में शामिल हुए।

■ 8 नवम्बर

- सोपरा में सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में 3 आतंकी ढ़ेर किये।

- बीजापुर (छत्तीसगढ़) सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में दो नक्सली मारे गये।

- रूस के राष्ट्रपति बाल्दिमीर पुतिन ने कहा कि भारत को वैश्विक महाशक्ति की सूची में शामिल करना जरूरी है।

■ 9 नवम्बर

- पाकिस्तान के बलूच प्रांत की कंवेटा रेलवे स्टेशन पर आत्मघाती विस्फोट होने से 25 लोग मरे 46 घायल हुए।

- बेरुतः लेबनान में डीजल टैंक में आग लगने से सैकड़ी कारें जली 4 लोग घायल हुए।

- भारतवंशी संगीतकार रिकी केज एवं अनुराधा शंकर को ग्रैमी अवार्ड के लिए नामित किया गया।

■ 10 नवम्बर

- किश्तवाड (जे.के.) घाटी मे मुठभेड में 3 आतंकी ढेर हुए एक जे.सी.ओ राकेश कुमार शहीद हुए।

- खालिस्तानी आतंकी अर्शदीप डल्ला को कनाडा में हिरासत में लिया गया।

- ढाकाः बांग्लादेश में शेख हसीन के समर्थक सरकार के विरोध में सड़क पर उतरे सेना ने हिरासत में लिया।

■ 11 नवम्बर

- मुख्य न्यायाधीश पद की शपथ संजीव खन्ना ने ली वे सुप्रीम कोर्ट 51वें मुख्य न्यायाधीश बने।

- मणिपुर में कुकी 11 आतंकवादी मारे गये सी.आर. पी. एफ के कैम्प पर हमला हुआ 5 लोग लापता हुए।

- जापान की संसद ने शिगेरुइ शिवा को दूसरी बार प्रधानमंत्री चुना 465 सदस्यीय सदन में आप 160 मतों से जीते।

■ 12 नवम्बर

- झुहाई (चीन) एक 62 वर्ष के बुजुर्ग ने भीड़ भरे इलाके में कार घुसाई 35 लोगों की मौत हुई 43 घायल हुए।

- प्रयागराजः लोक सेवा आयोग कार्यालय के सामने 20000 छात्रों ने प्रदर्शन किया।

- कश्मीर और हिमाचल में पहली बर्फबारी हुई।

■ 13 नवम्बर

- विवेक रामास्वामी और एलन मस्क को डिपार्टमेंट ऑफ गर्वमेंट एफिशिएन्सी का प्रमुख ट्रंप ने बनाया।

- देश के 10 राज्यों की 31 विधानसभा सीटों एवं 1 लोकसभा सीट पर उपचुनाव हेतु मतदान हुआ कई राज्यों में बवाल हुआ।

- न्यायमूर्ति कैलाश चाँदीवाल ने साक्षात्कार में कहा कि पूर्व गृहमंत्री अनिल देशमुख को क्लीन चिट नहीं दी।

■ 14 नवम्बर

- बेंगलुरुः कर्नाटक हाईकोर्ट ने एस.सी-एस.टी एक्ट में दोषी 99 लोगों को एक साथ जमानत दी।

-अमेरिका के भावी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने तुलसी गबार्ड को नेशनल इंटेलीजेंस का निदेशक चुना।

- दिल्लीः प्रदूषण से हालात बिगड़े धुंध में 300 विमान उलझे।

■15 नवम्बर

- ए.टी.एस ने 700 किलो मादक

पदार्थ जब्त किया 8 ईरानी पकड़े।

- ढाकाः कट्टरपंथियों ने इस्कॉन पर बेन करने की माँग की हिफाजत ए इस्लाम ने यह माँग की।

- संभाजी नगरः शराब फैक्ट्री एम.आई.डी.सी में विस्फोट होने से 4 लोगों की मौत हुई, 3 घायल हुए 4 हजार क्विंटल मक्का मजदूरों पर गिरी।

■ 16 नवम्बर

- इंफाल- 2 मंत्री एवं 3 विधायक के घर पर हमला हुआ।

- सागर (म.प्र.) जिले के गिरवर के स्कूल मैदान को कब्रिस्तान में बदलने की तैयारी पर कलेक्टर ने एक्शन किया।

- अहमदाबादः बोपल इलाके में एक बहुमंजिला इमारत में आग लगने से एक बुजुर्ग महिला मृत हुई। 22 लोग घायल हुए।

■ 17 नवम्बर

- दिल्लीः परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने पद पार्टी से इस्तीफा दिया केजरीवाल पर जहर उगला।

- तेल अबीवः प्रधानमंत्री नेतन्याहू के आंगन में गिरा गोला यह 1 महीने में दूसरा हमला है।

- छत्तीसगढ़ में 2 बड़े नक्सली नेता रंजीत और संतोष मुठभेड़ में मारे गये।

■ 18 नवम्बर

- इजरायल ने लेबनान पर बड़ा हमला बोला 11 लोगों की मौत हुई 48 घायल हुए।

- हिरीनी अमर सूर्या श्री लंका की प्रधानमंत्री बनाई गई।

- देश में ठंड के साथ कोहरे से 11 ट्रेने 6 फ्लाइट लेट हुई।

■ 19 नवम्बर

- लोकसेवा आयोग के पूर्व प्रमुख सोनवानी एवं श्रवण कुमार गोयल को भर्ती गडबड़ी के आरोप में सी.बी. आई ने गिरफ्तार किया।

- जयपुरः एयर इंडिया के पायलट विमान छोड़कर चले गये यात्री 9 घंटे विमान में फँसे रहे।

- दिल्लीः महानगर एयर क्वालिटी 494 तक पहुंचा सभी स्कूल ऑनलाईन हुए।

■ 20 नवम्बर

- लातेहर (झारखंड): मतदान से कुछ घंटे पहले नक्सलियों ने 5ट्रक जलाये।

-हैदराबादः सिद्धकीनगर में एक 5 मंजिला इमारत झुकने से हड़कंप मची।

- उत्तरप्रदेश के पूर्व मंत्री गायत्री प्रसाद प्रजापति की 4 बेनामी संपत्तियों को आयकर विभाग ने जब्त किया।

■ 21 नवम्बर

- जबलपुरः जन शताब्दी एक्सप्रेस के ए.सी चेयरकार में सांप निकला।

- भारत के उद्योग गौतम अदानी 2.236 करोड़ रिश्वत मामले में यू.एस. में फंसे।

- पेशाबरः पाकिस्तान केरबैबर 420 तनखबा में आतंकियों ने तीन यात्री बस पर हमला किया 50 लोग मरे गये।

■ 22 नवम्बर

- सुकामा (छत्तीसगढ़): सुरक्षा बलों ने 3 महिलाओं सहित 10 नक्सलियों को मार गिराया।

- जार्जिया (अमेरिका) बर्थ डे पार्टी में गलती से बंदूक चलने पर आर्यन रेड्डी की मौत हुई।

■ 23 नवम्बर

- महाराष्ट्र के विधानसभा चुनाव परिणाम आये महायुति ने 233 सीटें जीती महाअधाडी ने 47 सीटें जीती।

- पेशावरः पाक केबैबर पख्तूनख्या प्रांत में कबायलि के बीच हिंसा में 37 लोग मारे गये 30 से अधिक घायल हुए।

- हिमाचल में पारा माइनस 8 डिग्री पहुँचा

■ 24 नवम्बर

- संभल (उ.प्र.): मस्जिद सर्वे के दौरान भीड ने हमला किया इस हिंसा में 3 लोग मारे गये डिप्टी कलेक्टर एस.पी घायल हुए।

- विराट कोहली ने टेस्ट केरियर का 30वाँ शतक जड़ा।

- लापता इजराइली धर्मगुरु रब्बू जवी कोशन की हत्या हुई।

■ 25 नवम्बर

- दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यक्ष रौनक खत्री (एन.एस.यू) के बने उपाध्यक्ष भानुप्रताप (ए.वी.पी) के बने।

- भारत ने क्रिकेट टेस्ट में आस्ट्रेलिया को 295 रन से हराया।

- अंडमान में 600 किलो ड्रग्स पकड़ा गया 6 लोग गिरफ्तार हुए।

■ 26 नवम्बर

- महाराष्ट्र की डी.जी.पी रश्मि शुक्ला ने कार्यभार संभाला। चुनाव आयोग ने इन्हें हटाया था।

- पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के समर्थकों ने इस्लामाबाद में सत्ता के केन्द्र डी चौक पर कब्जा किया हिंसा में चार जवान शहीद हुए।

- बाग्लादेश में हिन्दू संत चिन्मय प्रभू की जमानत अर्जी खारिजकर उन्हें जेल भेजा गया।

■ 27 नवम्बर

- इजरायल हिज्बुल्लाह के साथ युद्ध समाप्त करने सहमत हुआ।

- कानपुरः जाजमऊ थाने के अंतर्गत एक बंद मदरसे में बच्चे का कंकाल मिला।

- इस्लामाबादः पाक पूर्व पी.एम. की पत्नी बुशरा बीबी फिडनैप हुई। पी.टी आई ने आंदोलन वापिस लिया।

■ 28 नवम्बर

- राँची हेमंत सोरेन ने चौथी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली।

- अदाणी संभल और मणिपुर मुद्दे में विपक्ष ने संसद नहीं चलने दी।

- भारतीय नौसेना के-4 बैलिस्टिक मिसाइल का सफल परीक्षण किया।

■ 29 नवम्बर

- गोंदियाः कोहमारा मार्ग पर बस दुर्घटना में 11 लोग मरे 38 घायल हुए।

- बिरसामुंडा के परपोते मंगल मुंडा का निधन हुआ वे 45 साल के थे।

- मलेशिया में भारी वर्षा व बाड़ से 10 साल का रिकार्ड तोड़ा 3 लोग मरे। 84000 लोग बेघर हुए।

■ 30 नवम्बर

- चेन्नईः फेंगल तूफान ने तमिलनाडू में तबाही मचाई।

- मलप्पुरमः नाबालिग के साथ बलात्कार करने वाले पिता को 141 साल की सजा सुनाई।

- कश्मीर की युवती फतीमा अर्स प्रेम विवाह के लिए एल.ओ.सी पार कर पाकिस्तान गयी।

इसे भी जानिये

सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश

01	हरिलाल जेकिसनदास कनिया	1950-1951
02	बिजन कुमार मुखरेजा	1951-1954
03	भुवनेश्वर प्रसाद सिन्हा	1959-1964
04	सुधी रंजन दास	1956-1959
05	पी बी गजेन्द्र गडकर	1964-1967
06	अमल कुमार सरकार	1967-1971
07	शिवराव श्रीधर पाटील	1971
08	ए.एन. राय	1971-1977
09	मिर्झा हमीबुल्लाह बेग	1977-1978
10	वाय व्ही चंद्रचुड	1978-1985
11	पी एन भवगती	1985-1986
12	आर.एस. पाठक	1986-1989
13	ई.एस वेंकटरामिह	1989-1990
14	एस मुखर्जी	1990-1991
15	जे एस वर्मा	1991-1992
16	एम एन वेंकयचालीह	1992-1994
17	एल एम शर्मा	1994
18	एम एम पुल्छी	1994-1997
19	जे एस वर्मा	1997-1998
20	के जी बालकृष्णन	2006-2010
21	एस एच कापडिया	2010-2012
22	अल्तमस कबीर	2012-2013
23	पी सदासिवय	2013-2014
24	आर एम लोढा	2014-2015
25	एच एल दत्तु	2015-2016
26	टी एस ठाकुर	2016-2017
27	जे. एस सेहर	2017
28	दीपक मिश्रा	2017-2018
29	रंजन गोगोई	2018-2019
30	एस ए बोबडे	2019-2021
31	एन व्ही रामना	2021-2022
32	उदय उमेश ललीत	2022
33	धनंजय वाय चंद्रचुड	2022

दिशा बोध

संयम

1. आत्म संयम से स्वर्ग प्राप्त होता है, किन्तु असंयत, इन्द्रिय-लिप्सा अपार अंधकारपूर्ण नरक के लिये खुला हुआ राजपथ है।
2. आत्म-संयम की रक्षा अपने खजाने के समान ही करो, क्योंकि उससे बढ़कर इस जीवन में और कोई निधि नहीं है।
3. जो पुरुष समझ-बूझकर अपनी इच्छाओं का दमन करता है, उसे सभी सुखद वरदान प्राप्त होंगे।
4. जिसने अपनी समस्त इच्छाओं को जीत लिया है और जो अपने कर्त्तव्य से पराङ्गमुख नहीं होता; वह ऊँचे पहाड़ से भी अधिक उन्नत प्रतीत होता है।
5. संयम सभी को शोभा देता है; पर यह उनको अधिक शोभता है, जिनके ऊपर भाग्यलक्ष्मी मुस्कुराती है।
6. ज़ो मनुष्य अपनी इन्द्रियों को उसी तरह अपने मन में खींचकर रखता है, जिस तरह कछुआ अपने हाथ-पाँव को भीतर छिपा लेता है; उसने अपने समस्त आगामी जन्मों के लिये खजाना जमा कर रखा है।
7. और किसी को चाहे तुम मत रोको, पर अपनी जिह्वा को अवश्य लगाम लगाओ; क्योंकि बेलगाम की जिह्वा बहुत दुःख देती है।
8. यदि तुम्हारे एक शब्द से भी किसी को कष्ट पहुँचता है, तो तुम अपनी सब भलाई नष्ट समझो।
9. आग का जला हुआ तो समय पाकर अच्छा हो जाता है, परन्तु वचन का घाव सदा हरा बना रहता है।
10. उस मनुष्य को देखो जिसने विद्या और बुद्धि प्राप्त कर ली है, जिसका मन शान्त और पूर्णतः वश में है; धार्मिकता तथा अन्य सब प्रकार की भलाईयाँ उसके घर उसका दर्शन करने के लिये आती है।

गंधर्वपुरी का पुरा वैभव

❊ डॉ. महेन्द्रकुमार जैन (मनुज) इंदौर ❊

देवास जिला मध्यप्रदेश की शापित नगरी गंधर्वपुरी में प्रभूत पुरासंपदा है। यहाँ के मकानों की नींव खोदते समय प्राचीन प्रतिमाओं के अवशेष प्रायः प्राप्त हुए हैं, सिलसिला अनवरत गतिमान है। यहाँ के मकानों की दीवारों, दासों, चबूतरों आदि में पुरावशेषों के शिलाखण्ड लगे हुए हैं।

गन्धर्वपुरी के संग्रहालय परिसर में रखीं सैकड़ों पुराप्रतिमाओं में छह चतुर्विंशतिका प्रतिमाएँ हैं। प्रत्येक में एक प्रमुख तीर्थंकर कायोत्सर्गस्थ है और शेष लघु तीर्थंकर परिकर में हैं।

प्रथम चतुर्विंशतिका- यह प्रतिमा बहुत मनोज्ञ है। इसका परिकर बहुत कलात्मक है। प्रतिमा का पादपीठ मिट्टी में धंसे होने से उसमें लांछन या शासन यक्ष-यक्षी अदृष्ट हैं, इस कारण मूलनायक किस तीर्थंकर की प्रतिमा है, यह ज्ञात नहीं होता है। परिकर में 23 लघु जिन हैं। नीचे से क्रम से एक के ऊपर एक, तीन कायोत्सर्ग, उनके ऊपर के भाग में तीन त्रिक अर्थात् मध्य में पद्मासन व दायें-बायें कायोत्सर्ग, इन तीन के त्रिक तीन हैं। इसी तरह परिकर में दूसरी ओर भी प्रतिमाएँ हैं, किन्तु सबसे नीचे की लघु जिनप्रतिमा का केवल फणामण्डल ही दिखाई देता है, शेष भग्न है। वह पार्श्वनाथ बिम्ब था या शासन देवी का, कहा नहीं जा सकता। यदि वह पार्श्वनाथ बिम्ब था तब परिगणित कर चौबीसी पूर्ण होती है।

इस प्रतिमा में मूलनायक के चरणों में बायीं ओर पुरुष भक्त अंजलिबद्ध वज्रासन में बैठा है और दायें तरफ महिला भक्त हैं। चामरधारी अपेक्षाकृत बड़े और पूर्ण आभूषण भूषित कलात्मक हैं। मूलनायक कायोत्सर्ग जिनकी हथेलियों में कलात्मक चक्र निर्मित हैं, वक्ष पर चार कलिका वाला श्रीवत्स है, प्रभावल स्पष्ट और कुंचित केश व उष्णीस हैं। सुन्दर छत्रत्रय निर्मित हैं। परिकर के वितान में चार तरह के देव उत्कीर्णित हैं। शीश के दोनों ओर गगनचर विद्याधर युगल हैं, आगे पुरुष, उसके पीछे उसकी स्त्री है। उनके ऊपर के भाग में एक-एक यष्टिधारक देव हैं, उनसे ऊपर दोनों और पुष्पवर्षक देव और छत्रत्रय के ऊपर मध्य में मृदंगवादक हैं।

द्वितीय चतुर्विंशतिका- इसमें प्रथम चतुर्विंशतिका से थोड़ी सी भिन्नता है। मूलनायक कायोत्सर्ग प्रतिमा में कुछ विशेष भिन्नता नहीं, करतल में चक्र, श्रीवत्स, प्रभावल, कुंचित केश, उष्णीष, छत्रत्रय समान हैं। किन्तु परिकर के संयोजन में भिन्नता है। पादमूल में आराधक युगल और चंवरधारी समान हैं, किन्तु चंवरधारियों के लगभग बराबर उनके पार्श्वों में एक-एक कायोत्सर्ग जिन प्रतिमा है, उनसे ऊपर माल्यधारी देव युगल हैं, पुनः वितान में एक-एक फणाटोपित पद्मासनस्थ जिन प्रतिमा और उनके बाहरी भाग में एक-एक कायोत्सर्ग जिन

संयोजित हैं। अतः उड्डीयमान पुष्पवर्षक देव और ढोलक वादकदेव हैं।

तृतीय चतुर्विंशतिका- इसके परिकर का संयोजन लगभग द्वितीय के समान है। हथेलियों में चक्र नहीं है। वितान का भाग भग्न है, शेष बचे प्रभावल से ज्ञात होता है कि यह प्रथम व द्वितीय प्रतिमा के समान ही हैं। परिकर में लघुनिज की संयोजना में द्वितीय चतुर्विंशतिका से भिन्नता केवल यह है कि चंवरधारियों के पार्श्वों में एक-एक कायोत्सर्ग तीर्थंकर उत्कीर्णित हैं और इसमें एक के ऊपर एक, दो-दो कायोत्सर्ग तीर्थंकर दर्शाये गये हैं।

चतुर्थ चतुर्विंशतिका- इस चतुर्विंशतिका के मूलनायक की हथेलियों में भी चक्र का अभाव है और प्रभावल में भिन्नता है। तीन छत्र भिन्न व कलात्मक हैं। परिकर में मूलनायक के पादमूल में भक्त युगल का अभाव है। दोनों ओर नीचे से ऊपर की ओर बढ़ते क्रम में तीन कायोत्सर्ग और तीन लघु पद्मासन जिन प्रतिमाएं हैं। तीसरी पद्मासन प्रतिमा के बाह्य पार्श्व में एक-एक कायोत्सर्ग प्रतिमा हैं, जिनके सिर पर सर्प के फण दर्शाये गये हैं, जिससे ये तीर्थंकर पार्श्वनाथ या सुपार्श्वनाथ की द्योतक हैं। माल्यधारी विद्याधर युगल तो पूर्व की तरह हैं। किन्तु मृदंगवादक के दोनों ओर एक-एक स्त्री या पुरुष देव दर्शित हैं। वितान में दोनों ओर दो-दो कायोत्सर्ग लघु जिन हैं और उपरिम भाग में पंक्तिबद्ध पाँच पद्मासन लघु जिन विराजमान दर्शाये गये हैं। इस तरह इस प्रतिमाफलक के परिकर में तेईस तीर्थंकर स्पष्ट हैं और चौबीसवें मूलनायक से चौबीसी पूर्ण होती है।

पंचम चतुर्विंशतिका- इस प्रतिमा का सिर सहित वितान भाग, घुटनों से नीचे का भाग और हाथ खण्डित हैं। तथापि अवशेष भाग व शेष परिकर से ज्ञात होता है कि यह प्रतिमा प्रथम चतुर्विंशतिका के समान रही है। भुजाएँ भग्न हैं, किन्तु हथेलियों में बनाये गये चक्रों के भाव स्पष्ट हैं। चंवरधारियों के कटि से ऊपर के भाग देखे जा सकते हैं। परिकर में बने लघु निज प्रतिमांकनों में से अठारह अवशिष्ट हैं।

षष्ठ चतुर्विंशतिका- छठवीं चतुर्विंशतिका का केवल थोड़ा सा भाग उपलब्ध है। मुख्य प्रतिमा का बाम स्कंध और बाम भुजा का ऊर्ध्व भाग ही अवशेष है, किन्तु परिकर के छह लघुजिन भी साथ में विद्यमान हैं। ये दो त्रिक में हैं, मध्य में पद्मासन और उनके दोनों ओर कायोत्सर्ग जिन हैं। यह पूर्ण प्रतिमा प्रथम और द्वितीय प्रतिमा के समान रही होगी। इसका शेष भाग भी आस-पास की खुदाई में प्राप्त हो सकता है।

उक्त छहों प्रतिमाएँ बलुआ पाषाण में निर्मित हैं। इनका समय 10-11वीं शताब्दी अनुमानित किया गया है।

उक्त पाचों प्रतिमाएँ बलुआ पाषाण में निर्मित हैं। इनका समय 10-11वीं शताब्दी शताब्दी अनुमानित किया गया है।

पुण्य ही पुण्य-स्थिति का नियामक है

✻ डॉ. सुपार्श्व कुमार जैन ✻

अंग्रेजी में एक कहावत है- ड्रायमण्ड कट्स डायमण्ड। जिसे हिन्दी में कहा जाता है- लोहा लोहे को काटता है। इसी प्रकार जैनागम के परिप्रेक्ष्य में यह कहा जा सकता है कि पुण्य पुण्य को काटता है। अर्थात् अपने पैरों पर कुल्हाड़ी पटकने के समान ही पुण्य है। संसार वास घटाने के लिए संसार वास को स्थिति की घटाना आवश्यक है। पाप से तो संसार वास बढ़ता ही है, कम नहीं होता, पारिशेष न्याय से यह सिद्ध होती है कि पुण्य ही संसार वास की स्थिति का क्षय करता है और एक न एक मुक्ति दिन की प्राप्ति होती है।

उपर्युक्त संक्षेप कथन को थोड़ा विसतार से समझते हैं। बंध चतुर्विध है-स्थिति, अनुभाग, प्रकृति एवं प्रदेश बन्ध। स्थिति व अनुभाग बन्ध तो कषाय भाव से होता है तथा प्रकृति व प्रदेशबंध योग से ही होता है। समस्त शुभाशुभ क्रियायें कषाय मुक्त क्रियायें हैं जिससे स्थिति बन्ध होता है। बन्धापेक्षा पाप व पुण्य दोनों बराबर हैं और इन दोनों में जीव के शुभाशुभ भाव प्रधान हैं। पूजा, भक्ति, दान आदि शुभ भाव युक्त शुभ क्रिया ये पुण्य हैं और इसके विपरीत पाप हैं। पुण्य व पाप बन्ध में जीव के शुभाशुभ भाव ही प्रधान हैं। परमार्थ से पुण्य व पाप समान होते हुए भी इनमें अंतर हैं- (1) पाप सर्वथा बन्ध है, पुण्य कथंचित बन्ध है यही कारण है कि पाप-भाव (क्रियाओं) से पाप व पुण्य दोनों ही स्थिति बन्ध का उत्कर्षण होता है क्योंकि है तो ये कषाय ही और कषाय स्थिति बन्ध व संसार वृद्धि का मूल कारण है। परिणामों की तीव्रता व मन्दता स्थिति का निर्धारण करती है पाप क्रियायें व परिणाम औंधे (उल्टे) घड़े पर घड़ा रखने का समान है चाहे जितने घड़े रखे जाएँ, उल्टे ही रखें जायेंगे। इनमें उत्तरोत्तर कषाय बढ़ती है।(2) इसके विपरीत शुभ परिणाम व क्रियायें सीधे घड़े पर घड़ा रखने के समान है, चाहे जितने घड़े रखे जाएं, सीधे से रखे जायेंगे। इनसे कषाय उत्तरोत्तर घटती जायेगी और विशुद्धता उत्तरोत्तर बढ़ती जायेगी। इन पुण्य क्रियाओं से पाप व पुण्य दोनों की स्थिति का अपकर्षण होता है अर्थात पुण्य अपने पुण्य की ही स्थिति को घटाता है जिसमें संसार वास घटता जाता है। यदि ऐसा न हो तो संसार वास कैसे घटे और मोक्ष कैसे मिले? (3) अनुभाग अपकर्षित होता है इसी प्रकार पाप भाव व क्रियाओं से पापकर्मों का अनुभाग उत्कर्षित होता है। और पुण्यकर्मों का अनुभाग अपकर्षित होता है। यह ज्ञातव्य है कि तीव्र कषाय में अशुभभाव मन्द कषाय में शुभ भाव तथा कषायभाव से शुद्ध भाव होते हैं।

मन्द कषाय होने पर ही शुभभाव पूर्वक शुभ या पुण्य की क्रियाओं में प्रवृत्ति होती है और इन शुभ क्रियाओं से पाप व पुण्य दोनों कर्मों की स्थिति का अपकर्षण होता है। स्पष्ट है कि जब कषाय मन्दर से मन्दतर एवं मन्दतर से मदन्तर होती जाती है तब कर्मों की स्थिति स्वतः घटती जाती है अतः संसार वास भी घटता जाता है और ऐसा होते-होते जीव को एक न एक दिन मुक्ति की प्राप्ति हो जाती है। तीव्र व मंद पुरुषार्थ निर्णायक हैं। मन्द कषाय के कारण तीन शुभ आयु

बिना अन्य समस्त कर्म प्रवृत्तियों की स्थिति कम हो जाती है ऐसा जैन सिद्धांत के परमागम में केवली भगवान के कथन में आया है।

पुण्य भी दो प्रकार है- एक सम्यग्दृष्टि का पुण्यानुबन्धी पुण्य और दूसरा मिथ्या दृष्टि का पापानुबन्धी पुण्य। सम्यग्दृष्टि हेय दृष्टि से तथा अशुभ से बचने के लिए भगवान की भक्ति पूजा व्रतादि की क्रियाओं को करता है जो कर्मों की स्थिति घटाता हुआ परम्परा से मोक्ष को प्रदान करता है। अतः स्पष्ट है कि यदि मोक्ष प्राप्त करना हो तो निष्काम भाव से पुण्य क्रियाओं को करते रहना चाहिए। मिथ्यादृष्टि का पुण्य संसार में रोके रखने का ही काम करता है क्योंकि उसकी शुभ क्रियायें भी भोग कांक्षा से प्रेरित होती हैं। अतः विद्वज्जन ऐसे धर्म/पुण्य को पाप ही समझते हैं। आचार्य श्री विद्यासागर जी शब्दों में- पाप छोड़ पुण्य करोंगे तो क्या नही मरोगे। भले ही स्वर्ग मिलेगा पर संसार नहीं कटेगा। वास्तव में पुण्याकांक्षा भी पाप की तरह फिसलने वाले मार्ग जैसा है जो एक बार फिसला वह तेजी से नीचे की ओर फिसलता जाता है (अर्थात् निदानबंध में नरक पहुँच जाता है।)

सकाम या कांक्षा सहित क्रियायें बन्धनकारी और निष्काम या निष्कांक्षित क्रियायें अबन्धनकारी होती हैं। कषाय विहीन निष्काम क्रियाओं से बन्ध तो होता है पर स्थिति का नहीं केवल अनुभाग का होता है। संसार वास का कारण स्थिति है, अनुभाग नहीं। अतः निष्काक्षित भाव से की गई शुभक्रिया ही अपनी पुण्य की स्थिति का घात करने के कारण परम्परा से मोक्ष का कारण माना जाता है। अतः वास्तव में पुण्य सर्वथा हेय है यह सिद्धान्तः अमान्य है जो पुण्य को हेय मानते/कहते हों वे अरिहंत मत के विपरीत हैं। अत एव संसारी जनों को निष्कांक्षित भाव से शुभ (पुण्य) क्रियाओं को करते रहने की प्रेरणा देते रहना चाहिए जिससे वे पुण्य के सत्प्रकाश में सतत ऊपर-ऊपर उठते रहें और मोक्ष प्राप्त कर सकें।

सम्यग्दृष्टि की दृष्टि में शुभ क्रियायें भी (मन्द) कषाय युक्त होने के कारण श्रद्धा में हेय होती है जबकि मिथ्यादृष्टि उन्हें उपादेय व धर्म मानता है। दूसरों शब्दों में वह कषाय को उपादेय मानता है। मिथ्यादृष्टि की सभी क्रियायें, कषाय की तीव्रता होने के कारण, अशुभ ही मानी जाती हैं इससे उसे जो पुण्य बंध होता है वह अधिक स्थिति बंध लिए होता है इससे संसार वास बढ़ता है किन्तु उसका अनुभाग अपकर्षित होता है अर्थात् मिथ्यादृष्टि की प्रत्येक क्रिया किसी न किसकी रूप में भोगासक्ति से युक्त होती है अतः सत्ता में पड़े कर्मों की स्थिति का उत्कर्षण होता है, पुण्य कर्म पाप में संक्रमित होता है तथा अनुभाग घटता जाता है। उदाहरणार्थ मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंगी मुनि की समस्त क्रियायें कषाय युक्त होने के कारण अशुभ ही मानी गई हैं और उसे सिद्धांत में संयत भी नहीं कहा जाता। उसे पुण्य की उत्कर्ष स्थिति का बन्ध होता है नवमें गैवेयक तक चला जाता है, किन्तु संसार वास नहीं कटता। जबकि संयत देशविरत, अविरत सम्यकदृष्टि की शुभ क्रियायें कषाय रहित होने के कारण पुण्य पाप की अपकर्षित स्थिति का बंध करती है और उसी भव में या दो-तीन भव में अथवा छह-सात भव में मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

निष्कर्ष यह है कि कषाय युक्त (अशुभ) क्रियाओं से पाप व पुण्य दोनों की स्थिति का उत्कर्षण होता है क्योंकि भोगाकांक्षा युक्त सकाम कियाएं तीव्र कषाय युक्त होती हैं जिससे न्याय-अन्याय औचित्य-अनौचित्य विवेक-अववेक व सत्यासत्य को भूल जाता है कि जबकि निष्कांक्षित क्रियायें विवेकपूर्ण होती हैं और ऐसा व्यक्ति सम्यग्दृष्टि होता है क्योंकि वही ज्ञान और वैराग्य की शक्ति से युक्त होता है, भोगों में आसक्त नहीं होता। अनासक्त-भाव से भोगोपभोग होने पर भी वो सम्यग्दृष्टि के लिए निर्जरा के कारण बनते हैं। जिस प्रकार लोहा लोहे को काटता है, इसी प्रकार हम कह सकते हैं कि पुण्य ही पुण्य स्थिति को काटता है (कम करता है)

शुभः पुण्यस्याशुभ पापस्य शुभ से केवल पुण्य बन्ध ही होता है ऐसा नहीं बल्कि पाप भी बंधता है। हाँ पुण्यबंध शुभ से ही होगा ऐसा सुनिश्चित है। अब यदि कोई पुण्य बन्ध की चाहना लेकर पुण्य कियाएं करेगा तो उसे संसार भ्रमण ही करना पड़ेगा और यदि शुभ-भाव में न पहुँचने के कारण तथा अशुभ भावों से बचने के लिए अनाकांक्षा से हेय बुद्धि (श्रद्धा में) रखकर शुभ कार्य करेगा तो निःसंदेह उसका मोक्ष मार्ग प्रशस्त होगा क्योंकि पुण्य ही पुण्य-स्थिति का नियामक है। अस्तु।

कविता

हथकरघा कारोबार नहीं

संस्कार फीचर्स

श्रावक का परिवार अगर, धन सम्पत्ति से शून्य रहे
तो समझो उसका धर्मध्यान भी
आवश्यक से न्यून रहे
नारी शिक्षा संस्कार नहीं , अरू रोजगार का योग नहीं
तो श्रावक कैसे धर्म करें जब सद्गुरु का संयोग नहीं
यह चिंतन विद्या सागर का
सब भक्तों का उत्थान करें
अरू अति वाले पीढी में संकट मोचक सद्ज्ञान भरे
हथकरघा कारोबार नहीं अपराध मुक्ति का साधन है
यह सत्य अहिंसा करूणा का, मानवता का ही आंगन है
सीमाओं में जो नहीं बंधा सृजन जिसका विश्वास रहा
जयवंत संत विद्यासागर हम सबने गुरु प्रणाम कहा
निज अनुभव अंतर में ही पाया समय का सार
निकल पड़े जो शिवपथ योगी करने सब उद्धार

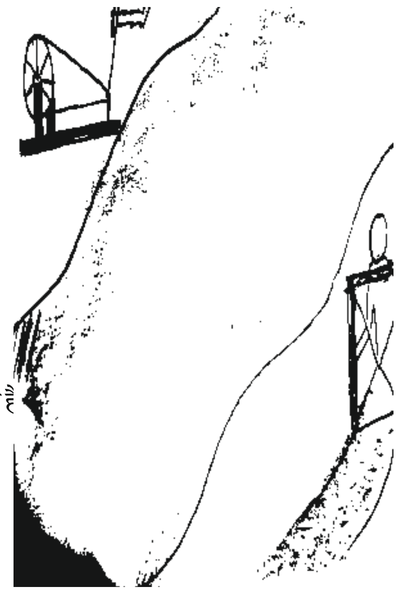

कहानी

सनकी राजा

लेखकः 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

वाराणसी कि तंग गलियों में राजा की हवेली थी राजेन्द्र गुप्ता को प्यार से सभी राजा बोलते थे। राजेन्द्र गुप्ता शिक्षित बिगडा हुआ युवक था। राजेन्द्र गुप्ता को विद्यार्थी जीवन से ही बहुत बड़ा कारोबारी बनने का सपना सता रहा था। राजेन्द्र गुप्ता ने सभी कारोबारी पर खूब अध्ययन किया था, लेकिन उसे ऐसा नहीं लगता था कि वह शराब कारोबार को छोड़कर किसी कारोबार में बड़ा मैदान पकड़ लेगा। जिंदगी के अरमान कई हुआ करते हैं लेकिन उन अरमानों में राजेन्द्र गुप्ता संतुलन नहीं बना पाया। शराब के कारोबार में खूब पैसे कमाने की तमन्ना पूरी होती ना देखकर राजेन्द्र ज्योतिषियों के चक्कर लगाने लगा था और वह सोचता था कि कोई ज्योतिषी उसे अच्छे गृह और वास्तु की विधि बता दे जिससे कि मैं बहुत बड़ा कारोबारी बन जाऊँ।

राजेन्द्र गुप्ता ने सबसे पहले मृत्युंजय तिवारी के घर अपनी दस्तक दी। मृत्युंजय तिवारी बनारस के नामी ग्रामी ज्योतिषी माने जाते थे। उनके दरबार में रोज मंगलवार को भारी भीड़ लग जाती थी। मटका सट्टा वाले तो रोज ही उनके दरवाजे पर माथा टेकते थे। राजेन्द्र गुप्ता की मृत्युंजय से मुलाकात सुरेन्द्र साहु ने कराई थी। सुरेन्द्र साहु तांत्रिक मांत्रिक के चक्करों में घूमता ही रहता था और वह भी नौकरी छोटी सी करता था परंतु बाते बनाने में और लोगों से पैसा ऐठने में सुरेन्द्र कम नहीं था। सुरेन्द्र की नजर नीतू पर थी नीतु राजेन्द्र गुप्ता की पत्नी थी। मृत्युंजय को यह मालुम था कि सुरेन्द्र नीतु पर डोरा डाले है पर नीतु सुरेन्द्र को थोड़ी सी भी घास नहीं डालती थी। इसलिए सुरेन्द्र ने अपना जाल बिछाया था और राजेन्द्र गुप्ता को मृत्युंजय के दरबार में लाकर छोड़ा था। मृत्युंजय सचमुच में अनजान था और वह सुरेन्द्र साहु

की साजिश को समझ नहीं पाया। सुरेन्द्र साहु ने राजेन्द्र गुप्ता को एक दिन मृत्युंजय से गुप्त बैठक करा दी। राजेन्द्र गुप्ता की गुप्त बैठक में मृत्युंजय ने कहा कि तुम अपनी पत्नी की जन्मकुंडली लेकर आओ फिर मैं बताऊंगा तुम्हारा कारोबार रूका क्यो है। राजेन्द्र गुप्ता अपनी पत्नी और खुद की जन्मकुंडली लेकर मृत्युंजय के पास पहुँच गया, मृत्युंजय ने सुरेन्द्र साहू की भाषा को खूब अच्छे से समझ लिया था और उसी की भाषा को दोहराते हुए मृत्युंजय ने राजेन्द्र गुप्ता से कह दिया की तुम्हारी पत्नी ही पणौती है वह जब तक तुम्हारे साथ रहेगी तब तक तुम्हारा कारोबार बढ़ नहीं सकता है। यह बात सुनकर राजेन्द्र गुप्ता ने मृत्युंजय से कहा कि जिस पंडित ने मेरी शादी कराई है उस पंडित ने पत्नी और मेरी कुंडली देखकर यह कहा था कि नीतू तुम्हारे लिये साक्षात लक्ष्मी साबित होगी। और राजेन्द्र गुप्ता ने यह तक कह दिया कि मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है कि आप सही हैं या फिर वो पंडित सही थे। जिसने जन्मपत्री मिलाकर मेरे गले में साक्षात लक्ष्मी बांधी है। शर्ट के भीतर से पिस्तौल निकालकर राजेन्द्र ने यह कहा कि जिसकी बात झूठी निकलेगी मैं उसे गोली से उडा दुंगा, तब सुरेन्द्र साहू ने बात को संभालते हुये कहाँ कि भाई इतने जोश में तुम्हारी बात सही नहीं। दोनों पंडित ब्राह्मण हैं और ब्राह्मण की हत्या करना सबसे जघन्य पाप है इसलिए तुम अपनी पिस्तौल तो भीतर रखो। और मृत्युंजय की बात पर आँख मुंदकर विश्वास रखो क्योंकि मैं जानता हूँ जितना ज्योतिष का ज्ञान इन पंडित जी को है उतना ज्ञान किसी को नहीं है। सुरेन्द्र की बात सुनकर राजेन्द्र ने कहाँ मेरे चिंतन की दिशा बदल रही है। मैं सोच रहा हूँ कि अभी तक मैंने नीतू से अगाध प्यार किया है पर मैं ये कैसे स्वीकार कर लूं कि नीतु मेरे कारोबार की बाधा बन सकती है, उसने मुझे हर पल साथ दिया है, जहाँ बन सकती है, उसने मुझे हर पल साथ दिया है, जहाँ भी मैं अटका भटका वहाँ नीतू ने मुझे रास्ता दिखाया है। सुरेन्द्र भाई मैं तुम्हारे या पंडित जी की बात पर कैसे विश्वास करूँ यह समझने के लिये मुझे बहुत कुछ पीछे मुडकर देखना पड़ेगा। जब मैं पीछे देखता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि नीतू से अच्छी मेरी कोई पत्नी नहीं हो सकती। पंडित जी ने मुझे दुविधा में डाल दिया है। दुविधा के कारण मेरा परिवार ही अस्त्य व्यस्त हो सकता है। मैं अपने परिवार को बिखरते हुये नहीं देख सकता हूँ। सुरेन्द्र ने कहाँ देखो गुप्ता जी हर आदमी को अपने परिवार से प्रेम और विश्वास होता है लेकिन परिवार में भी कुछ ऐसे लोग होते है जिनकी किस्मत जन्म से ही विचित्र होती है, ज्योतिषी किसी की किस्मत बना बिगाड़ नहीं सकते हैं। ग्रह नक्षत्र भी तो बदलतें रहते है। आज किसी के स्टार बुलंदी पे होते हैं तो किसी दिन वे ही स्टार गर्दिश में चले जाते हैं। इसमें कोई

आश्चर्य की बात नहीं होती है। इसलिये जिसके स्टार गर्दिश में हो जाये उसके बारे में हमें किसी विद्वान् से ही पूछकर निर्णय लेना चाहिए और मृत्युंजय तिवारी जैसे विद्वान आपका अच्छा मार्गदर्शन कर सकते हैं। राजेन्द्र ने अपना चेहरा मृत्युंजय कि तरफ किया और कहा बोलो पंडित जी आपने क्या विचार किया।

मृत्युंजय ने कहा ज्योतिष पूर्ण विज्ञान नहीं है पर ज्योतिष के द्वारा दिये गये संकेत हमें भविष्य का पूरा खाँका खीचकर देते हैं और यह बताते हैं किसकी प्रकृति कैसी है, कौन हमारा कितना साथ दे सकता है और कितना किस कार्य में बाधक बन सकता है। समझदारी इतने में ही है जो साथ दे उसे रखो और जो बाधक बने उसे छोड़ दो।

राजेन्द्र मृत्युजंय की सारी बात सुनकर उठ खड़ा हुआ और सुरेन्द्र साहू से बोला चल भाई सुरेन्द्र ने कहा ऐसे जानना उचित नहीं है। पंडित जी की सभी बातें सुनकर एक निर्णय लेना चाहिए। राजेन्द्र ने कहा जल्दबाजी के सारे निर्णय गलत होते हैं, उतावले पन में जिन्होंने ने भी निर्णय लिये हैं उन्होंने पाया कुछ नहीं सिर्फ खाया हैं। मैं अगर कुछ ना पा सकूं तो चलेगा लेकिन मेरा कुछ मेरे से छिटककर चला गया तो मुझे जीवनभर इसकी पीड़ा रहेगी। हर आदमी के पास पाने की सोच होती है खोने की नहीं। तुम मेरे अच्छे मित्र हो हम दोनों बैठकर गहरा चिंतन करें इसके बाद कोई निर्णय लेंगे क्योंकि मेरे दो बच्चे और एक बच्ची है। बच्चे भी उमर में कोई छोटे नहीं है, क्या नीतू को छोड़ पाना मुझे आसान होगा नीतू से मैंने हिंदु पद्धती से फेरे लिये हैं, और वह भी मुझसे असीम प्यार करती है। ऐसे अगाध बंधन को छोड़ पाना मुझे तो मुश्किल है। परंतु यह भी एक आवश्यक बात सामने आई है कि आज का युग प्रतिस्पर्धा का है। जो प्रतिस्पर्धा में पिछड़ जाता है वह भी तो कहीं का नहीं रहता है। मुझे पंडित जी ने धर्मसंकट में डाल दिया है। खैर मैं उस धर्मसंकट से बाहर निकलूंगा और इसमें पंडित जी का भी सहयोग लूंगा।

राजेन्द्र ने वाराणसी के अंदर घूमघूमाकर एक अच्छी सजातीय महिला को खोजने का प्रयास किया बहुत प्रयास के बाद राजेन्द्र को एक निराली महिला भी मिल गयी। राजेन्द्र ने निराली पर डोरा डाला और निराली ने भी राजेन्द्र पर डोरा डाला क्यों कि निराली भी अपना परित्यक्त जीवन जी रही थी। राजेन्द्र के साथ उसका बेटा नवनेन्द्र भी बड़ा होने पर साथ-साथ घुमने लगा। राजेन्द्र का नवनेन्द्र सूचना संवाहक के रूप में काम आने लगा नवनेन्द्र निराली और राजेन्द्र के बीच के संदेश देने लगा। निराली के विषय में एक दिन नीतू से नवनेन्द्र ने चर्चा कर दी और ये कहा मम्मी एक निराली आंटी है वो निराली आंटी मुझे बहुत चाहती है।और पापा भी जब कभी निराली के घर पे जाते आते हैं। नीतू ने

नवनेन्द्र की बात जब सुनी तब उसे लगा कि मेरे साथ कोई धोखा हो रहा है। धीरे धीरे नीतु और राजेन्द्र के बीच तनातनी बढ़ती ही गई। संबंधों में मिठास कम होगई। राजेन्द्र प्रायः बिजनेस का बहाना बनाकर रात में भी गोल मारने लगा। एक दिन नीतू ने कहा आप मेरे से सच बोलेंगे या झूठ। तब राजेन्द्र ने कहा ऐसा प्रश्न मुझसे पूछना नहीं चाहिए। तब नीतू ने कहाँ मैं तुम्हारी विवाहिता पत्नी हूँ हर बात पूछ सकती हूँ क्योंकि मैं देख सकती हूँ कि आप विचलित ही रहते हैं। ना तो आप समय पर घर आते है ना भोजन समय पर करते हैं। क्या बात है क्या आपका रास्ता बदल रहा है, मेरे से विश्वास टुट रहा है। मेरे से दूर हटने का क्या कारण है। राजेन्द्र ने कहाँ देख रात गहरा रही है बात को गहरी ना करो। अगर मेरा दिमाग खिसक गया तो बहुत बड़ा अनर्थ हो जायेगा। नीतु ने कहा जो अनर्थ होगा हो जाने दो ! क्या होगा तुम मुझे छोड़कर चले जाओगे मैं अपनी जिंदगी कैसे भी काट लूँगी। पर जो तुम कर रहे हो वह अच्छा नहीं कर रहे, यह रास्ता आपके लिये गलत ही होगा। राजेन्द्र ने कहा देख नीतू तुम सो जाओ आज इतनी ही बात रहने दे आगे बात मत बढ़ा। राजेन्द्र भी चादर ओढ़कर सोने का नाटक कर रहा था। नीतू गहरी नींद में चली गई। राजेन्द्र को नींद नहीं आई और उसने अपनी पिस्तौल उठाकर नीतू नवनेन्द्र और गोरांगी और अंत में सुरेन्द्र पर भी गोलीबारी कर दी और गोलीबारी करने के बाद राजेन्द्र गाडी उठाकर निकल गया और सीधा निराली के घर पहुँचा, निराली से कहा आज मैंने नीतू को रास्ते से हटा दिया तथा नीतू के दो बेटे और एक बेटी को भी ऊपर पहुंचा दिया। तब निराली ने कहा तुम क्या समझते हो तुम जैसे हत्यारे को मैं पास आने दूंगी। अब तुम्हारे पिस्तौल में गोलीयाँ बची है तो मुझे भी मार दो मैं भी मरने को तैयार हूँ। राजेन्द्र ने कहा भी तुम्हें नही मारूंगा मैं खुद कर मर जाऊँगा।

गोलियों की आवाज सुनकर मोहल्ला पूरा इकट्ठा हो गया। चार लाशों को देखकर मोहल्ले में हाहाकार मच गया। सूचना मिलते ही पुलिस अधिकारी दल बल के साथ राजेन्द्र के घर आ गये। यह समझते उन्हें देर नहीं लगी कि इसका हत्यारा परिवार का सदस्य ही है। पुलिस दल ने राजेन्द्र को खोजने की कोशिशें शुरु की दी परंतु उन्हें राजेन्द्र को ढूंढने में ज्यादा समय नहीं लगा क्योंकि मोहल्ले की एक गली में राजेन्द्र की लाश भी पड़ी मिली। लाश के सीने पर पिस्तौल भी थी। एक ही परिवार के चार सदस्यों की हत्या और एक की आत्महत्या ने पूरे बनारस को झकझोर दिया था। इस दुःखद खबर से चायपान की दुकानों पर, गली और चौराहों पर खड़े लोग बस एक ही बात कहते रहे वाराणसी शहर में यह घटना बहुत विचित्र ही है। परंतु इतना सनकी निकलेगा। कुछ लोग यह भी कह रहे थे बुरे काम का कभी अच्छा नतीजा नहीं हो सकता है।

हमारे गौरव

आचार्य कल्प श्रुतसागर

श्रमण संस्कृति के ऊर्ध्वमुखी चिन्तन ने मानव को न केवल जीने की राहें सुलभ की, अपितु मरने की कला से भी परिचय कराया है। प्रभुवत् जीवन निर्वाह के घेरे से निकालकर यथार्थ बोध कराया यह इस संस्कृति की विशेषता है।

ऐसी ही विशाल एवं उदार संस्कृति के प्रतीक के रूप थे आचार्य कल्प श्रुतसागर जी महाराज। आपका जन्म राजस्थान के प्रसिद्ध शहर बीकानेर में फाल्गुन वदी अमावस्या संवत् 1962 में आवक (ओसवाल) गोत्रात्पन्न श्रीमान् सेठ छोगालाल जी एवं माता श्रीमती गन्नोबाई के परिवार में हुआ था। गोविंदलाल के नाम से संस्कारित इस लाडले को सभी फागोलाल के नाम से पुकारते थे।

आपके पिता कपड़े के व्यापारी थे। आर्थिक स्थिति से सम्पन्न घराने में पोषित गोविन्दलाल की बड़ी बहिन सोनाबाई धार्मिक संस्कारों से अति सम्पन्न महिला थीं।

अक्षराभ्यासः लाड-प्यार तथा आर्थिक सम्पन्नता आपकी शिक्षा में बाधक रही। यही वह थी कि आपको लौकिक शिक्षा मात्र प्राथमिक विद्यालय तक की ही मिल सकी। व्यापारिक कार्य हेतु कलकत्ता प्रवास के समय आप भी एक बार पिताजी के साथ कलकत्ता गये। वहां चित्तपुररोड स्थित पाठशाला में आपको धार्मिक शिक्षा ग्रहण करने का सुअवसर अवश्य मिला। जहां पं. मक्खनलाल जी एवं पं. झम्मनलाल जी के संरक्षण में धार्मिक संस्कार सुदृढ़ बने।

गृहस्थजीवनः 24 वर्ष की अवस्था में बसंताबाई से विवाह हुआ। उन्होंने तीन पुत्र और तीन पुत्रियों को जन्म दिया। उनमें से पुत्री सुशीला आर्यिका श्रुतमती बनी। विवाह के दस साल बाद माता पिता का सात वर्ष के अंतराल में समाधिपूर्वक वियोग हुआ।

संयमी जीवन- अपने हृदय में वैराग्य की भावना से 40 वर्ष की अवस्था में ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया। और कार्तिक सुदी तेरस सं. 2099 को क्षुल्लक दीक्षा धारण कर ली। जयपुर में खनिया जी पर आचार्य वीरसागर जी से सं. 2094 में मुनि दीक्षा हुई।

साहित्यिक अवदान- इनका लेख संग्रह रत्नाकर की लहरें के नाम से प्रकाशित हुआ। आपने संल्लेखना पूर्वक लूगवा राजस्थान में देह परित्याग किया।

विशेष- आप श्वेतांबर परिवार में जन्मे परंतु दिगंबर संत बने।

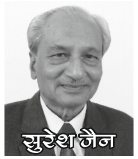

क्रमांक-46 वरिष्ठ नागरिक

सहमति जताने की कुशलता

जवानी में ऐसे अवसर भी आये होंगे जब आप किसी के साथ सहमति नहीं जताते होंगे। अपनी धुन में मस्त, ओहदे, सामाजिक रूतबे में मस्तक, केवल आप ही आप जो कुछ कह रहे हैं, वह ही ठीक है, आप सदैव चाहते थे कि जो बात आप कह रहे हैं, केवल उसके साथ ही अन्य सब लोग सहमत हो जाये ! परन्तु अब बुढ़ापे में अपनी यह आदत बदल डालिए।

मानव संबंधों में निपुण होने के लिए एक सबसे विशेष कदम जो आप उठा सकते हैं, वह है, सहमत होने की कला में सिद्धि। यही आज के समय में बुद्धिमता के बेश कीमती हीरों में एक हैं। जीवन भर शायद आपको कोई चीज इतनी सहायता न कर सके जितनी कि यह आसान सी सहमत होने की कला बुढ़ापे में आपका साथ दें। जब तक आप जीवित रहें, यह कभी न भूलें कि लोगों के साथ असहमत तो कोई मूर्ख भी हो सकता है, और सहमत होने के लिए एक बुद्धिमान, निपुण एवं बड़े आदमी की आवश्यकता होती है- विशेष रूप से तब जब कि दूसरा व्यक्ति गलती पर हो।

लोगों के साथ एकमत होना:- स्वयं को उस सोच के सांचे में ढालने का प्रयत्न करें। एक मत होने की प्रकृति विकसित करें। प्राकृतिक रूप से एकमतीय मनुष्य बनें।

लोगों को बताएँ, जब आप उनसे सहमत हो:- लोगों के साथ एकमत या सहमत होना ही काफी नहीं है। लोगों को पता भी तो हो कि आप उनके साथ सहमत हैं। जब आप लोगों के साथ सहमत हों तो अपना सिर हाँ में हिलाएँ और उनके साथ नजरे मिलाएँ और उनसे कहें- मैं आप से सहमत हूँ आप ठीक हैं।

यदि बहुत आवश्यक न हो तो लोगों को यह न बताएँ कि आप सहमत हैं:- यदि आप लोगों के साथ सहमत नहीं हो सकते, और कई बार हो भी नहीं सकते, तो भी यह बात जताएँ नहीं, जब तक ऐसा करना बहुत जरूरी न हो।

जब आप गलत हैं, तो स्वीकार करें:- जब कभी भी आप गलत हों, इसे जोर से स्वीकार करें- मैंने गलती की है। मैं गलत था। ऐसा करना किसी बड़े आदमी के बस की ही बात है और जो यह करते हैं, उनकी प्रशंसा करते हैं। साधारण आदमी झूठ बोलेगा, मना करेगा या फिर कुछ और बहाना बनायेगा।

बहस से दूर रहें:- मानव संबंधोंमें सबसे कमजोर तकनीक बहस करने की है। अगर आप सही है, तो बहस न करें। बहस करने से न तो कोई बहस जीतता है और न हीं मित्र बना पाता है।

लड़ाकू लोगों से सही ढंग से पेश आयें:- लड़ाकू लोगों को एकचीज ही चाहिए-लड़ाई। उनको काबू करने की बढ़िया तकनीक है, उनके साथ लड़ाई करने से मना करना। वे क्रोधित होकर अपनी थूक निगल लेंगे और मूर्ख दिखाई देंगे।

एकमत होने की कला के कारण:- 1. लोग उन्हें ही पसंद करते हैं, जो उनके साथ सहमत हो। 2. लोग उन्हें पसंद नहीं करते, तो उनसे भिन्न मत रखते हों। 3. लोग अपनी राय की आलोचना पसंद नहीं करते। 4. यह बुढ़ापा है, आपने अपनी बहुत चला ली, अब दूसरों के साथ सहमत होने की कला को सीखें।

पुरानी पिच्छिका प्राप्त करने वाले श्रावक सूची 2024

क्र.	पिच्छीधारी का नाम	पिच्छी प्राप्तकर्ता
01	आचार्य श्री समयसागरजी महाराज	श्रीमति अल्पना इंजी. रमेश जैन, सतना
02	मुनि श्री विनीतसागरजी महाराज	श्रीमति श्वेता नरेश जैन, पन्ना
03	मुनि श्री प्रशस्तसागरजी महाराज	श्रीमति सुरभी सचित जैन, हीरागंज कटनी
04	मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी महाराज	श्रीमान् पूनमचंद जैन, बंडा
05	मुनि श्री मल्लिसागरजी महाराज	श्रीमति रूबी अमित जैन, दिल्ली
06	मुनि श्री आनंदसागरजी महाराज	श्रीमति मीना राजकुमार जैन, राजनगर
07	मुनि श्री निर्ग्रंथसागरजी महाराज	ब्र. श्रुती दीदी, श्रीकांत जैन देवरी वाले, बुढार,
08	मुनि श्री निर्भांतसागरजी महाराज	श्रीमति पुष्पा सुर्दशन जैन, जबलपुर
09	मुनि श्री निरालससागरजी महाराज	श्रीमति कल्पना मनोज जैन, बाजना वाले छतरपुर
10	मुनि श्री निराश्रवसागरजी महाराज	श्रीमति सुलेखा मनोज जैन, लवकुश नगर
11	मुनि श्री निराकारसागरजी महाराज	श्रीमति प्रियंका निलेश जैन, सागर विदिशा
12	मुनि श्री निर्माणसागरजी महाराज	श्रीमति दीपिका अमित जैन, लखनऊ
13	मुनि श्री निर्लेपसागरजी महाराज	श्रीमति मिली यशवर्धन बजाज, खुरई
14	मुनि श्री निशंकसागरजी महाराज	श्रीमति वंदना नीरज जैन, पन्ना
15	निर्यापक श्री संभवसागरजी महाराज	श्रीमति नेहा सचिन जैन, छकोडी किराना, गोटेगांव
16	मुनि श्री निस्सीमसागरजी महाराज	श्रीमति सुषमा पवन जैन (साहिल) गोटेगांव
17	मुनि श्री श्रवणसागरजी महाराज	श्रीमति रिंकी विकास बडकुल, गोटेगांव
18	मुनि श्री संस्कारसागरजी महाराज	श्रीमति अनु रिकेश जैन, रिक्की रोड़ लाईन्स, गोटेगांव
19	मुनि श्री ओंकारसागरजी महाराज	श्रीमति श्रुती अतुल जैन, अशोक जनरल स्टोर, गोटेगांव
20	मुनि श्री कुंथुसागरजी महाराज	श्री उत्तम पाटील, सदलगा कर्नाटक
21	मुनि श्री विमलसागरजी महाराज	श्रीमति पुष्पा कमल मोदी, खिमलासा
22	मुनि श्री अनंतसागरजी महाराज	श्रीमति अनिल अजमेरा, लालघाटी भोपाल
23	मुनि श्री धर्मसागरजी महाराज	श्री शैलेन्द्र जैन, गौरझामर
24	मुनि श्री भावसागरजी महाराज	श्री अतुल आशीष, खिमलासा
25	मुनि श्री सरलसागर जी महाराज	श्रीमति संगीता मुकेश चौधरी, बामौरकला
26	मुनि श्री अविचलसागरजी महाराज	नजाईबाजार ललितपुर
27	क्षुल्लक श्री ध्यानसागरजी महाराज	बा. ब्र. रेवती दीदी, अकलूज
28	एलक श्री सम्पूर्णसागरजी महाराज	श्रीमति उषा हेमंत जैन, सुंदरमपुर नदिया बनारस
29	मुनिश्री दुर्लभसागर जी महाराज	श्रीमति रेखा दिनेश जैन, भोपाल
30	एलक दयासागरजी महाराज	राहुल निधि जैन शिक्षिका सिलवानी वाले, भोपाल
31	आर्यिका श्री सौम्यमती माताजी	श्रीमति सुनीता सुधीर जैन
32	आर्यिका श्री चैत्यमति माताजी	श्रीमति रेशू सोनल जैन, अमरपाटन
33	आर्यिका श्री आगतमती माताजी	श्रीमति किरण अनिल जैन, पिपरई अशोकनगर (म.प्र.)
34	आर्यिका श्री ऋजुमति माताजी	श्रीमति दीपिका प्रदीप जैन, सतना
35	आर्यिका श्री सरलमति माताजी	श्रीमति गोल्डी अंकित जैन, सतना
36	आर्यिका श्री शीलमति माताजी	बरगी
37	आर्यिका श्री असीममति माताजी	श्रीमति कविता आलोक जैन, सतना
38	आर्यिका श्री गौतममति माताजी	श्रीमति रश्मि आशीष जैन टेल्को हाउस, सतना
39	आर्यिका श्री निवार्णमति माताजी	श्रीमति रश्मि प्रदीप जैन, सतना

क्र	पिच्छीधारी का नाम	पिच्छी प्राप्तकर्ता
40	आर्यिका श्री मादर्वमति माताजी	श्रीमति श्वेता सौरभ जैन, सतना
41	आर्यिका श्री मंगलमति माताजी	दमोह
42	आर्यिका श्री चारित्रमति माताजी	श्रीमति मंजू आमोद जैन
43	आर्यिका श्री श्रद्धामति माताजी	श्रीमति प्रीति जिनेन्द्र जैन
44	आर्यिका श्री उत्कर्षमति माताजी	श्रीमति नूतन रमेश जैन, सतना
45	आर्यिका श्री दुर्लभमति माताजी	श्री धर्मेन्द्र सेठी, उज्जैन
46	आर्यिका श्री अनर्घमति माताजी	श्री संजय सेठी, उज्जैन
47	आर्यिका श्री श्वेतमति माताजी	श्रीमति ज्योति जिनेन्द्र जैन, चना वाले उज्जैन
48	आर्यिका श्री पृथ्वीमति माताजी	श्रीमति सुनीता अशोक जैन, उज्जैन
49	आर्यिका श्री विदेहमति माताजी	श्री योगेश जैन सिंघई, उज्जैन
50	आर्यिका श्री आलोकमति माताजी	श्रीमति सुधा शीतल सांधेलिया, दलपतपुर
51	आर्यिका श्री ध्यानमति माताजी	श्रीमति ममता कमलेश जैन, शिवनगर जबलपुर
52	आर्यिका श्री स्वस्थमति माताजी	श्रीमति अनीता बबलू जैन, नोहटा
53	आर्यिका श्री परमार्थमति माताजी	श्रीमति सुधा भजन जैन, नोहटा
54	आर्यिका श्री निष्काममति माताजी	श्रीमति नीता मनोज जैन, धनोरा
55	आर्यिका श्री विरतमति माताजी	श्रीमति मीना विवेक जैन, बारा सिवनी
56	आर्यिका श्री उपशममति माताजी	श्रीमति निधी विनोद जैन, धनौरा
57	आर्यिका श्री अवायमति माताजी	श्रीमति रचना रविन्द्र मोदी, जरुआखेड़ा
58	आर्यिका श्री उद्योतमति माताजी	श्री रमेश कुमार जैन, इंदौर
59	आर्यिका श्री अदूरमति माताजी	श्रीमति बबली कमल जैन, कोतमा
60	आर्यिका श्री साधनामति माताजी	श्रीमति पद्मा सुशील जैन, महाराजपुर

समाचार

ब्रह्मचारी भाईयों का संघ प्रवेश

खजुराहो (म.प्र.)- आचार्य श्री समयसागर महाराज जी के संघ में ब्र. विश्वास भैया गंजबासौदा, ब्र. रितीक भैया जबलपुर, ब्र. आकाश भैया खुरई, ब्र. राज भैया टीकमगढ़, ब्र. ज्ञायक भैया विदिशा, ब्र. यश भैया विदिशा, ब्र. आदित्य भैया विदिशा का संघ प्रवेश 24 नवम्बर 2024 को हुआ तथा ब्र. अखिल भैया चरगांव, नीरज भैया गुना, ब्र. पीयूष भैया इंदौर का 10 दिसम्बर 2024 को तथा ब्र. अनिवर्तक भैया ग्वालियर का 14 दिसम्बर 2024 को ब्र. आयुष भैया बंडा का 15 दिसम्बर 2024 संघ में प्रवेश हुआ तथा सभी भाईयों को दो-दो प्रतिमा के व्रतों का संकल्प गुरुचरणों में स्वर्णोदय तीर्थ खजुराहों में हुआ।

परम पूज्य गुरुदेव संत शिरोमणि राष्ट्रीय संत आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महामुनिराज के समाधि उपरांत लंदन में आचार्य श्री जी को **(GOLDEN POET IN THE WORLD)** की उपाधि **लंदन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड** में दी गई।

बालों के रोग सुरक्षा और चिकित्सा

❉ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ❉

प्रकृति ने बालों की उपस्थिति का मुख्य प्रयोजन रक्षात्मक है। संसार के सभी थलचर प्राणियों के शरीर पर बाल पाये जाते हैं इनका मुख्य कार्य सर्दी-गर्मी आदि से त्वचा की रक्षा करना है, परन्तु मानव मस्तिष्क पर उत्पन्न बाल शारीरिक सौंदर्य की अभिवृद्धि करने में भी सहायक होते हैं। शरीर के किसी भी स्थान के बालों का हटाना प्रकृति की आज्ञा का पालन न करना है। प्राचीन ऋषि, मुनि तथा अधिकांश सामान्य जन बाल कर्तन नहीं करते थे। वर्तमान में सिख मतालम्बी भी इस नियम का पालन करते हैं। परन्तु अंग्रेजों के शासन काल से इस नियम में परिवर्तन आरंभ हुआ तथा हमारे देशवासियों ने उनकी देखा देखी कर सिर के बाल काटना, दाढ़ी, मूंछ विहीन करना व आधुनिक नारियाँ वालकट हेयर अथवा पुरुषों की भाति छोटे छोटे बाल रखने की प्रवृत्ति हो रही है।

प्राचीन काल में नारियां जहाँ लम्बे और घने बालों को सौन्दर्य का प्रतीक मानती थी, प्रसिद्ध सोलह श्रृंगारों में केश विन्यास को भी विशिष्ट महत्त्व प्राप्त था। प्राचीन देवालयों में देवी, देवताओं, भगवान के रक्षक, द्वारपाल आदि के लम्बे, घने काले बाल सदैव ही आकर्षण के केन्द्र रहे हैं। जिन लोगों का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम होता है, सिर के बालों का सौन्दर्य भी उन्हीं का उपलब्ध होता है। सिर के बालों को रखने का ढंग ही व्यक्तित्व की परख होती है।

बालों के विभिन्न रोग के कारण व लक्षण बालों का झड़ना- कंघे से बालों को संवारते समय यदि उनमें से कुछ बाल टूटकर कंघे से लग जाये तो समझना चाहिये की बालों का झड़ना प्रारंभ हो गया है। बालों की जड़ें कमजोर हो जाती है बाल झडने लगते हैं। बाल झड़ने का प्रमुख कारण पर्याप्त पोषण का अभाव, थायराइडग्लेंड, पिटयूटरी ग्लेंड के निकले हार्मोन्स की मात्रा में कमी, टीवी रोग, टाइफाइड, काला ज्वर, बुखार बार-बार आना, किसी पुरानी बीमारी से किसी या सभी अंगों की कमजोरी से बाल झड़ते है। सिर में फुंसी एग्जीमा होना।

बालों का असमय सफेद होना (Grey Hair) क्रोध, शोक तथा अधिक परिश्रम, अधिक गरम व गरिष्ठ भोजन करना, व्याभिचारी होने से शरीर की कुपित (दोषित) हुई वायु शरीर से सिर में जाती है जिसमें वात, पित्त, कफ तीनों दोष उत्पन्न होना, हार्मोन्स की कमी, लगातार रहने वाला, जुकाम, सिर दर्द से पोषण क्रिया प्रभावित होकर बालों को पोषण नहीं मिलने, बालों में तेल न डालना या कम डालना हानिकारक तेल, क्रीम , सेम्पू, आदि का प्रकोप कारण बनता है।

रूसी (Dandruff) - हमारे शरीर में तैलीय ग्रंथियां एक प्रकार के तैलीय पदार्थ का निर्माण करती है जो त्वचा को मुलायम रखती है किन्तु रूसी होने से इन ग्रन्थियों से निकलने वाले तैल की संरचना में असंतुलन पैदा हो जाता है। रूसी सूक्ष्म-सूक्ष्म सफेद रंग की फंगस जो सफेद पाउडर की होती है जो सिर की त्वचा में सिर के कंघी करते समय अथवा सिर को खुजालते समय पाउडर सम्पूर्ण बालों में फैलकर सिर की चमड़ी को प्रभावित करके खुजली पैदा करती है वह स्थान काला व गर्म हो जाता है और छोटी छोटी पपड़िया बन जाती है। बालों को पर्याप्त पोषण न मिलने से बाल पतले, रूखे व कमजोर होकर झड़ने लगते हैं। यह रोग हार्मोन्स परिवर्तन,

मानसिक तनाव, कब्ज, असंतुलित भोजन, शारीरिक परिश्रम करने से होती है। इस रोगी की प्रयोग में आने वाले तेल, साबुन, कंघी, टॉवेल अन्य के उपयोग से रोग फैल जाता है।

सिर में जू पड़ना – बालों की उचित सफाई होने से जू पड़ने से बाल कमजोर होकर झड़ने लगते हैं।

गंजापन (Alopecia) बाल तेजी से गुच्छे में झड़ने लगते हैं तथा नये बाल का उत्पन्न होना रुक जाता है। गिरे हुये बालों के स्थान पर त्वचा चिकनी खाल निकल आती है। गंजापन रक्त विकार, पोषक तत्त्वों की कमी, दाद, एग्जिमा, हार्मोन्स की कमी, उपदंश, अधिक मानसिक परिश्रम आदि। यह रोग वंश परम्परागत भी होता है। गंजापन केवल बढ़ती उम्र में नही प्रत्येक आयु के बाल, युवकों को भी हो सकता है।

नियंत्रण उपाय– बालों का गिरना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। निश्चित अवधि के बाद बालों की वृद्धि रूक जाती है व बाल गिरकर उसकी जगह पुनः नये बाल निकल आते हैं। बालों की आयु सिर्फ 6 वर्ष तक होती है, पुराने बालों के स्थान पर नये बाल आगमन की गति धीमी होने से सामान्यतः इसका पता नहीं चलता है किन्तु यह क्रम जीवन भर चलता रहता है। जब शरीर से रोग का निवारण होकर शरीर स्वस्थ्य होता है रक्त संचार की गति सामान्य होने पर बाल पुनः उगने लगते हैं, सफेद बाल काले होने लगते हैं उचित पोषण उपचार अपनाना चाहिये।

तेल की मालिश– बालों को पोषण उनको जड़ के माध्यम से रक्त द्वारा प्राप्त होता है, सिर के बालों की जड़ों में तेल की मालिश लाभदायक होती है। खोपड़ी का बाह्य आवरण का ढीला कोष बहुल तथा मोटा होना आवश्यक है। सिर की मालिश उचित तेल नारियल तेल, आंवला का तेल, काले तिल का तेल किन्तु ध्यान रखें तेल में सफेद तिल्ली के तेल अथवा हानिकारक तेलों से निर्मित हो, वह नहीं लगाना चाहिये बालों में नित्य तेल लगायें।

बालों को असमय सफेद रोकने हेतु खुली हवा में व्यायाम, नित्य ठंडे पानी से स्नान, बालों को धोना, सिर की मालिश, बालों को धीरे धीरे खीचना, रात के समय सिर दबाना, भोजन में पोषक तत्त्वों की पूर्ति, सफेद बालों को काला करने के लिये खिजाव का प्रयोग, हानिकारक है एवं उनके हानिकारक केमिकल मानसिक नाड़ी संबधी रोग तथा शरीर को विषाक्त करके एग्जिमा, सिर चेहरे में जलन, अंधापन पैदा करते हैं अतः इनका प्रयोग नहीं करें यदि आवश्यक हो देशी उपाय करें।

रूसी– बालों को धोने के लिये साबुन का प्रयोग बहुत हानिकारक है साबुन का कास्टिक सोड़ा बालों व त्वचा के लिये हानिकारक होता है। सिर के बालों की सफाई उचित शैंम्पू से ही करना चाहिये। काफी, चाय, वसायुक्त गरिष्ठ भोजन से बचे तथा दही, दूध, हरी सब्जी फलों को सेवन करें। सिर में नीम तेल की मालिश, दही मुलतानी मिट्टी से सिर धोना, सरसों के शुद्ध तेल में नींबू का रस मिलाकर बालों की जड़ों में अच्छी तरह लगाकर कुछ देर बाद सिर को धोना मोटी टॉवेल से सिर अच्छी तरह रगड़कर पौछने को नियंत्रण होता है।

गंजापन– रोग का कारण जानकर उचित इलाज कराना जिस जगह बाल उड़ गये हो वहाँ पर दिन में 2-3 बार कुछ सप्ताह का लहसुन का रस, पत्ता गोभी का रस, हरे धनिया का रस लाभदायक सिद्ध हुआ है। कथन है कि अधिक चिन्तन करने वालों को यह रोग होता है यह

बिल्कुल गलत है सभी इससे प्रभावित हो सकते हैं। ध्यान रखें जन्मजात व वृद्धावस्था में गंजेपन को दूर करने की कोई चिकित्सा प्रभावी नहीं है। चिकित्सकों के मतानुसार बालों के रोग आहार-विहार संबंधी नियमों के पालने से नियंत्रण किया जा सकता है जो निम्न है।

ताजा कच्ची सब्जियों में गंधक, आयरन, विटामिन बी1, बी2 की मात्रा अधिक होती है। जिस हेतु सरसों की भाजी, बन्द गोभी, गाजर, प्याज, टमाटर, मूली के छोटे छोटे पत्ते, खीरा में नींबू का रस निचोड़कर सलाद के रूप में खाना बहुत लाभदायक है।

1. ताजा पालक के पत्ते, खीरा, गाजर की सामान मात्रा 100-150 ग्राम रस भोजन से पूर्व दिन में 2-3 बार कुछ माह तक पीना चाहिये
2. सिर के गंजे बाल गिरे स्थान पर प्याज का रस मलने से बाल निकल आते हैं।
3. अंकुरित गेहूँ का रस 3-4 माह तक नियमित पीना
4. आम, संतरा, अंगूर, पपीता, केला, सेवफल, आंवला, अमरूद, दूध मक्खन, पिस्ता, काजू, अखरोट, मूंगफली, खजूर, हरी पत्तियों वाली सब्जियों चौलई आदि लाभदायक है।

विटामिन युक्त भोजन, चिन्ता रहित रहना, अधिक गर्मी, धूप में देर तक नहीं रहना, तंग, गर्म कपड़े (वायु अवरोधी) नहीं पहिनना, सिर पर वायुरोधी टोपी, अधिक देर तक हेलमेट लगाना, वर्तमान समय में वायु, जल, खानपान, प्रदूषण, भोज्य पदार्थो में आवश्यक पोषक तत्व का अभाव, मशीनी जीवन भी इसका कारण है। संपूर्ण शरीर का नियंत्रण तथा मूलाधार मस्तिष्क ही है जिसे हमेशा तेल द्वारा चिकना बनाये रखना चाहिये। रोग से प्रभावित होने पर आयुर्वेदिक व होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति बहुत प्रभावी है योग्य चिकित्सक से सलाह लेकर उपचार कराने से नियंत्रण सम्भव है।

कविता

विजय यात्रा सफल बनाते

संस्कार फीचर्स

दरिया में किश्ती होगी, नाव पुरानी अपनी होगी
खेवन हार हमी तो होंगे, तूफानों की दस्तक होगी
पार करे हम कैसे नैया, साथ न देगा कोई भैय्या
हिम्मत अपनी साथ निभाये, बने हौसला सदा खिवैया
सदा मुकिश्लें आती रहती, लहरें भी तो टकराती रहती
डूबा वही जो घबरा जाता, सतत साधना पार लगाती
तूफानों से साधन पार लगाती, तूफानों से जो डर जाते
जिंदा है फिर भी मर जाते, करें साधना हिम्मत धारें
विजय यात्रा सफल बनाते।

हास्य तरंग

1. नई बहू को सास ने समझाया कि बेटी, मुझे माँ व अपने ससुर को पिता समझना ! कुछ देर बाद दरबाजे की घंटी बजी, बहू ने दरवाजा खोला तो सांस ने पूछा कौन आया है ? बहू ने कहा भैया टूर से वापिस आ गये हैं।

2. शहर में नई पुलिस कमिश्नर प्रणाली को सख्ती से लागू किया गया अधिकारी ने सभी को निर्देश दिये गये अपने कर्त्तव्य व अनुशासन का सख्ती से पालन किया जावे। रात्रि गस्त करते समय पुलिस सिपाही अंधेरे में कुंआ में गिर गया। क्षेत्र के ग्रामीणों ने मिलकर उसे रस्सी के सहारे ऊपर निकालने की कोशिश की गई थी तभी उनके बड़े अधिकारी भ्रमण पर आये। अधिकारी को देखते ही सिपाही ने सलूट दे मारी और रस्सी से हाथ छूटने पर कुंआ में पुनः गिर गया।

3. महिला- डॉक्टर साहब मेरा वजन बढ़ता जा रहा है। डॉ. आपको एक कसरत करनी होगी, महिला मुझे बैठने के बाद खड़े होने चलने में परेशानी है वह शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती हूँ आप मुझे कसरत करने की सलाह दे रहे। डॉ. हाँ कसरत अत्यंत्र सरल है इस वॉटल में जोगोलियाँ है उन्हें दिन में 10 बार फर्श पर फैलाकर पुनः वॉटल में भरना है।

4. भावित- अपने दादा जी के गांव गया तो उसने गाय को चश्मा पहिने देखकर आश्चर्य चकित हो गया। उसने दादाजी से चश्मा लगाने का कारण पूंछा। दादाजी ने बताया इस साल पानी कम गिरने से हरा चारा नहीं है, यह गाय सूखा चारा नहीं खाती है। इसलिये हरे रंग का चश्मा पहनाने से बड़े चाव से चारा खा लेती है।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

पाक कला

जैन पाव

सामग्री-मैदा 1.5 कटोरी, दूध 3/4 कटोरी, मलाई 1 कटोरी, नींबू का रस (दही 1 कडछी बड़ी) चीनी पाउडर 1.5 चम्मच, बेकिंग पाउडर 3/4 चम्मच, सोड़ा 1/4 चम्मच।

विधि- सबसे पहले मलाई, दूध, नींबू रस, चीनी पाउडर को मिला लें व बीटर से हल्के से मिक्स करें। मक्खन नहीं निकाले यह ध्यान रखना बहुत हल्के से मिलाना ताकि दाना या गांठे न पड़े।

भाग 2- अब मैदे में बेकिंग पाउडर व सोडा मिला लें व छलनी से छान लें ताकि मिक्स हो जाये।

भाग 3- अब मलाई वाले मिश्रण में मैदा वाला पाउडर थोड़ा- थोड़ा करके डालें व धीरे-धीरे मिक्स करें। यदि पेस्ट गाढा लगे तो थोड़ा पानी डालकर ठीक कर लें। फिर आप इस मिश्रण को गोल गोल शेप में बनाकर बेक करें, ऊपर से ग्रीस करें ताकि साफ्टनेस बनी रहे। आप इसे सुविधानुसार तवे या गैस पर भी सेक कर सकते हैं। व ओ.टी.जी में भी। आपका जैन पाव तैयार है।

बाल कहानी

हाथ नहीं धोये

ठाणे शहर डोचिसली में एक अलिखान नाम का व्यक्ति कहता था। वह फल की दुकान लगाया करता था। वह आलसी गंदी पसंद का व्यक्ति था। उसके पास के दुकानदार उसकी गंदी आदतों से बहुत नफरत करते थे। अलिखान से झगड़ा लेना कोई भी अच्छा नहीं मानता था। अलिखान लीगी दकियानूसी मुसलमान था अलिखान का बचपन खेलकूँद और गलत संगति में बीता था उसके माता पिता भी उसकी गंदी आदतों से परेशान हो चुके थे अतः उन्होंने अपना नाता तोड़ लिया था। अलिखान ने अपने आकाओं से भी सीखा था कि किसी को भी पानी पिलाओं तो उसमें थूँक दिया करो और अपने फलों में थूँक जरूर लगाया करो जिससे काफिर मुसलमान बन जायेंगे। इसलिए अलिखान घर पर बैठकर फलों में थूँग लगाकर आता था।

एक दिन अलिखान को दुकान ही बहुत जोर से लघुशंकरा लगी तो उसने एक पन्नी में लघुशंका कर ली और बिना हाथ धोये ही फल बेचना शुरु कर दिया इस कृत्य को पत्रकार महेश बाघ ने वीडियों बना ली जिसे मोबाईल के सोशल मीडिया पर डाल दी जिसने भी इस वीडियों के देखा वह आग बबूला हो गया नगर निकाय के अधिकारियों के पास अलिखान की एक ही दिन में सैकड़ों शिकायतें पहुँच गयी। अधिकारियों के नगर निकाय में मुख्य अधिकार से मार्गदर्शन लिया और कारवाई की रूप रेखा बनाई कि कैसे अलिखान को दबौचा जाये क्योंकि वह कोरोना जैसे भयंकर रोगों के लिए आमंत्रण दे रहा था। पुलिस अधिकारियों से परामर्श करके मुख्य नगर निकाय के अधिकारी ने अपने अधीनस्थों को मार्गदर्शन दिया।

जब अलिखान अपने फलों को बेच रहा था सभी पुलिस दल उसकी दुकान पर आ धमका और उसे वीडियो दिखाकर उसे गिरफ्तार कर कोतवाली ले गये। अलिखान पुलिस अधिकारी के पैर पकड़कर माफी मांगता रहा और रोता रहा। परन्तु पुलिस अधिकारी उसे माफ करने तैयार नहीं हुए और अलिखान को जेल जाना ही पड़ा। अलिखान ने तय किया कि अब हम कभी भी ऐसी गंदी हरकत नहीं करेंगे। उसने न्यायाधीश के समक्ष हलफनामा दिया और उसने हमेशा के लिए गंदी आदत छोड़ दी।

संस्कार गीत

तीरथ धाम

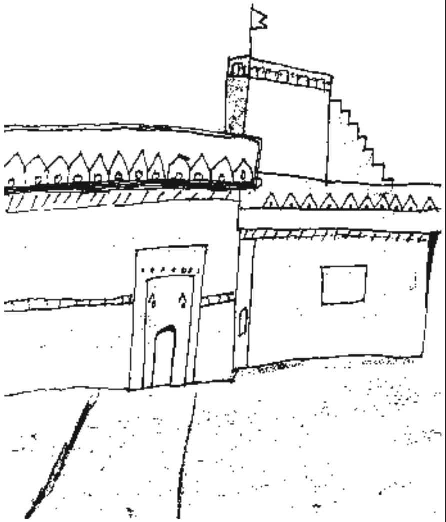

शाँति सुख के अनुपम धाम
तीर्थंकर के तीरथ धाम

1

योग साधना करें तपस्या
सिद्ध रूप पाते जहाँ सच्चा
करें तपस्या मुनि निष्काम

2

चरण चिन्ह जिनकी पहचान
सिद्ध प्रभु का शुभ स्थान
साधक जग नित करें प्रणाम

3

आस्था केन्द्र है तीरथ हमारे
पुरखों की पहचान है प्यारे
तीर्थ वन्दना उत्तम काम

बाल कविता

मोबाईल के खतरे

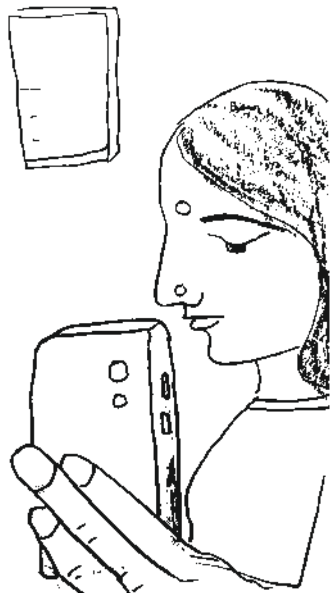

मोबाईल के खतरे भारी
बड़े मुटापा निद्रा हारी
मनो विकार बढ़ाता हर दम
छीने चैन बढ़ाता मन गम
मधुमेह दे बीमारी
नयन सदा ही करता भारी
अपराधों की नींव रखे यह
व्यसनों का सम्मान करे यह
झूठ बुलाये सत्य छुपाये
रिस्तों में यह सेंध लगाये
भैय्या इसको संभाल के छूना
जाता मुम्बई कहता पूना
शांति हरता बहुत दुखारी

समाचार

समाधिमरण

सटाणा (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री विरागसागर महाराज जी के शिष्य मुनि श्री विहितसागर महाराज जी का समाधिमरण 24 दिसम्बर 2024 को सटाणा महाराष्ट्र में गणधर मुनि श्री विवर्धनसागर महाराज के ससंघ सान्निध्य में हुआ।

पारसोला (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री वर्धमानसागर महाराज जी की शिष्या आर्यिका श्री ज्योतिमति माताजी का समाधिमरण 16 दिसम्बर रात्रि 11.37 पर पारसोला महाराष्ट्र में ससंघ सान्निध्य हुआ।

महाराजपुर (म.प्र.)- निर्यापक श्रमण योगसागर महाराज के ससंघ सान्निध्य में एलक श्री भारतसागर महाराज का समाधिमरण 8 दिसम्बर 2024 को प्रातः 10.30 बजे महाराजपुर सागर (म.प्र.) में हुआ।

सागर-निर्यापक श्रमण सुधासागर महाराज जी के एवं आर्यिका श्री उपशांतमति माताजी के ससंघ सान्निध्य में 106 वर्षीय ब्र. कंचन बाई जी का समाधिमरण 07 दिसम्बर 2024 को हुआ।

पारसोला (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री वर्धमानसागर महाराज जी की शिष्या आर्यिका श्री तपनश्री माता जी ने 08 दिसम्बर 2024 को यम संल्लेखना धारण की।

दीक्षायें सम्पन्न

कुशलगढ़ (राजस्थान)-मुनि श्री सुमंत्र सागर महाराज जी के करकमलों से श्रीमति विमला पाटनी रतलाम को क्षुल्लिका दीक्षा 17 नवम्बर 2024 को कुशलगढ़ राजस्थान दी गई जिनका नाम क्षुल्लिका सुबोधमति माताजी रखा गया।

दिल्ली-आचार्य श्री विमर्शसागर महाराज जी के करकमलों से कृष्णा नगर दिल्ली में 15 नवम्बर 2024 को बाल ब्र. विशु दीदी एटा (उ.प्र.), बा .ब्र. नेहा दीदी अशोकनगर (म.प्र.), बा. ब्र. रिया दीदी कोलारस (म.प्र.), बा.ब्र. महिमा दीदी जतारा (म.प्र.), बा. ब्र. ज्योति दीदी दिगोडा (म.प्र.), बा. ब्र. गुंजन दीदी कोलारस (म.प्र.), बा. ब्र. सोनाली दीदी खरगापुर (म.प्र.), बा. ब्र. दीपा दीदी शिवपुरी (म.प्र.), बा. ब्र. प्रतीक्षा दीदी रामपुर मथुरा (उ.प्र.), बा. ब्र. प्रदीप भैया गाजियाबाद (उ.प्र.), ब्र. मित्रवती दीदी शिवपुरी (म.प्र.), ब्र. रीता दीदी गाजियाबाद (उ.प्र.), बा.ब्र. सृष्टि दीदी अशोकनगर (म.प्र.) को दीक्षायें दी गई जिनके नाम क्रमशः आर्यिका विमार्शिता श्री माताजी, आर्यिका विहर्षिता श्री माताजी, आर्यिका विदर्शिता श्री माताजी, आर्यिका विवंदिता श्री माताजी, आर्यिका विनंदिता श्री माताजी, आर्यिका विपर्शिता श्री माताजी, आर्यिका विज्ञर्शिता श्री माताजी, आर्यिका विदीपिका श्री माताजी, आर्यिका विवर्षिता श्री माताजी, क्षुल्लक श्री विश्वाग्र सागर जी महाराज, क्षुल्लिका विमोचिता श्री माताजी, क्षुल्लिका विरोचिता श्री माताजी, क्षुल्लिका विकर्षिता श्री माताजी रखा गया।

आगामी पंचकल्याणक

भोपाल- मुनि श्री प्रमाणसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में टी.टी नगर मंदिर का पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 15 फरवरी से 20 फरवरी 2025 तक सम्पन्न होगा।

छिन्दवाडा- निर्यापक श्रमण मुनि श्री प्रसादसागर जी महाराज, मुनि श्री पद्मसागरजी महाराज, मुनि श्री शीतलसागर जी महाराज के सान्निध्य में छिन्दवाड़ा (म.प्र.) में 12 जनवरी से 20 जनवरी 2025 तक पंचकल्याण प्रतिष्ठा ब्र. प्रदीप भैया अशोकनगर के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

वर्ग पहेली 303

1	2		3	4		5		■
6		■	7		■		■	8
■	■	9		■	10		11	
12	13		■	14		■	15	
16		■	17		■	18	■	
	■	19	■	20				■
21	22				■	23		24
25			■	■	26	■	■	
■		■	27	■	28			

बाये से दाये

1. आजाद हिंस फौज के संस्थापक -8
6. आने वाला दिन, बीता दिन -2
7. पथ, रास्ता, मार्ग -2
9. सेवा, देना, वैयावृत्ति -2
10. बारीक सूती वस्त्र -4
12. भाग, अंश, हिस्सा -3
14. होदा, चरण, पैर -2
15. छाया छाँव, छाँह अनातम -2
16 शर्त, दावबाजी, होडपन -2
17. किनारा, पार उतरना -2
20. माली, वाग का रखवाला -4
21. इंद्र की वाटिका -5
23. रस सहित जलवान पुष्कर -3
25. प्रवेश हस्तक्षेप -3
27. कौन, संस्कृत -1
28. विनय सहित, विनय युक्त -4

ऊपर से नीचे

1. अच्छा (उर्दू) -2
2. काल का नाम, संगीत का अहं अंग -2
3. अच्छा मन, फूल, ऐलक सिद्धांतसागर का पूर्व नाम -3
4. हिस्सा, अंश -2
5. अस्थिर -3
7. चित्त, अंतःकरण -2
8. जल जहाज -4
9. धब्बा, कलंक -2
10. घमंड, अहंकार, मान -2
11. शरीर का काला दाग, तिल से बड़ा दाग -2
12. शिकागो में 1895 में धर्म प्रवचन देने वाले -5
13. पका हुआ चावल, प्रकाश -2
14. आज्ञा, फतंगा, पतंगा -4
18. घर सदन गृह -3
19. आग पावक -3
22. संभव -3
24. टाईम, काल, आगम, पदार्थ -3
26. जिव्हा इन्द्रिय का विषय -2

वर्ग पहेली 302 का हल

1 अ	2 म	र	3 कं	4 ट	5 क	■	6 च	ना
7 मृ	त	■	8 ग	र		■	श	■
त	■	9 म	न	का	■	10 बी	मा	11 र
12 चं	च	ल	■	13 ना	14 च	ना	■	स
द्र	■	मा	■	■	ट	■	15 मा	वा
सू	■	16 स	ता	■	का	18 म	■	ल
19 रि	ति	■	20 र	च	ना	का	21 र	■
■	22 मि	थ	क	■	■	23 र	त	24 न
25 श	र	■	■	26 क	थ	■	■	म

.... सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

गुणी जन का सम्मान

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें

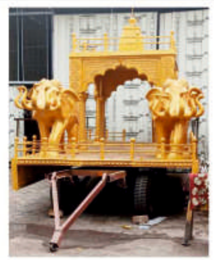

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

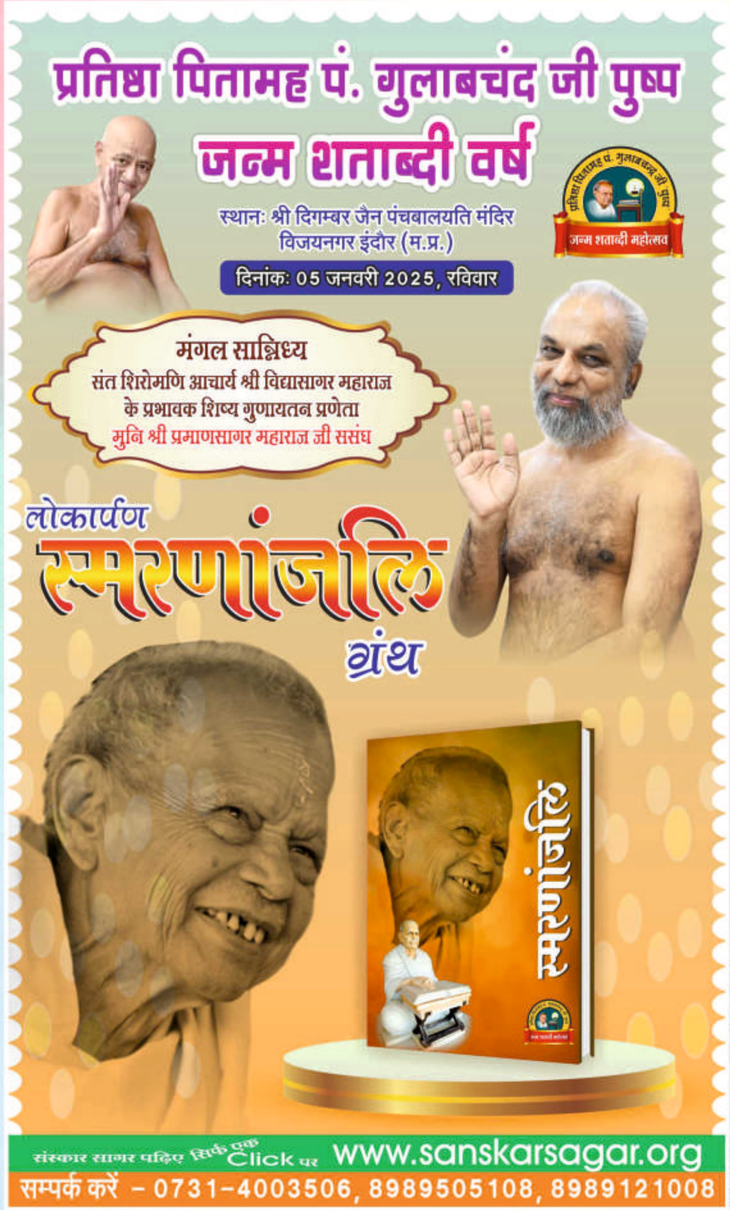

प्रिंटिंग दिनांक 28/12/2024, पोस्टिंग दिनांक : 03/01/2025